हिमाचल प्रदेश के लोकप्रिय गाथागीत

हिमाचल प्रदेश के लोकप्रिय गाथागीत

डॉ हरिराम जसटा

सन्मार्ग प्रकाशन

अनुक्रम

परिशिष्ट

कुछ प्रसिद्ध गाथा गीत

सदर्भ ग्रथ

1 डॉ कृष्णदेव उपाध्याय लोकसाहित्य की भूमिका (साहित्य भवन इलाहाबाद)
2 डॉ सत्येन्द्र लोकसाहित्य विज्ञान (शिवलाल अग्रवाल 1962)
3 डॉ जवाहर लाल हाडू लोकसाहित्य स्वरूप एव सर्वेक्षण (स) (भारतीय भाषा सस्थान मसूर)
4 डॉ श्याम परमार भारतीय लोकसाहित्य (राजकमल प्रकाशन 1954)
5 महिन्द्रसिह रधावा कुल्लू के लोकगीत (अतरचन्द कपूर 1955) कागड़ा (साहित्य अकादमी 1960)
6 रामदयाल नीरज हिमाचली लोकगाथाए (हिमाचल सरकार 1975)
7 डॉ हरिराम जसटा हिमाचल गौरव (सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली 7 1971)
– पहाड़ी लोक रामायण (स) (हिमाचल अकादमी शिमला 1974)
पर्वतो की गूज (हिमाचल पुस्तक भण्डार दिल्ली 31 1984)
हिमाचल की लोक सस्कृति (सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली 7 1986)
हिमाचल की कहानी (राजपाल एण्ड सन्ज दिल्ली 1989)
Folk Tales of Himachal Pradesh (Bharatiya Vidya Bhavan Bombay 7 1980)
– हिमाचल प्रदेश की झाकी (राजपाल)
8 गौतम व्यथित ढोलरू हिमाचल की लोक गाथा (शीला प्रकाशन 1980)
9 डॉ बशीराम शर्मा किन्नर लोक साहित्य (बिलासपुर ललित प्रकाशन 1976)
10 (Capt) R C Temple The Legends of Panjab (Vol I & II) (Lahore Allrad Press 1884)
11 Dezil Ibberton & Rose A Glossary of Hill Tribes (Lahore 1885)
12 डॉ पद्मचन्द कश्यप कुल्लूई लोक साहित्य (नेशनल पब्लिशिग हाउस दिल्ली 1972)
13 राहुल साकृत्यायन हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास (काशी नागरी प्रचारिणी 1970)
14 एस एस एस ठाकुर हिमाचली लोक लहरी (1974)
15 सतराम वत्स हिमाचल की लोककथाए (आत्माराम एण्ड सन्ज दिल्ली 1971)
16 ओमचन्द हाडा पहाड़ी लोकगीत (1988)
17 एन के शर्मा गद्दी लोकजीवन (1986)
18 रामनरेश त्रिपाठी ग्रामगीत (भाग तीन) (आत्माराम एण्ड सन्ज दिल्ली 1960)
19 देवेन्द्र सत्यार्थी बाजत आवे ढोल (एशिया प्रकाशन दिल्ली 1952)
20 मिया गोवर्धन सिह हिमाचल प्रदेश इतिहास सस्कृति आर्थिक (मिनरवा बुक हाउस शिमला)
21 M S Randhawa Farmer s in India (ICAR 1959)
22 Distt Gazeteer of Kinnaur 1971
23 do Chamba 1963
24 do Sirmaur 1969
25 do Lahaul & spiti 1970
26 do Bilaspur 1971
27 do Kangra 1885
28 do Shimla, 1885
29 पत्रिकाएं हिमप्रस्थ विपाशा सोमसी हिमभारती सस्कृति।

निमंत्रण

लाक गाथा सग्रह के लिए मूल सामग्री सभी स्रातों स पिछले कुछ वर्षो स एकत्र करता रहा। सामग्री की प्रामाणिकता क लिए लोक वाता के विद्वाना लोक कविया गाव क वृद्धा आर प्रकाशित सामग्री की छानवीन करता रहा। स्थानीय बोलिया की विभिन्नता एक ही गाथा गीत से विभिन्न स्थाना क लाक गायका द्वारा समय पाकर नया मोड देना परिवतन आर सशोधन करना इत्यादि एसे महत्वपूण विन्दु ह जा लोक गाथा गीता की प्रकृति एव स्वभाव के महत्त्वपूण अग वन गए ह। इसी कारण मूल गाथाओ म यत्र तत्र वर्तनी एव शब्दा म त्रुटिया आना स्वाभाविक ह। कुछ गाथा गीता की पृष्ठभूमि क साथ साथ स्थान अभाव क कारण पूण रूप से उद्धृत नही कर सका और कुछ पुराने गाथा गीत मूल रूप म परिशिष्ट म सुरक्षित रखन के लिए प्रस्तुत कर रहा हू।

इस सग्रह म सभी जनपदा के गाथा गीतो को उचित स्थान नहीं द सका। जैसे भारत गावा का दश ह उसी तरह हिमाचल प्रदेश मूलत 1800 गावा को एक सूत्र म पिराए हुए हैं। इन लाक गाथा गीता म जन मानस को अत चेतना की प्ररणा देने वाले तत्त्वा का प्राधान्य ह। इनक द्वारा लोक जीवन के आचार विचार रीति रिवाज रुधिया नीतिया लाक मनोरजन क तत्त्वा जन शिक्षा सामाजिक एव धार्मिक सस्कारो प्राणी जगत् स तादात्म्य भाव प्रकृति प्रम धामिक मान्यताआ व्रत अनुष्ठानो जत्र मत्र और लाक विश्वासा के विविध रूपा क दर्शन हाते है।

एक स्थान पर पजावी की प्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती अमृता प्रीतम ने बडे नपे-तुले गहन शब्दा म विचार प्रकट किए ह कि लोक गीता का पवित्र माती चाहे सागर की अतुल गहराइयों मे पडा रह किन्तु जव भी उस निकाला वह पूर्वावस्था के समान ही पवित्र आर आभायुक्त होता है। सुधारवादी आन्दोलना की चक्की कई बार वडे मासूम गाता का तथा उनकी निर्दोष परम्परा को पीसने क लिए उद्यत हो जाती ह किन्तु नदिया को कौन वाध सकता है आकाश की बौछारों को कान-सी हथेली राक सकती है? जनता ऐसी चक्की पर भी गीत रच देती है तथा भावी सतानें पिछली पीढ़ी की धरोहर को अपन हृदय म सजाए रखती है। लाग सध्याकालीन झुटपुटों तथा फूटती किरणा म वैठ वैठकर हृदया की इस सम्पत्ति का आनन्द लूटत है। इन गीता म छद

नायन के सयुक्त मचा पर भी गूजन है और प्रेमियो की एकाकी निशाओ मे भी सिमकन है। लोकगीतो का उसका आन्तरिक भाव मार्ग दिखाता है और उसकी उदात्त भावना सगीत का रूप धारण कर लेता है।

हिमाचल की लोक गाथाए शास्त्रीय काव्य की तरह अनिवार्यत छन्दबद्ध नहीं होती। इनका मुख्य तत्त्व प्राय गेय होता है। इन ऊचे-ऊचे बर्फीले पहाडो नदियो नालो वनो चरागाहो के विशाल प्राकृतिक प्रागण मे नील गगन की विस्तृत और सुखदायिनी छाया मे ग्रामीण क्षेत्र के लोक जीवन के सग सग उसके लोक गीत एव लोक गाथाए भी पनपती रहती है जिसे आडबरहीन सरल और सीधे सादे शब्दो मे अभिव्यक्ति मिलती रहती है।

इन गाथा गीतो मे मेवो की तरह रग और रस भरा रहता है। इस सत्य की अभिव्यक्ति डॉ हजारीप्रसाद द्विवेदी के शब्दो मे लोक गीत की एक एक बहू के चित्रण पर रीति काल की सौ सौ मुग्धाए खंडिताए और धीराए न्योछावर की जा सकती है क्योकि यह निरलकार होने पर भी प्राणमयी है और वे अलकारो से लदी होकर भी निष्प्राण है। यह अपने जीवन के लिए किसी शास्त्र विशेष का मुखापेक्षी नही है और अपने आप मे परिपूर्ण है।[2] साहित्य शास्त्र के विद्वानो के इन भाव विभोर कर देने वाले विचारो को हमने कितनी गभीरता से लिया है यह समय ही बता सकेगा।

लोक गाथाओ के सृजन कर्ता किसी विशेष विषय वस्तु रस छद अलकार और चमत्कार की सीमाओ मे बधकर अपनी सृजन प्रक्रिया आरभ नहीं करता। अपितु भावातिरेक मे उसके हृदय मे जो सगीतमय उद्गार बाहर आने के लिए छटपटा रहे होते है वही झरनो की कलकल की तरह स्वर मे स्वर मिलाकर गाव के मुक्त एव स्वच्छ वातावरण मे बिखर कर अपना रग और रस-सहज ही घोल देते है और लोक सगीत उन्हे बाहो मे समेट लेता है। प्राय एक ही लोक गाथा गीत मे शृगार वीर भक्ति हास्य एव करुण रस का आभास हो जाना स्वाभाविक है। फिर इनका सुस्पष्ट और दृढ वर्गीकरण कैसे सभव है?

हिमाचल प्रदेश के इन दुर्लभ और पुराने गाथा गीतो को प्रस्तुत करने के अनेक प्रयास हो चुके है। इन स्तुतीय प्रयासो मे उल्लखनीय नाम है—आर सी टैम्पल राहुल साकृत्यायन देवेन्द्र सत्यार्थी मोहिन्द्रसिंह रधावा अमृता प्रीतम डॉ पद्मचन्द्र कश्यप मिया गोवर्धन सिंह वशीराम शर्मा रामदयाल नीरज एम एस एम ठाकुर गौतम व्यथित और इन पक्तियो के लेखक द्वारा पुराने गाथा गीतो पर यथेष्ट प्रकाश अपनी प्रकाशित पुस्तको मे डाला है। इसी स्वस्थ परम्परा को आगे बढाने मे अनेक अन्य लोक वार्ताकारो ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनमे ध्यानसिंह भागटा पन्नालाल जागटा प्रो रूप कुमार शर्मा लच्छीराम मलीम अमर सिंह चौहान आचार्य रामनद

1 अमृता प्रीतम कागडा के लोकगीत (साहित्य अकादमी) पृ 3

2 डॉ हजारीप्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य की भूमिका पृ 130

विद्यान सरक बालकराम भारद्वाज कु सुमित्रा ठाकुर काशीराम आत्रेय इत्यादि क नाम उल्लेखनीय ह। पत्र पत्रिकाओं म इन विद्वानों द्वारा संगृहीत लोक गाथाओं द्वारा मेरे इस विश्वास को अधिक प्रेरणा और शक्ति मिली ह कि अभी तक अलिखित लोक साहित्य म अमूल्य धूल धूसरित हीरे बिखरे पड़े ह जिन्हे खोजना पहचानना परखना और सुरक्षित रखना सक्षम नौजवानों का परम कर्तव्य ह। आधुनिकता की चकाचौंध म ग्राम्य आत्मा की समृद्ध धरोहर और अतीत के इतिहास की अनेक कड़ियां बिखरी पड़ी ह जिनके आंचलिक इतिहास की रूप उभारने म शाश्वत सांस्कृतिक मूल्य ह जिन्हे खोकर गंवाकर हम वर्षों क लाट की तरह या नदी म बहते लकड़िया के शहतीरो की तरह दिशाहीन होकर भटकते रहेंगे अधेर म मंजिल को टटोलते रहेंगे। इसलिए स्वामी विवेकानन्द क शब्दों म— उठो जागो और ध्येय की प्राप्ति तक रुको मत। मेरा लोकगाथाकारों से यही सविनय आग्रह ह।

शरद पूर्णिमा
दिनांक 23 अक्टूबर 19..

आस्थिका निवास
(इंजनघर) संजौली
शिमला 171006

—*हरिराम जसटा*

विषय प्रवेश

लाक साहित्य की विस्तृत व्याख्या असख्य विद्वाना न की ह। ज एल मिश के अनुसार एस सभी प्राचीन जिज्ञासा प्रथाआ आर परपराआ का सपूण योग जा सभ्य समाज क अल्प शिक्षित लोगा क बीच आज तक प्रचलित ह लाक वाता (फोकलार) ह। इसकी परिधि म परिया की कहानिया लोकानुभूतिया पुराण गाथाए अधविश्वास उत्सव रीतिया परपरागत खल वा मनोरजन लाक गीत प्रचलित कहावत कला काशल लाक नृत्य आर ऐसी अन्य सभी बात सम्मिलित की जा सकती हैं।[1]

लाक वाता स लाक साहित्य का सीधा सबध है। लाक साहित्य लोक सस्कृति का एक महत्त्वपूण अग ह। लोक साहित्य जन भावनाआ एव लोक चतना द्वारा लोक गीता लाक कथाआ लोक गाथाआ के परपरागत माखिक माध्यम द्वारा अभिव्यक्ति प्रदान करता ह। स्पष्टत इसम लोक चेतना जन जीवन आर लोक सस्कृति की आत्मिक चेतना क स्रोता एव प्रेरणाआ की पहचान की जा सकती है। स्पिनेजा के अनुसार लाक वाता आर लाक साहित्य म आदि मानव के हृदय का सत्य आर प्रत्यक्षानुभूति अकित रहती ह।

आज भी लोक जीवन 16 सस्कारा आर अनक मगलात्मक विधानो आर लोकाचारा स सम्पन्न हे। शास्त्राचार लाक स ही प्रमाणित होता है ओर लोकाचार भी शास्त्र बनकर प्रतिष्ठित हाता हे। इसीलिए प्राचीन लाक सस्कृति की रेशमी डार मे जकडा हुआ लोक साहित्य अनक मानव पीढियो के सुख-दुख की गाथा जिसमे जीवन की हरी भरी अमरबेल चारा आर लिपटी ह आजमयी हे। लोक साहित्य लाक मानस म सनातन रीति नीतिया क अतमुख नियम से समन्वित आर धरती की रोदी हुई मिट्टी की महिमा स मडित ससार की अनमोल निधि ह।

लाक साहित्य म साहित्य क मूल तत्त्व एव रसानुभूति तो अप्रत्यक्ष रूप म विद्यमान रहत ही ह इसके अतिरिक्त इनम कुछ आर विशेषताए होती ह जैस—

(क) आदि मानव क हृदय का सत्य आर प्रत्यक्षानुभूति अकित रहती हे।

(ख) यह अबाध भावुक हृदय का तरल आर सरल उद्गार होता ह जिसकी

---

1 मरिया लीच स्टन्ड डिक्शनरी ऑफ फोकलोर माइथोलाजी एण्ड लीजन्ड (भाग 1) पृ 401

भाषा फूल के समान कोमल सुन्दर और भीनी भीनी होती है। इसके साथ में एक विशेष प्रकार की लचक होती है।

(ग) इसमें परपरागत मौखिक क्रम उपलब्ध भाषागत अभिव्यक्ति का सजीव चित्रण रहता है।

(घ) जीवन की शाश्वत समस्याएं अपने प्राकृतिक रूप में पाई जाती है।

(ङ) सामाजिक एवं एतिहासिक सूक्ष्म रूप धारण करके इनमें सूत्र रूप में अभिव्यक्त होते है।

(च) कृतित्व हो किन्तु वह लोक मानस के सामान्य तत्त्वो से युक्त हो। लोक साहित्य में जातीय जीवन को सतुलित रखने वाले विविध अनुभव पाए जाते है।

लोक साहित्य का अध्ययन 19वी शताब्दी के प्रथम दशाब्दी से प्रारभ हुआ। इसका एक प्रमुख कारण फ्रास की राज्य क्रांति है। उस क्रांति के साथ साथ जन समूह में यह भावना आई कि राष्ट्र सामतो से नहीं बनते बल्कि जन समूह से बनते है। जन समूह प्रमुख है शासक अथवा राजा गौण। जन समूह की इस प्रमुखता के साथ *लोक विज्ञान प्रमुख हुआ और परिणामत जन विश्वासो एव परपराओ के कोष लोक* साहित्य का शास्त्रीय अध्ययन आगे बढ़ा।

हिमाचल प्रदेश शताब्दियो से ग्राम्य क्षेत्र रहा है। इसलिए इसकी ग्राम्य सस्कृति की गध इसके श्रुति और स्मृति के सहारे सुरभित लोक साहित्य द्वारा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। आज इसके लोक साहित्य के धूल धूसरित हीरो को चुन चुन कर सुरक्षा प्रदान करने की आवश्यकता है क्योकि समय की तीव्र आधी इन्हे कहीं का कहीं उडा ले जाएगी या गहरी मिट्टी की परत में सदा सदा के लिए दफना देगी।

हिमाचली लोक साहित्य का मुख्यत विभाजन इस रूप में किया जा सकता है

1 लोक गीत

2 लोक कथा

3 लोक गाथा एव

4 लोक कलाए जसे लोक नाट्य लोक नृत्य

नि संदेह यह विभाजन या उप विभाजन पूर्णतया सार्थक नहीं माना जा सकता। लोक साहित्य के प्रत्येक अग पर यहा प्रकाश डालना सभव भी नहीं है।

आधुनिक युग में हिन्दी के विभिन्न साहित्यकारो ने लोक साहित्य और लोक वार्ता पर सारगर्भित विचार प्रकट किए है। इनमें श्री कृष्णानन्द गुप्त (लोक वार्ता 1944) डॉ दशरथ ओझा डॉ कृष्णदेव उपाध्याय डॉ सत्येन्द्र रामनरेश त्रिपाठी डॉ रामविलास शर्मा डॉ सत्यव्रत सिन्हा सूर्यकरण पारीक महिन्द्रसिंह रधावा देवेन्द्र सत्यार्थी काका कालेलकर श्याम परमार जवाहर लाल हडू, वणजारा वेदी सोहिन्दर सिंह इत्यादि सरीखे लेखको ने लोक वार्ता और लोक साहित्य सबधी सिद्धात एव व्यवहार पर विभिन्न भारतीय भाषाओ में जनपदीय साहित्य की ओर प्रेरित किया।

लोक गीत

लोक गाना की अजस्र धारा न जान कब स मानव हृदय का आप्लावित करता रहा ह। यद्यपि इनम स्वर लय यति गति आदि छन्द क नियमा का कोइ शास्त्रीय बधन नहा पाया जाता किन्तु खेता म हल चलात हुए किसाना चरागाह वना म भड बकरा आर पशु चरात हुए चरवाह दूर कहा वना चरागाहा म घास काटती फल तोडती नव यावना क भावावेग म अपनी हा लय यति गति द्वारा एक नए स्वर का जन्म दिया ह। तभी पवतीय ग्रामा म बसन वाल लाग गा उठत ह

पहाडा दा रहणा चगा आ गदिया।
पहाडा दा रहणा चगा आ।
शहरा शहरा विच नालू न वगद
पहाडा च वगदा गगा आ।
या चूना दा पाटी राहा हिया
कि मामा मरा।
लागा पहाडा दा जिया
कि मामा मरा।

हिमाचल प्रदेश क लाक गीता क प्रमाणिक सग्रह की दिशा म डॉ महिन्द्र सिह रधावा न कागडा कला देश आर गीत (1960) कागडा क लोक गात (1956) आर कुल्लू क लाक गीत' (1955) हिमाचल क लाक गात (1960) ठाकुर मालूराम द्वारा सम्पादित लामण रोशनलाल द्वारा सगृहीत 400 लामणा का सग्रह 'यब्बर की लहर (1969) एस एम एस ठाकुर द्वारा सम्पादित हिमाचलीय लाक लहरी डॉ गातम व्यथित क 'कागडी लोक गीत (1973) बशीराम द्वारा सम्पादित स्पितिवादी क लाक गीत (1979) ओमचन्द हाण्डा द्वारा पहाडी लोक गीत मेहरचन्द सुमन द्वारा सम्पादित दई जुल्फू (1978) आर कशवनद का हिमाचल के लोक गीत' (1989) उल्लेखनीय प्रकाशन ह।

लोक गाथाए या गाथा गीत

प्राय प्रत्यक लोक गीत की पृष्ठभूमि म काइ न कोई लाक कथा रहती ह। लाक कथा आर लाक गाथा गीता म भेद केवल इतना ही ह कि लोक गाथा गीत एक लम्बे आख्यान गीत क साथ ग्राम्य लोक वाद्या क साथ प्राय गाकर सुनाए जात ह। इसम प्रबध याजना गाथा प्रधान न हाकर रस प्रधान हाती ह जबकि लोक कथा गद्यात्मक होने क साथ साथ कथा प्रधान या दूसरे शब्दा म घटना प्रधान हुआ करती ह।

लाक गाथा गीता की दृष्टि स भी हिमाचल प्रदश का लाक साहित्य अधिक समृद्ध ह। इनक माध्यम स जहा एक ओर एतिहासिक आर पाराणिक गाथा गीता को

नामित रखा गया है जहां दूसरी ओर कुछ गाथा गान भी है जिनके माध्यम से जनता में उल्लास और वीरता संचार का प्रयास किया जाता है। हिमाचल के प्रसिद्ध लोक गाथा गानों में बरलाज एचला महादेव युकुन्तरस रमण पटण गूगामल राजा भर्तृ सामा दालतू ममा मण गया जगता राममिह पठानिया नगा न्यारा मन्ना ऊदू, गढमलाणा सुन्मी मन्ना धार दशू, महा प्रकाश गारखा वान्रास घुघु मियां जुन्नाजाल गाट सगतराम मजानं याका अनजा राधु फुलुमू माधुसिंह नन्लगम र हार त्या मरण तहसालदार सना घखा लारा श्रीमुल देव वान्ड्रा मयरान देव गाला नाग चम्ब ग कनरू वामण माहणा सिन्धु रा टिकरा रणमाजार महामू रूपणु पुहाल सुन्निभूकू, राना चम्बयाला रूल्हा दा कुहल इत्यादि असख्य लोक गाथा गान असुरक्षित पड़े है।

फिर भी इन्हे प्रकाशित रूप में सुरक्षित करने की दिशा में रामदयाल नीरज द्वारा सम्पादित हिमाचली गाथाएं (1973) डा हरिराम जसटा द्वारा सम्पादित पहाड़ी लोक रामायण (1974) देवराज शर्मा द्वारा सगृहीत गुगा जहर पीर (1979) वालकराम भारद्वाज द्वारा सकलित गुग्गा गाथा (1988) अकादमी द्वारा सकलित भरतराहरि' (1986) बहु प्रशसनीय प्रयास है।

लोक गाथा गानो और लोक कथाओ में कथा शिल्प ही प्रमुख होता है। इसमे प्राय एक व्यक्ति या एक प्रसिद्ध मार्मिक घटना के चिरनायक की स्मृति दुहराई जाती है। नायक का जीवन चाहे जितना भी करुणात्मक क्यो न हुआ हो पर उसके जीवन से मगल की प्रेरणा ही मिलती है।

लोक गाथा गानो के कथानक का सीधा सबध अतीत से है। परन्तु इनकी घटनाओ एव वातचीत को वर्तमान जीवन के मूल्यो एव आदर्शो से भी यथार्थ की भूमि पर भी लगाव रहता है। लोक गाथा गीतो द्वारा प्राचीन परम्पराएं सस्कार जीवन दृष्टि जिज्ञासा की धरोहर वर्तमान पीढी को गाथा गीतो के गायको द्वारा सहज ही उपलब्ध हो जाती है। आधुनिक युग में परम्परागत गाथा गायक चारण धीरे धीरे आधुनिकता की चकाचौंध मे विलीन होते जा रहे है। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन द्वारा अतीत के चुने हुए कुछ गाथा गीतो का अध्ययन प्रस्तुत कर लोक साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण कडी को सुरक्षित करने का एक प्रयास किया गया है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

हिमाचल प्रदेश म वसन वाली अनक जातिया म किन्नर किरात यश गधव नाग दान खश एव अन्य अभिजातिया क अवशेष अब भी विद्यमान ह। इसलिए हिमाचल प्रदेश क प्रारभिक युग का जनजातिया का युग कहा जाए ता ठीक हागा। य जन जातीय परम्पराए किसी न किसी रूप म आज भी विद्यमान ह। ऋग्वद म जिन नदिया का वणन ह उनम यमुना सतलुज व्यास चिनाव रावी इस प्रदेश स हाकर अब भी बहता ह।

पाराणिक काल स जन्म हुइ यहा की अनक परपराए एव स्थान आज भी जीवित ह। मनु राजा शाम्बर दिवादास का युद्ध जमदग्नि परशुराम मा रणुका वसिष्ठ विदुर आर ताकी भीम आर हिडम्बा की मिलनस्थली मनाली महाभारत युद्ध म भाग लेन वाल त्रिगत राजा सुशमचन्द्र कगच घटात्कच कमरू नाग पाडवा स जुडा शिमला जनपद की भीमाकली आर हाटकोटी मडी का पागणा कुल्लू क निरमड कागडा दुग म भीम से जुड़ा भीमकोट इत्यादि अनेक पुण्यस्थल आज भी विद्यमान ह जा वर्तमान क मुह म झाककर अपना प्राचीनता का परिचय द रह ह। पाराणिक काल स हिमाचल प्रदेश क सकडा दवी दवताआ का पूजा एव लाक नृत्य परपराए भी जुड़ी ह।

भारत के अन्य राज्या की तरह हिमाचल प्रदेश क त्रिगत (कागडा) कुल्लूत (कुल्लू) कलिन्द (सिरमार) युगधर (विलासपुर नालागढ) वुशहर गद्दिका एव औदुम्वर (पठानकाट) सबसे पुराने सुव्यवस्थित राज्या म स थ। वतमान हिमाचल प्रदेश का शेष क्षेत्र सम्भवत इन्ही राज्या का भाग था। समय पाकर धीर धार य राज्य छाट छाट राज्या म छिन्न भिन्न होकर राणाआ ठाकुरा आर मावियां म बट गए। वाहर स आकर अनक शक्तिशाली राजाआ न इन छाट छाट राणाआ का परास्त कर अपन राज्या म मिला लिया जसे सिरमार क्याथल मडी कागडा विलासपुर क प्राचीन इतिहास स विदित हाता ह।

इन पहाडी राज्या का इतिहास लगभग एक अनवरत सघष का इतिहास ह। जब काइ शक्तिशाली शासक सत्ता प्राप्त करता था ता वडे राज्य अपन छाट पडासी राज्या को अपने म मिला लत थे। परन्तु यह छाट राज्य उपयुक्त समय मिलन पर अपन को आजाद घाषित कर दते थ।

इन प्रसिद्ध राज्यों में चम्बा का नाम ५५0 ई. के लगभग कहलूर राज्य 697 ई. में मंडी और सुकेत की स्थापना 765 ई. में और सिरमौर का 1109 ई. में लिखित इतिहास में भी उपलब्ध है। इन पहाड़ी राजाओं ने लोक जीवन को समृद्ध करने के लिए अनेक मंदिर बनवाए तथा असंख्य मेले एवं त्योहारों की परम्पराओं की नींव भी डाली। दीर्घकाल तक इन पहाड़ी राज्यों में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हुए। लेकिन बाहरी आक्रमणों के फलस्वरूप आंतरिक जीवन में परिवर्तन आना स्वाभाविक था।

गुप्तकाल और हर्षवर्धन की मृत्यु तक सारे पहाड़ी क्षेत्र में नया जीवन अंगड़ाइयां लेने लगा था। 1001 ई. से महमूद गजनवी के भारत पर आक्रमण से इन पहाड़ी राज्यों में भी उथल पुथल शुरू हुई। 1009 ई. में उसने कांगड़ा के प्रसिद्ध दुर्ग और मंदिर पर आक्रमण किया। इसी दौरान में अनेक राजपूत सामंतों ने हिमाचल प्रदेश के अनेक क्षेत्रों पर कब्जा कर अनेक राज्य स्थापित कर लिये। इनमें क्योंथल, बघाट, कुठाड़, कुनिहार, भज्जी, धामी, महलोग, कोटी, मांगल, बेजा, भरौली, बाघल, जुब्बल, सारी, रावींगढ़, बलसन, रतेश, धूड़, मधान, थरोग, कुमारसेन, करांगड़, खनेठी, कोटखाई, कोटगढ़, दरकोटी, देलठ, थरोच, ढाडी, शांगरी, डाडरा, क्वार, रामपुर बुशहर, गुलेर, नूरपुर, जसवान, दातारपुर, डाढा और नालागढ़, मंडी, सुकेत, लाहौल स्पिति के नाम उल्लेखनीय हैं। जहां अनेक पहाड़ी शक्तिशाली सामंत आपसी फूट से परस्पर सत्ता का विस्तार करने पर तुले रहते थे, वहां अनेक मंदिरों, मूर्तिकला, वास्तुकला एवं अन्य कलाओं का प्रारंभिक काल भी यही युग था।

मुस्लिम आक्रमण और मुगल साम्राज्य की स्थापना के साथ इस पहाड़ी क्षेत्र में नये युग का सूत्रपात हुआ। मुगल साम्राज्य का राजनैतिक एवं सामाजिक प्रभाव इस क्षेत्र के लोक जीवन पर भी पड़ा। सिरमौर, शिमला जनपद के देव गिरगुल और देव डूम का संघर्ष लोक गाथाओं में मुगलों से जोड़ा जाता है। इसी तरह कुल्लू, कांगड़ा, सिरमौर और चम्बा के राजा मुगलों से कभी जूझते रहे, कभी उनकी अधीनता स्वीकार कर ली।

इसके बाद अंग्रेजों के आगमन के बाद सिख सेना और गोरखों के साथ पहाड़ी राजाओं की आपसी फूट के कारण अनेक युद्ध हुए। युद्धों की यह आंख मिचौनी तब तक चलती रही जब तक अंग्रेज साम्राज्य ने पूरी तरह इस प्रदेश पर अपना आधिपत्य स्थापित नहीं जमा लिया। हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध राजाओं में चम्बा के राजा साहिल वर्मन, मरुवर्मन, मंडी के वीरसेन और सिद्धसेन, सुकेत के मदनसेन, रामपुर बुशहर के राजा केहरीसिंह, सिरमौर के राजा कर्मप्रकाश एवं कांगड़ा के राजा संसारचन्द्र के नाम उल्लेखनीय हैं। इनके राज्यकाल में कला एवं संस्कृति का काफी विकास हुआ।

ह्वेनसांग के भारत सम्बंधित वृतांत में भी हिमाचल के कांगड़ा, कुल्लू और लाहौल स्पिति के राज्यों का वर्णन मिलता है। उसके अनुसार महाराज हर्षवर्धन ने कुल्लू और कांगड़ा को अपने राज्य में मिलाया।

ई 700 से 1000 ई तक का समय हिमाचल की कला और संस्कृति के उत्कर्ष का काल था। शासक और प्रजा का धर्म पर गहरा आस्था था। इस काल में हिमाचल के विभिन्न भागों में अनेक मन्दिरों का निर्माण हुआ। चम्बा के राजा मेरूवर्मन और साहिलवर्मन के राज्यकाल में सुन्दर मन्दिरों का निर्माण हुआ। इसी काल में किन्नौर और लाहौल स्पीति क्षेत्र में बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ। ई 1000 के बाद मुसलमानों मुगलों अंग्रेजों फ्रांसीसियों और पुर्तगालियों ने भारत के अनेक भागों में अपनी सत्ता की विस्तार करने के अनेक प्रयत्न किए। दिल्ली के सुलतानों का सम्बन्ध के पहाड़ी पश्चिमी राज्यों पर आधिपत्य रहा। इतिहास इस बात का साक्षी है कि सुलतानों और मुगलों के अनेक सम्बन्धियों ने विद्रोह में असफलता के बाद हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी राजाओं की शरण ली। सरदार मुहम्मद ने जिसने रजिया सुलतान के विरुद्ध विद्रोह किया था सिरमौर के महाराजा की शरण ली। इसी तरह सरदार कुतलग खां जिसने मुहम्मदशाह प्रथम के विरुद्ध विद्रोह किया था सिरमौर राज्य में भागकर जान बचाई। 1365 ई में फिरोजशाह तुगलक ने नगरकोट (कांगड़ा) पर आक्रमण किया। इस आक्रमण के दौरान उसने कांगड़ा और ज्वालामुखी के मन्दिरों को लूटा और 300 के लगभग संस्कृत की पुस्तकें ले गया जिन्हें बाद में उसने फारसी में अनुवादित करवाया।

1398-99 में तैमूर ने सिरमौर राज्य को लूटा और कांगड़ा पर आक्रमण की तैयारी करने लगा। परन्तु कांगड़ा के राजा की शक्तिशाली सेना के डर से उसने आक्रमण नहीं किया।

मुगलों के साथ इन पहाड़ी राजाओं के सम्बन्ध अकबर के राज्यकाल में हुए। अकबर इन पहाड़ी राज्यों को अपने साम्राज्य में मिलाना चाहता था। इसलिए उसने टोडरमल को कांगड़ा भेजा। फलस्वरूप तत्कालीन कांगड़ा के महाराजा धर्मचन्द ने अकबर का आधिपत्य स्वीकार किया। 1620 ई में जहांगीर ने कांगड़ा को अपने अधीन किया।

17वीं शताब्दी में बुशहर राज्य के प्रसिद्ध राजा केहरीसिंह ने कांगड़ा सारी कोटगढ़ दलठ और कुमारसैन पर अपना आधिपत्य जमाया। उसने मण्डी सुकेत सिरमौर और गढ़वाल की ओर भी कदम बढ़ाए। 1681 ई0 में किन्नौर का ऊपरी भाग तिब्बत लद्दाख युद्ध में उसने प्राप्त किया।

मुसलमानों के राज्यकाल में सुरक्षा की भावना से अनेक दुर्गों का निर्माण हुआ। जिनमें कमलाह (मण्डी) मदनकोट (कुल्लू) चवानी (सुकेत) हमीरपुर त्यूरसरयू (बिलासपुर) रामशहर (नालागढ़) के दुर्गों का निर्माण हुआ।

औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य का पतन हो गया। हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी राजाओं में कांगड़ा के राजा संसारचन्द्र ने एक कुशल योद्धा और शासक के रूप में ख्याति प्राप्त की। 1775 ई में सिंहासनारूढ़ होने के बाद मुगलों और सिखों के संघर्ष के फलस्वरूप कांगड़ा के दुर्ग पर 1786 में उसका अधिकार हो गया। इसके

साथ साथ उसने मंडी सुकेत कहलूर और चम्बा पर अपना आधिपत्य जमाया।

राजा ससारचन्द्र का बढ़ता शक्ति से घबराकर अनेक पहाड़ी राजाओं ने कांगड़ा के विरुद्ध युद्ध करने के लिए गोरखों की सहायता प्राप्त की। फलतः गोरखों ने कांगड़ा पर आक्रमण किया और ससारचन्द्र ने जो राज्य जीते थे वे पुनः स्वतन्त्र हो गये। तीन वर्ष तक गोरखों ने कांगड़ा में तबाही मचाई। मजबूर होकर राजा ससारचन्द्र को महाराजा रणजीत सिंह की सहायता के लिए प्रार्थना करनी पडी। महाराजा रणजीत सिंह ने इस शर्त पर सहायता दी कि वह सिखों की सहायता के बदले कांगड़ा दुर्ग और 66 गांव देगा। महाराजा ससारचन्द्र ने गोरखों से छुटकारा मिलने पर अपना वायदा पूरा किया। कांगड़ा की दिशा से पराजित होकर गोरखों ने बुशहर राज्य पर आक्रमण किया। कमरू के समीप गोरखों और किन्नरों का युद्ध हुआ जिसमें गोरखा सेना पराजित हुई।

1842 में जनरल जोरावर सिंह ने लाहौल स्पिति अपने अधीन कर लिया और यहां का प्रशासन अपने विश्वस्त सहायक रहीम खां को सौंपा। रहीम खां एक निर्दयी और क्रूर शासक था। उसने बौद्ध मठों और हिन्दू मंदिरों को नष्ट किया। यहां के लोगों ने भागकर बुशहर में शरण ली। आखिरकार रहीम खां मारा गया।

1845 में सिखों के साथ युद्ध में लाहौल स्पिति अंग्रेजों को मिला जिसे अंग्रेजों ने 1847 में कांगड़ा जिला का भाग बनाया। इसी दौरान अंग्रेजों ने हिमाचल प्रदेश पर अपना आधिपत्य बढ़ाया। गोरखों को पहाड़ों से भगाकर अंग्रेजों ने कोटखाई कोटगढ़ और कुल्लू को अपने साम्राज्य में मिलाया। अपने राजनीतिक प्रतिनिधि इन पहाड़ी राज्यों की देख रेख के लिए नियुक्त किए। इन पहाड़ी राजाओं को अपनी सेनाएं रखने का अधिकार भी धीरे धीरे छीन लिया और ये ब्रिटिश सरकार के कृपा भाजन बने।

साधारण जनता के कल्याण के लिए जैसे पिछले एक हजार से भी अधिक वर्षों से कुछ नहीं हुआ था ब्रिटिश काल में भी कुछ नहीं हुआ। ब्रिटिश सरकार ने इन सभी पहाड़ी राज्यों में परस्पर कटुता भेदभाव और ईर्ष्या बनाए रखी। भौगोलिक भाषाई सामाजिक सांस्कृतिक धार्मिक पारस्परिक एकता होने हुए भी उन्हें विभाजित रखने की जान बूझकर कोशिश जारी रखी।

परन्तु युगों से रौंदी गई जन शक्ति हाथ पर हाथ धर बैठी रही हो ऐसी बात नहीं। सामन्ती यातनाओं का बांध यदा-कदा कहीं कहीं पूरे वेग से फूट पड़ता था। असंतोष फलता रहा।

1825 में कोटखाई कोटगढ़ की जनता ने अपने निरंकुश शासक के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। मेजर कनेडी एक सैनिक टुकड़ी लेकर कोटखाई गया और वहां के राणा को पेंशन देकर यह क्षेत्र ब्रिटिश राज्य में मिला लिया। 1859 में बुशहर में विद्रोह हो गया और 1876 में सुकेत की जनता वजीर नरोत्तम के विरुद्ध भड़क उठी। मंडी में शोभाराम के नेतृत्व में विद्रोह की ज्वाला भड़की। 1876 में नालागढ़ के लोगों ने

वजीर गुलाम कादिर खा के विरुद्ध जमकर लडाइ लड़ी। 1883 और 1930 में बिलासपुर के सामन्ती शासन के विरुद्ध बिलासपुर की जनता ने आवाज उठाइ। 1905 मे बाघल के लोगो ने भी राना के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। इसी तरह की छुट पुट घटनाओ द्वारा हिमाचल प्रदेश की सभी छोटी बड़ी रियासतो म आतकवाद के विरुद्ध असहाय अपढ़ और कठिनाई से घिरी जनता ने विद्रोह किया।

कागड़ा ने रामसिह पटानिया के नेतृत्व म ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध तलवार उठाई। परन्तु अन्त म अग्रेजो की फूट डालो और राज करो की नीति सफल हुई। घर का भेदी लका ढाए के फलस्वरूप रामसिह पटानिया की सारी योजना मिट्टी म मिल गइ। रामसिह को पहाड़चन्द की सहायता से अग्रेजो ने कैद कर सिगापुर भेज दिया। 1857 म जतोग और कसौली म स्थानीय सिपाहियो ने अग्रेजो के विरुद्ध विद्रोह किया। परन्तु अरकी के राना कृष्णसिह की सहायता से इस विद्रोह को दबा दिया गया। प्रथम महायुद्ध म भाइ हृदयराम और हरदेव अग्रेजो को खण्डन के लिए गदर पार्टी म सम्मिलित हुए। 1939 से इन पहाड़ी रियासतो म प्रजा मडल आन्दोलन जोर पकडने लगा। पहाड़ी राजाओ ने सभी जगह जनता की स्वतन्त्रता और समानता की पुकार को दबाने की कोशिश की पर कब तक? 1939 मे धामी सत्याग्रह के फलस्वरूप राष्ट्रीय नेताओं का ध्यान भी आकर्षित किया। महात्मा गाधी और जवाहरलाल नेहरू ने राणा के आतक के विरुद्ध आवाज उठाई।

सिरमौर म मिया घूघू, वस्तीराम पहाडी चेतसिह वमा वैद्य सूरतसिह और शिवानन्द रामोल शिमला क्षेत्र म पद्मदेव सत्यदेव बुशहरी भागमल सौहटा बिलासपुर मे दौलतराम सारव्यान और मास्टर सदाराम कागडा म पहाडी गाधी बाबा काशीराम के नेतृत्व मे कॉमरेड रामचन्द्र ओर ठाकुर पचमचन्द्र ने मिलकर स्वतन्त्रता आदोलन में प्राण फूके। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आदोलन म हिमाचल प्रदेश की जनता ने सक्रिय सहयोग दिया। पहाडी राजाओ के लिए जन शक्ति को उनके मूल अधिकार से वंचित रखना कठिन हो गया।

हिमाचल प्रदेश की 31 छोटी बडी रियासतो में देश की स्वतत्रता के लिए आदोलन तीव्र हुआ। एक सुव्यवस्थित रूप से स्वतत्रता-आदोलन जोर पकडता गया। आखिरकार 15 अगस्त 1947 के दिन भारत की स्वतत्रता के साथ साथ हिमाचल प्रदेश की सभी रियासतो के राजाओ ने एक निर्णय लिया जिसके अनुसार 30 रियासतो ने एक इकाई के रूप मे विलय की घोषणा की ओर 15 अप्रल 1948 के दिन वर्तमान हिमाचल प्रदेश की स्थापना हुइ। पहली जुलाइ 1954 के दिन बिलासपुर राज्य भी इसम मिल गया। पजाब के पुनर्गठन के फलस्वरूप पहली नवम्बर 1961 के दिन पजाब से पहाडी क्षेत्र शिमला कागडा कुल्लू, लाहौल स्पिति नालगढ ऊना डलहौजी इत्यादि हिमाचल प्रदेश में मिला दिये गए।

25 जनवरी 1971 तक हिमाचल प्रदेश एक केन्द्र शासित प्रदेश रहा परन्तु

उसी दिन से उसे पूर्ण राज्यत्व का दर्जा दिया गया। हिमाचल प्रदेश को प्रशासनिक रूप स 12 जिला म विभक्त किया गया है जिनक नाम है—शिमला कागड़ा, कुल्लू, सिरमार किन्नार लाहाल स्पिति ऊना सालन विलासपुर चम्बा और मडी। हिमाचल की कुल आवादी अव 55 लाख (1991 की जनगणना) है और क्षेत्रफल 55 658 वग किलामाटर। 95 प्रतिशत लोग ग्रामा म रहते ह।

प्रशासनिक परिवर्तन

15 अप्रैल 1948 स लकर मार्च 1952 तक हिमाचल प्रदेश मुख्यायुक्त के अधीन एक प्रशासनिक इकाई बना रहा। जनता के बराबर आग्रह पर 1952 ई में इसे उप राज्यपाल के अधीन 'ग' श्रेणी का राज्य बनाया गया। डॉ यशवतसिह परमार के नेतृत्व म पहली लोकप्रिय सरकार बनी। इस सरकार न नए हिमाचल को एक सूत्र मे बाधने आर विकास की दिशा प्रशस्त करने के लिए जनतांत्रिक ढाचे को सुदृढ बनाया। पहली जुलाई 1954 के दिन विलासपुर को भी जिला बनाकर हिमाचल प्रदेश का भाग बना दिया गया।

फिर देश म भूतपूर्व रियासता से बने राज्यो म कुछ प्रशासनिक परिवर्तन के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कुछ नया रूप दिया गया। इसी नीति के अतर्गत पहली नवम्बर 1956 से पहली जुलाई 1963 तक हिमाचल की लोकप्रिय सरकार हटाकर इसे केन्द्र द्वारा प्रशासित क्षेत्र बना दिया गया।

परन्तु लोकतत्र की लहर से हिमाचल की जनता भी कब तक अछूती रहती। लाकभावनाओ का आदर करते हुए जुलाई 1963 में डॉ यशवतसिह परमार के नेतृत्व मे फिर स एक नया लोकप्रिय मंत्रिमडल बना, जिसमें पंडित पदमदेव ठा रामलाल प सुखराम लालचद प्रार्थी देसराज महाजन इत्यादि मत्री बने। इस मंत्रिमडल क नेतृत्व म हिमाचल क आथिक और प्रशासनिक विकास को दिशा मिली।

1966 इ म पजाब म अकाली आदालन के फलस्वरूप पजाब का पुनर्गठन किया गया। पजाब से हिन्दी भाषाई क्षेत्र निकालकर हरियाणा का निर्माण हुआ। पहली नवम्बर 1966 से पजाब का सारा पहाडी क्षेत्र हिमाचल म मिला दिया गया। हिमाचल के जिलो का बढाकर दस जिले बना दिए गए जसे—महासू, किन्नार सिरमोर कुल्लू, कागडा मडी लाहाल स्पिति बिलासपुर चम्बा शिमला।

- हिमाचल प्रदेश की पूर्ण राज्यत्व की माग का पूर्ण समथन मिला। इस माग को अहिसात्मक नेतृत्व प्रथम मुख्यमन्त्री डॉ यशवतसिह परमार ने दिया। हिमाचलवासियो की सवंधानिक सुधार की माग की कदर करत हुए 25 जनवरी 1971 के दिन हिमाचल को भारत का 18वा राज्य बना दिया गया। तत्कालीन प्रधानमन्त्री स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गाधी ने शिमला रिज मैदान म 25 जनवरी 1971 को गिरती वर्फ के बीच इस नए पूर्ण राज्य का उद्घाटन किया।

गाथा गीत सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ

मने 1985 म अपनी प्रकाशित पुस्तक हिमाचल की लाक संस्कृति म लिखा था—'यदि हिमाचली लोक सम्कृति की सम्पूण कहानी देखनी हो आर उसका व्यावहारिक रूप देखना हा तो वह हिमाचल क लोक जीवन सामाजिक एव धामिक सस्कारा एव लाक साहित्य म उपलब्ध होगा विशेषत यहा के श्रेष्ठ लाक गाना गाथा गीनो मिथका पुराण कथाओ लोक परम्पराओ लाकवाताओ रीति रिवाजा एव प्राचीन स्मृतियो म। जीवन दृष्टिकोण पारिवारिक धामिक आर सामाजिक जीवन का सारा सतरगी ताना बाना हिमाचल प्रदेश की लाक सस्कृति की रूपरखा बनता चला गया है।

हिमाचल प्रदेश के असख्य लोक गाथा गीतों म प्रमुख ह—धामिक पोराणिक वीर प्रम त्याग बलिदान एव रोमाच सबधी गाथा गीत। प्रत्यक गाथा गीत म सामाजिक सांस्कृतिक सदर्भ का विशेष महत्त्व रहता ह।

धार्मिक लोक गाथा गीत

भारत की पवत शृखलाओ म हिमाचल के गाथा गीत रहस्यमयी आध्यात्मिकता स परिपूण ह। उसकी हर चोटी हर घाटी हर गाव हर जलाशय आर नदी वन आर वृक्ष भी गाथा गीता की पृष्ठभूमि बनकर वर्तमान क मुह म झाकत दीखते है। स्थानीय लाक जीवन क विश्वास आस्थाए परम्पराए सस्कार गाथा गीतो क ताना बाना से झलकती ह।

पहाड़ी रामायण

हिमाचल प्रदश क धामिक लाक गाथा गीता जसे पहाडी रामायण महाभारतपंडायण एचला युकन्तस बरलात दवकन्या से यह सत्य स्पष्ट हा जाना ह कि इनका सबध सार दश आर हिन्दू धम स हाने हुए भी स्थानीय सामाजिक सांस्कृतिक सदभ स भी जुड़ गए ह जिसस मूल गाथा गीत की रोचकता बढी है। जस पहाडी लाक रामायण गाथा की इन पंक्तियो स झलक मिलती ह

लाक री नगरी वार्जी वधाइ।
दशु शीरा रै चेटडी जाइ॥
इसा बटी रै ग्रहा ज्याहला
लाक र ज्यातिपि बोलन लाग
वापा खिब्याहिन्दि हुई
वापा खि कदुपणी हुई
इसा बेटी ख काठडा चाणा
स काटडा समुद्रा पाणा
सौन री कोठडा वाहन्दा लागा
झिवरा जाला गारका लागो
चिवरा झिवरि हुआ आ खाडा
सेण झिवरा रो पचा आ दाडा
झिवरा झिरारि हुई आ काग
सैणि झिरारी री चाडी जा टाग

वाल्मीकि तुलसीदास द्वारा लिखित रामायण की परम्परा से हट कर लोक कवि न सीता आर रावण के सबधो को नया मोड दिया ह। पहाडी रामायण का सारा स्वरूप हिमाचल अकादमी द्वारा प्रकाशित एव इन पंक्तियो के लेखक द्वारा सम्पादित पहाडी लाक रामायण (पृ 256) म उभरा ह। इसलिए स्थानाभाव क कारण सीताजी के जन्म लगन मे वाप स ब्याह क जोग वाप का बेटी को मरवा देन की कोशिश मा का बेटी का सोने क काटड़े म वहा देना मछेरों को कोठडा मिल जाना उस राज भय से राजा जनक क खत म दवा देना और फिर हल चलात हुए राजा जनक को 'सी मे मिलना तो लगभग सभी रामायणा म मिल जाता हे। इसी प्रकार सीता हरण का कारण परम्परागत रामायण म लक्ष्मण शूर्पणखा झड़प माना जाता ह परन्तु पहाडी लोक रामायण म सीता द्वारा श्राद्ध क समय स्थानीय उपज 'भरट' का वडा बनाना कव्वे द्वारा वह वडा चाच मे लका ल जाना सारी लका नगरी म उस की महक का फैल जाना, कव्वे को खोजना विना चोच ताडे क्व्व की चाच स बडा उडाना ओर रावण का 'वटा खाकर वेहाश हा जाना फिर होश म आना ओर भेस बदलकर भारत आना। सभी रामायणा म यह घटना मिल जाती ह।

पहाडी महाभारत

इसी तरह 'महाभारत' की लाक गाथा में कुन्ती नन्ती के सिरमौर शिमला जनपद म प्रचलित लाक गाथा गीत स्थानीय रगत लिये हुए हैं। गाधारी का नाम नन्ती और परम्परागत महाभारत में झगडे की बुनियाद की जगह कुन्ती नन्ती का झगडा स्थानीय लाक गाथा म युद्ध का कारण बताया गया ह। गाथा गीत की इन पंक्तिया से कारण

स्पष्ट हो जाता है

बैणा बोला सा हरि कुन्ता माई—
मर बैहणिए शोगा भि न हुआ।
नतना खाओ तर शाटा शर्गीणा
तेनरा खा मर एके याडिया भीमा।"
"ननना गाह तै दउइ गाड़ा
पारू जोड़ा तउए बोल" ढाड़ा।
यालू बोलू गाह उजुई लड़ाई।
बैणा बोला सा हरि कुन्ता माई—
"मर भीमा तै तीइ गाइ कीले दीणी।
नन्नी कुन्ती ए उजुई लदाई।
घारड़ झाबड़ ए हुई लड़ाई
कुन्नी नोन्तिए उजुए लड़ाई।
नन्ती चेईए काना थोसा काना
कुन्ता माय्ए गोड़ा यासो गाड़ा।
आरी बेरा मारा कुन्ती तेआ नन्ती
तेऊ ध्याड़ मारी नन्तीए कुन्ती।
जापदी चोड़दी सौ धीरा ले आई?
भीमा सैणा आओ हेड़ै करे बैणे
होरी बेरा सो हेड़ी आणा हेड़ै
तेऊ ध्याड़े तेऊ के हेड़ी बिना लागो
बैणा बोला सौ हरि सैना भीमा
"उज मउडिए आगी बिना थाड़ी
तरे मउड़िए शोगा कोरौ आजा?

भावार्थ बहन कुन्ती ने कहा—नन्ती! तुम्हार साठ बच्चों से मेरा एक भीम तुम्हारे साठ के बराबर खा जाएगा। जब नन्ती ने भीम को वेला से उपमा दी तब तो दोनो में झगड़ा बढ गया। झगडा होता रहा। भीम आ गया और कौरवो के घर चुनौती दे आया। महाभारत का यह भी एक कारण बना।

बरलाज

सृष्टि उत्पत्ति का जितना विशद वर्णन लोक गाथा गीतों 'बरलाज' और अचनी' म मिलता है उतना अन्यत्र नहीं। पहाड़ी लोक कवि ने धार्मिक आख्यानों को लोक भापा में बड़ा सुन्र रूप दिया है आर साथ में आध्यात्मिक आख्यानों की परम्परा को निभाया है।

बरलाज गाथा गीत शिमला तथा सिरमौर जनपद म अधिक प्रचलित है। यह एक लम्बा गाथा गीत है जो प्राय दिवाली के दिन गाया जाता है। इसका सीधा सबध सृष्टि-उत्पत्ति के साथ साथ राजा बलि की पौराणिक कथा स भी है। सृष्टि-उत्पत्ति का 'बरलाज' गाथा गीत का वर्णन इस प्रकार होता है

पहला नाव नारायणा रा जुगिये धरती पुआणी
जलथल हाई पिरथवी दवी मनसा राखी जगाली।
माणू न होले क्वै रिखी एकेई नारायण राजा होला
सिद्ध गुरु री झोली दा ढाई दाना शेरयो रा झाड़ा।
ढाई दाणा शेरया रा म्हारे खाड़िये बीजो
बीजी-बाजी रा शेरयो जमदे लागे
जामियो रो शेरयो गोड्नो लाओ
गोड़िया शेरया पाक्नो लागो
पाकि लूणी रो शेरयो कुनुयें लाआ।
गाहि माण्डियौ रो क्या हुआ पवाजा
ढाई दाणा बीजो रा म्हारे बीजो श्वाड़े
छुरू भरी शेरयो रा म्हारे बीजो श्वाड़े
बीजा दा शेरयो जमदी लागो
जामिया रा शेरयो गोड़नो लाओ,
गोडयो शेरयो पाक दो लागो
पाकी लूणी रो शेरयो कुनुय लाओ।
गाहि-माण्डिया रा शेरयो का हुआ पवाजा?
छुरू भरी बीजौ रा पाथा होआ पवाजा?
पाथा भरी शेरयो रा म्हारे बीजौ शवाडी।
बीजौ रा शेरया जमदा लागा
जमौ दो शेरयौ गोड़नौ लाआ
गौंडियौ शेरयो पाकदो लागो
पाकी लुणी रा शरयो क्या हुआ पवाजा
पाथा भरी शेरयो रा जूण हुआ पवाजा।
जूण भरी शेरयो रा म्हारे बीजो श्वाड़े
बीजो रो शेरयौ जमदौ लागो
जमौ दो शेरयौ गोड़नौ लाओ
गोड़ियो रो शेरयौ पाकदो लागो
पाकी लूणी रो शेरयो कुनुवें लाओ ॥

इसी प्रकार गाथा गान धीरे धीरे आगे बढ़ता है। फिर देवी मनसा नारायण के मन से उपजी। उस नारायण ने सात कलश रखने को दिए। स्वयं विष्णु बारह वर्ष के लिए निद्रामग्न हो गए। इनमें महान एक कलश से ब्रह्मा और दूसरे कलश से विष्णु उपजे तीसरे कलश से महादेव पैदा हुए। प्रत्येक से देवी ने विवाह का आग्रह किया परन्तु उन्होंने उसे माता ही माना। अन्त में वह आदमी बनाने में लग गई। किसी ने हुंकार नहीं भरी। कामदेव जब बनाया उसने हुंकार भरी। आत्मकार के पुत्र (ब्रह्मा) पैदा हुआ और सृष्टि की रचना प्रारंभ हो गई।

ऐचली

हिमाचल प्रदेश का दूसरा प्रसिद्ध गाथा गीत 'ऐचली' है। इसमें सृष्टि रचना का एक अलग आख्यान है। इस गाथा गीत के अनुसार जब कोई नहीं था तब केवल एक गुरु था और कुछ नहीं था। यह गुरु विष्णु की अपेक्षा शिव-उपासकों के लिए अन्य कोई नहीं स्वयं शिव थे। सृष्टि की रचना का स्वरूप इस गाथा गीत में देखिए।

नहीं थिये तारा नहीं थे प्याणु
ता थिये गुरु न्यारे।
बुद्धि ता गुआई मेरे गुनाजरू ने
गुगल री धूणी धुधकाइ।
गुगले री धूणी धुधकाई गुरुए
स धूणी भस्म कराई।
सेइआ धूणी गुरुए भस्म कराई
अग मली-मली लाई।
अग मली मली मलूणी कराई
तिस मलूणी री मूरत बणाई।
पढी ता गुणी दिता जीवादान
खड़ी होइ मनसा देई।
बारह बरह दी हाई मनसा दई
ता नदी पर न्हाणा जादी।
कपड उतारे देई करया स्नान
गुरुए दी भृष्टा लगाई।
नाज गुरुए दी भृष्टा लगाई
मनसा हाई पैरा भारी।
इक माह गणदे दुआ हार होई जादा
आया दसवा महीना।

सृष्टि रचना का पृष्टभूमि का स्वरूप इस गाथा गान म बदल जाता ह। इस गाथा क अनुसार पहल ब्रह्मा फिर विष्णु (इश्वर) आर अत म भाला महादेव का जन्म हुआ। इस गद्दिया का लाकप्रिय गाथा म शिव का माहिमा का वखान प्रचुर मात्रा म उपलब्ध ह। शिव ही गद्दिया क परम श्रेष्ठ सवशक्तिमान आराध्य देव ह। सृष्टि का निमाण करत समय शिव न लाहा चादी साना ना गज क मनुष्य गिठमुठिए (छाट कद क) मनुष्य माटी क तान हाथ क मनुष्य बनाए। यही तान हाथ क मिट्टी क पुतल (मनुष्य) अब इस धरती पर विचरत ह। यही मनुष्य पाप आर पुण्य के बीच भदभाव करन म समथ ह। गाथा गीत बहुत लम्बा ह। उसकी अतिम कडी म गाथा गीत का साराश झलकता ह

> कलजुगा र वणजयारू लणा दणा बुझद
> दणा दूणा मूल न बुझदे।
> धरमी रात दन बणाया।
> पापी त धरमी दूए लघ लाया।
> धरमी र वडे लघी टप्पी जाद
> पापी डूबा डूबी मरदे।
> धरमी रे वड हाइ जादे पारा
> पापी वार ना वा पार।

उपयुक्त दानो गाथा गीता के गहन अध्ययन स यह स्पष्ट हा जाता ह कि विष्णु क अनुयायी विष्णु को आर शिव क अनुयायी शिव को सृष्टि क रचयिता मानत ह। पहाडी जनपदा म शिव की उपासना व्यापक ह। इस क्षेत्र की हर ऊची चाटी चाह किन्नर कलाश हा चाह मणिमहेश हा या धालाधार हा या हाटृशिखर शिव शक्ति का पुण्यधाम माना जाता रहा ह। इसी कारण धामिक गाथा गीता म त्रिमूति म शिव की महिमा अनक पक्तिया म मिलती ह।

युकुन्तरस

जनजातीय क्षत्र किन्नार का प्रसिद्ध मादव–युकुन्तरस गाथा गीत भी महादव की महिमा गाथा से परिपूण ह। परन्तु सृष्टि रचना का वणन किन्नारी लाक कवि न अनूठ ढग स प्रस्तुत किया ह

> कुनी सारडा मा शीपा शीपा।
> मा शीपा शी बागुरा बऊआ।
> बागुरा बऊआ शपो मा शेपा।
> शेपा माजाए काले पिन्टू।
> पिन्टू फाटिग्या आपू मादेव जारमा।

मान्ये जारमो एकल खन्खारा।
एकले खन्खारा आखी दी नाइ।
एकल खन्खार हाथा वा नाइ
वागुरा हाशा पूरबा वी लेका।
तेरे नीख्या हाथै दी आखी।
शीरा कुशीया दा वाई सूरना।
न्यायो आयार सारे मान लोका।
अगा फाटिग्या ब्रह्म विष्णु।
अगा फाटिग्या विष्णु नाराणा।
सीरा ठासिग्या माथे सारगे।
पैरा ठासिग्यो आकाश पइताले।
प्याशदा लागा सारा भात लागे।

स्पष्टत इस किन्नारी गाथा गीत म सृष्टि उत्पत्ति का सारा कार्य महादेव द्वारा सम्पन्न हुआ हे। अन्य इश्वर जस ब्रह्मा विष्णु की भूमिका गौण रही। सृष्टि रचना के वाद ईशुरस (महादेव) को विवाह का विचार आया। वर्फ के राजा (पर्वतराज) युकुन्तरस को अपनी बटिया गगा गौरी का विवाह महादेव से करने म आपत्ति रही। दोनो में शक्ति परीक्षण हुआ। युकुन्तरस हार गया और कुछ शर्तो पर विवाह करना स्वीकार किया। वे शर्ते युकुन्तरस के अनुसार असभव थी परन्तु महादेव ने सभी शर्ते पूरी करना मानलिया विवाह बडे ठाठ से हुआ आर सभी शर्ते भी पूरी की गई।

इस गाथा गीत म सृष्टि रचना विष्णु महादेव की बातचीत महादव युकुतरस का शक्ति परीक्षण बारात नारातिया का किन्नौरी जनपद का लोक नृत्य 'काय' धुन मे नाचना सभी शर्तो को पूरा करना—इन विषयों को लोक कवि ने विस्तृत रूप से बखाना है। स्थानीय परम्पराए सामाजिक आस्थाए लोक जीवन की पृष्ठभूमि की सहज झलक इस गाथा गीत में मिल जाती है।

(ख) पौराणिक गाथा गीत

पाराणिक लोक गाथा गीतो को हिमाचल प्रदेश के जनपदीय जीवन में विशेष आदर प्राप्त है। परन्तु समय की विडम्बना तो केवल यही है कि इन गाथा गीतो का गाने वाले परम्परागत गायक धीरे धीरे समाप्त होते जा रहे है। इन गाथा गीता की लोक परम्परा मूल गीतो का पाठ सुरक्षित रखने का प्रयास ही प्रस्तुत पुस्तक है।

पिछले 30 40 वर्षो तक हिमाचल प्रदेश के लगभग सभी ग्रामो में गाथा गीतो का आयाजन करना लोक गायकों को विशेष आदर देना आर उत्सुक श्रेताआ की भीड गाथा गीता की लोकप्रियता का विशेष प्रमाण रहा है। परन्तु दूरसचार के साधना रेडियो टीवी वीसी आर आर शिक्षा प्रसार की चकाचोध में ग्रामीण समाज की

रसधारा सूखती जा रही ह। अब तो गिन चुन लोक गायक रह गए है जिन्ह हिमाचल प्रदेश के सभी लोकप्रिय लम्ब लम्बे गाथा गीत, जस भर्तृहरि गूगामल गोपीचन्द लारा गोला नाग दव वाइन्द्रा श्रीगुल रणसीवीर याद हो या उन्ह सुरक्षित रखन या इस परम्परा को जारी रखन का काइ प्रेरणा प्रोत्साहन या आवश्यकता महसूस होता हो।

राजा भर्तृहरि इस गाथा गीत के हिमाचल के प्रत्यक जनपद की स्थानीय बोलिया म अनेक रूप मिलने है। जनजातीय क्षेत्र को छोड़कर शेष सभी भागो म भाषा के सहित कथा वस्तु के भी अनक रूप उपलब्ध ह। इनम स कुछ रूप हिमाचल अकादमी न सगृहीत भी किए ह। परन्तु सभी गाथा गीत अधूर है। लोक गाथा गीत में कुछ वाहरी ढाच म साम्यता नजर आती है। जसे राजा भर्तृहरि उज्जन के राजा आर विक्रमादित्य के बड़े भाइ गधर्वसेन क सपुत्र थ। अल्पायु में पिगला स विवाह हुआ जिस वह वहुत प्यार करत थे। वड़े होकर उनका शिकार खेलना जादुइ हिरण का मारना हिरणी का उन्ह शाप दना वापस आकर पिगला की परीक्षा लेने के लिए अपनी मृत्यु का समाचार दना और उसका छलाग लगाकर आत्महत्या कर दना–इसी घटना पर कुछ जनपदा के गाथा गीतो म मतभेद ह। राजा भर्तृहरि का पिगला की मृत्यु से विक्षिप्त होना फिर रानी चादश से विवाह करना। उसक द्वारा भर्तृहरि का 'अमर फल' की घटना से धोखा देना राजा मे वराग्य भावना जगाना आर सन्यासी का रूप धारण करना इन घटनाओ म नामो के फेर वदल से कुछ समान रूपता दीखती है। परन्तु कागडा चम्बा हमीरपुर मडी बिलासपुर आर ऊना जनपदो म गाथा गीत सन्यासी बनने के बाद समाप्त हो जाता है। शिमला कुल्लू, सिरमौर सोलन जनपदो में यह भर्तृ गाथा गीत का केवल आधा भाग हे।

सन्यासी वनने के बाद राजा भर्तृहरि पिगला के दूसरे जन्म लेने की वात मानते हुए वर्तमान भिरमारानी के रूप मे फिर दर्शन करना चाहत ह। उसकी तलाश म वर्षों अखाडों, राजधानियों म भटकने हैं। अनेक नागिया जोगनिया तान्त्रिको मठो क्रूर शासकों से उनकी मुठभेड होती है। उनके सिद्ध गुरु गोरखनाथ हर कठिनाई म भर्तृ की सहायता करते रहे ओर अत म उनकी भिरमा स भट हो जाती है। वे एक दूसरे को पहचान लेते है। पुराना प्यार जाग उठता ह। प्यार अमर है। वे फिर दोनो साथ चल पडते हे। यहीं यह लोक गाथा समाप्त हो जाता है। चोपाल के साघटे (नाथपथी) बलग क पाडय भर्तृ का लोक गाथा गीत कई जनपदो म सात दिन तक लगातार दिन रात गाकर समाप्त कर पाते थे। सुनने वालों की भीड़ लगी रहती थी। अब न वे लोक गायक रह न सुनने वाले। थोडे बहुत जो शोकीन ह भी तो उनके पास समय नहीं है। इस लोक गाथा को मन उपन्यास का रूप देकर–'रमता जोगी' प्रकाशित (1991) किया।

जब भर्तृहरि सन्यास लन क लिए जिद कर वठत हैं तब मा स वह पूछते हे

भर्तृ— कासि ता भ दशा रा राना शूणा बाधका
कासि शुणी दशा रा न राणी र आमिया'
कासि शुणा दशा रा अन्न अमा माठटा
कासि शुणा दशा रा न पाणी र आमिया''

इम प्रश्न का उत्तर राजमाता न इस प्रकार दिया।

राजमाता—राजा भाया तू ही राजा बटिया बाधका
राणी माया भिरमा न राणी र बेटिया'
नउला ता देशा रा अन्न बटा मीठडा
पवना काड रा न पाणी र बटिया।

दश ता भे मुल्क चाला ह तू बटिया'
कुण तरा सगी असो कुण तेरा साथी आ?
कुण लाआ ला भूपटी न वाता रे बटिया'

भर्तृ— झाली आ फावड़ी संगि मर साथी आ आमिया'
गुरु लाआ किन्दरी दि वातो रे आमिया'

कितनी काव्यमयी भाषा म लाक कवि न सन्यास क सूक्ष्म मर्म का समझान का प्रयास किया ह'

भर्तृहरि लाक गाथा गीत क कुछ अशा पर ग्रामीण लाग नाच उठते ह। जसे साधुरी किन्द्री'—

लाया साधुए किन्द्री किन्द्री दि तारा रे
बेना नाचा आ मोहुला नाच्या सोंउरा बाजारा रे।
एकि तारा री किन्द्री बोलो स नाखी नाखी वाणी
नाचो ल्हौडल बाडले सार्थी से चादशा राणी।
चादा नाचा लै सुरजौ नाचा दवत भि सार
चारो धूरा वालौ नाचदी लागी आ सरगो द तारे।
चिहे लाका वालो नाचदे लाग नाचा वाला राजा
राजा नाचा ला इन्द्रा लागा स किन्द्री रा धाजा
नणी बजाऊ ई गो किन्द्री गुरआ भीतिए माखी भडाणी
कीजुए हुन्दी किन्द्री गुरुआ कीजुए हुन्दि तारी।

गाथा गीत का यह अश कई बार लोक कवि स्वतन्त्र रूप से भी गाकर सुनाते ह आर ग्रामीण लोग इस गाथा गीत की मधुर तान पर नाच उठते है।

ससार की माहमाया से तग आकर पिगला की मृत्यु का आघात तथा रानी चोदश

का विश्वासघात भर्तृहरि के कोमल हृदय में वैराग्य भावना जगाने में समर्थ हो गया। सन्यासी बनकर राजा भर्तृहरि महलों से चल पड़े और अपने मन को समझाते रहे।

काचा वाणा काया काठटी
झूटा वाणा ससार।
चाऊ दिन राजा जीऊणा
छोडि दणा घर वार
समझी शृणि चल्ला राजा भरथरी'

मार्ग में वैरागी भरथरी से लोगों ने पूछा

कीजुए कारण मूड मुडाउआ
कीजुए कारण डागी?
कीजुए कारण झाली आ फाऊडी
हुइ कइ इतनि वीगी?

भरथरी उत्तर देते

भिरम तइ मुडाउआ
कूत छेडन खि डीगी
विछिया मागण ता झाली आ फाउडी
हुई जा एतनि वागी
लागुआ हुइ ऐतनि बीगी।

भर्तृ की किन्द्री जो नाथपंथी जोगियों का एकतारा रही पहाडी गाथा गीत में एक महत्त्वपूर्ण लोक वाद्य है जो नाथ पंथी जोगियों की तरह धीरे धीरे लुप्त होता जा रहा है। भर्तृ की किन्द्री में एक जादू था एक आकर्षण था जिसे सुनकर सुनने वाले मस्त हो जाते हैं। वैरागी बनकर भर्तृ पूर्वजन्म की पिंगला के पुनर्जन्म में भिरमा बनी खोजते खोजते सधाउर पहुंच जाते हैं। उसकी किन्द्री की तान सुनकर महलों में खाना छोड़कर भर्तृ के साथ जाने को तैयार हो जाती है

तेर धाध मेर लागी आ लागणा
तू नही जोगड़ू बूरो
तू नही आ भागरो खादा
तू नही खादा धतूरा
एब मिला राजा भरथरी भिरमा मिली राणी
स एब दूइ एण मिल जणहा गाग जमण रा पाणी।

भतृ लाक गाथा की तरह एक अन्य नाथ पथा लाक गाथा 'गुग्गामल' भी लाकप्रिय हुइ ह। इसक अनक कारण ह। इनम स प्रमुख कारण जा म समझ पाया हू वह यही ह कि मुगल आर ब्रिटिश कालीन हिमाचल प्रदेश म नाथ सम्प्रदाय का ग्रामीण समाज पर गहरा प्रभाव रहा ह। सभी जनपदा म नाथ अखाड़ा के अवशेष कनफटे जोगिया क वशज देवी देवताआ की पूजा पद्धति और स्थानीय भाषा म गाए जान वाल भजना आर पूजा मत्रा म चमत्कार का पुट नाथ सम्प्रदाय के विस्तृत प्रभाव क प्रमाण ह।

गुग्गामल गाथा गुग्गामल लोक गाथा गात क भी अनेक रूप उपलब्ध है। हर एक पाठ म स्थानीय पुट 'भाषा' में ही नहीं विवरण म भी यत्र-तत्र आ गया है। गुग्गा गाथा सोलन कागड़ा मडी बिलासपुर और सिरमार जनपद म लोकप्रिय रही है। इस गाथा गीत के पाठ दवराज शमा लाक सम्पर्क विभाग आर हिमाचल अकादमी द्वारा प्रकाशित हुए। तीन पाठा म विवरण घटनाआ एव भाषा का अतर आ गया है। यद्यपि मूल नाम एक जैसे है।

राणा गुग्गामल मारुदेश (राजस्थान) क राजा थे। गुरु गोरखनाथ द्वारा दिए गए वरदान स उनका जन्म हुआ। उन्हें जहर (विष) का अधिपति देवता मानते है। उनके चचेरे भाई उनसे उनकी वीरता और प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण ईर्ष्या करते थ। पर कर कुछ नही सकते थे। गुग्गा न अनेक युद्धा में भाग लिया आर हर बार विजयी बने। उनका विवाह गुरु गोरखनाथ क सोजन्य से कछुआ राजा की राजकुमारी सुरियल स तय हुआ। परन्तु जब वह विवाह के लिए राजमहला के सामने पहुचे तब पहरेदारों ने आर एक बूढ़ी मालिन न उन्ह नहीं पहचाना। और शक्ति परीक्षण कछुआ राजा आर बागड दश के बीच प्रारभ हा गया। बारात जब गारखनाथ महल के राज प्रवेश द्वार पर पहुचे तब अधिक देर हा चुकी थी। पहला पहरा उपवन म मालिन का था

> "किस ब्याहणे आणा मालिणी
> कन्यिा रा लगन रखाया?
> एमा कुण आ राजा तिसरा जे
> ना लख हाथी एथी आणा?
> मालण बालदी— गुरु गोरखनाथ
> सुण्या तू धियान लगाई।
> मारूदसा रा राजा सुणी दा
> गग्गामला ब्याहण आणा।
> गुरु गारखनिजो बोलदा— मालिणी
> ए बैटी रा सा गुग्गा मल राणा।
> अस मगी थी इस ते भट
> नी दई हाए इस ते दो टके असा जो।

कहुआ प्रदेश के राजा ने इस विचित्र बारात जिसमें तिन्न फकीर इक नीला घोड़ा–मारए त आइ चुहाणा री जनत" का घोर विरोध किया। कहुआ राजा अपनी प्रिय राजकुमारी सुरियल का विवाह गुग्गामल से करने को तैयार नहीं हुआ। इस पर युद्ध का बिगुल बज गया। इस युद्ध में हिमाचलवासियों के प्राय प्रमुख देवी देवता भी गुग्गामल की ओर से लड़े

हुक्म करदा गोरखनाथ–
सुणा ओ तुसे सारे भाई।
गुरु गोरखनाथ बोलदा जालपा जो
तू खण्ड लई ने करनी लड़ाई।
गुरु बोले तू सुण हनुमाना
गुरजा छुआला नैं तू लड़या।
गुरु बोले भरा छड़िये जो
बरछिया कन्ते तू लड़ना भाई।
गुरु हुक्मा करदा नार सिहा जो
सांगी लगाइया जो तू चलणा।
फरी बोले सह बूजा बीरा जो–
सांगी चलणा तुसा करनी लड़ाई।
गुरु बोले फेरी सिद्ध चुरासिया जो
तुसा भी लड़ाइया च हिस्सा लैणा।
फेरी बोले गुरु बड़ी माइया जो
तू तां रूरा रा खड़ा चलाणा।
नंगी तेग पाना रा बीड़ा
बिच्च कचहरिया रखिया।

युद्ध की विभीषिका से घबराकर कहुआ नरेश राजकुमारी का विवाह गुग्गामल से कर लेते है। विवाह के बाद अनेक घटनाए घटित होती है युद्ध होते है। अंतिम युद्ध में गुग्गामल का सिर धोखे से उसी के भाई काट देते है और वह बिना सिर के युद्ध करते है। समाधिस्थ होने पर भी अपनी रानी सुरियल से वह मिलते रहते है। फिर एक बार घोषणा हुई कि धरती से वह नीली घोड़ी सहित जीवित उभरेंगे पर जैसे वह धरती से उभरने लगे लोगो ने शोर मचाया और वह पत्थर बन गए। लोग उन्हें विष का देवता– जहर पीर मानते है और उस जगह गुग्गा मढ़िया स्थापित की गई है। प्रति वर्ष गुग्गा नवमी पर गुग्गा गाथा गाई जाती है।

हिमाचल में गुग्गा लोक गाथा गीत के विभिन्न रूप पाए जाते है। इस गाथा गीत का आरंभ 'सृष्टि की उत्पत्ति' के वर्णन से होता है, जिसे जमोत्री धुंधकारा कहा जाता है।

गाथा गात क रूप म गुग्गा एक पुराण पुरुष मिथक नायक 52 वीग म स एक चमत्कारी योद्धा के रूप म उभरा ह एतिहासिक पुरुष क रूप म नही। गुग्गा नाथ सम्प्रदाय स सबधित होन क कारण नाग काल म सप दश का प्रभाव निकालन म समथ था। इस गाथा म स्पष्ट अनक अन्य पुराना लोक गाथाओ का भी यत्र तत्र समावश हो गया ह। हिमाचल म गुग्गा गाथा गान रक्षा बधन क त्योहार स लकर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक गाया जाता ह। गायको म एक चला (लोह की छड़ी उठान वाला) थनरा एकतारा और डमरू बजानवाल होत ह। य गायक मडली बनाकर पहल गाया म घर घर जाकर गाथा गीत गात थ।

गुरु घण्टापाद का लोकगाथा गीत हिमाचल प्रदेश क जनजातीय क्षत्र लाहाल स्पिति म सुप्रसिद्ध गुरु घटा पाद का मदिर जिस घटार या गधालय भी कहा जाता ह अत्यत प्राचीन समझा जाता ह। यहा के सिद्ध पुरुष एव चमत्कारी गुरु घटापाद का कथा गान भी लाहाल स्पिति जनपद म बहुत लोकप्रिय रहा ह। यह गीत स्थानीय बोली म प्रचलित ह

नादी घुशाडरि ए साला वी गूदी जी ओ
नादी घुशाडेरि ए साला वी गूडी जी आ ॥
ए तादी घुशाडा ए डूणा चूणा की ती ओ।
ए लाम्बा गुरु ए शादी कारी आणी आ ॥

कहा जाता ह कि उन्नीसवी शताब्दी क अन्तिम भाग म लाहाल स्पिति के दो गाव म अकाल पड गया। इसका कारण जानन क लिए लोग गुरु के पास गए। लामा ज्योतिष शास्त्र म कारण घटा गोम्पा क टूट फूट जान तथा बहुत समय तक लोगो द्वारा उसकी उपेक्षा निकला

ए गुरु घण्टाडा ए नावे गोम्पा मे गून्द आ
ए त्रिजी काठी ए डूणा चूणा कीनी आ।

यह सुनकर तादी वरपा और गोशानवासी तत्कालीन अग्रजो द्वारा नियुक्त अवतनिक अधिकारी नगी हरिचन्द क पास कलांग पहुच। दूरदर्शी अधिकारी बोद्ध धम क सभी जीवित लामाओ को जानत थे। गाव वालो की बात सुनकर नेगीजी न तग ना विहार क प्रधान लामा टशी नम्फल के नाम पत्र लिखकर चुने हुए लोगो को लद्दाख भेजा। पत्र पढकर लामाजी लाहोल पहुचे।

ए गुरु टशी ताम्फल घण्टा डे आए आ।
ए गुरु टशी ताम्फल हूकू मा दानी आ ॥
ए गुरु घण्टारि ए नावे गाम्पा न्यारी आ।
ए जीमी भूमि ए हर द्रूग फेरी आ ॥

ए तादी घुशाडेरि ए साता ना फरी आ।
ए तादी घुशाडरि ए शा गूना की ती आ ॥

जस ही गाम्पा फिर से तयार हो गया तभी वर्षा शुरू हो गइ। सूखी धरती पर फिर से बहार आ गइ। यही इस अनूठे गाथा गीत का साराश हे।

लाहाल स्पिति में बोद्ध धर्म क साथ साथ हिन्दू दवी देवताआ का भी प्रमुख स्थान हे। 'लारा लोक गाथा म लाहोल क देवताआ का आगमन तथा ग्युग्डुल देवता (नाग देवता) के साथ आने की सुरुचिपूण लोक गाथा हे। यह गाथा गीत लाहौल के विद्वान् न ग्युग्डुल के पुजारी से 1979 म सगृहीत किया था। यहा गाथा गीत का साराश दिया जा रहा है। मूल गाथा परिशिष्ट म दी गइ हे।

तुग रिंग लिग सद मतारे। ग्युग्डुल जी कुहग दिग लिग तुलची इनतोइ। ग्यागर तिग जा भहत सदत्त अन्तिर। इन्जी तग त्रयम्पो भहत दिर कुरचे आन्तर।

ग्युग्डुल देवता के सभी देवता आए। वारा लाचे शिखर पर बैठ गए ओर अन्य नफेन नुफेन (अब लफुग–लुम्फुग) देव गुफा म प्रवेश करने लगे तो एक राक्षसी न उन्हे रोक दिया। इस पर तागजर देवी की प्रेरणा स जमुग स्थान पर राक्षसी पर आक्रमण किया आर उसे नो जात नो धार पार भगा दिया। प्यूकर का राज्य तागजर का दे दिया। मिलगतत को गुले का आर स्वय ग्युग्डुले मरगिलिग (मरग्यद) स्थान पर शासन करने लगे। तागजर दोग में बस आर सस्रीन म तिगलोगुर ठहर गए।

ग्युग्डुल नो दवताआ के बड भाई होने के कारण शेष तीन वर्ष बाद उन्हे प्रणाम करन आते है। ग्युग्डुल की मा न सभी दवताओ के क्षेत्र बाट दिए। वजीर तिगलोगुर का जरी लयग (दवता का कर) मागन चम्बा के राजा के पास भेजा। वहा उसने अनेक चमत्कार दिखाए जिसस प्रभावित होकर राजा न कर देना स्वीकार किया ओर ग्युग्डुल का बडा आर शक्तिशाली देवता मान लिया। यही इस गाथा गीत का साराश है। इस गाथा गीत स इस जनपद म बोद्धधम के प्रवश की भी झलक मिलती है जा मिथको आर प्रतीकों म गुथी हुई है।

देव बौइन्द्रा देव बाइन्द्रा कोटखाई के प्रसिद्ध एव लोकप्रिय देवता हे। कोटखाइ तहसील म इस देवता की स्थापना अन्य मन्दिरा मे भी हुई ह। परगना चेहड म पडारा म यह पडारिया कहलात ह कनबाग क्षत्र मे डीमालू के नाम से प्रसिद्ध ह। इनक गाथा गीत स तत्कालीन समाज एव धर्म आस्थाआ की झलक मिलती हे। दव बाइन्द्रा का यह गाथा गीत (बार) जहा भी कोई दव यज्ञ होता ह वहा पर शाम को यज्ञ के भोजन क बाद साने स पहल उनक साथ आए बजन्त्री आर स्थानीय हरिजन बडी श्रद्धा से गात ह।

मूल री मूलाइय जाणी केहरी मलाई
देव देउला नदाणिया वारा दे गाइ।
देवे गाइयो नाथीय तू ह अनर्थो री वाता
कानो गाशे खलने लागे चापडा हाथा।
माइ देओ पुरख देवा घुघली हेरा
कई खाओ नाथिया तुई ळातरो मरो।
एजी गोई खावरा नदोणा खी जाइ
देव ता नाथिये खाई दुगा माई।
लाओ बापूए देवा रे तू पूछणा टुआ
माइ सग चोपडे देवा खलणा जुआ।
देवा राजेया बाइन्द्रा घारे भी न जाऊ
मा बौहनि हागे खेलणे न जाऊ।
देव राजे बाइन्द्रे गोई भागण री गाडी
राजी राखे नारणा देवा री वाडी।
देवे राजे बोइन्द्र गोई मनो दि ठाणि
जनबासौ लैऊ पाजौ पाडु रि चाणि
देवै हेरे राजिया मानो रि जाणि
ऊबै चेई कोठै शिखरो के जाणि।
देव चाला बोइन्द्रा घाटियै टीरे
ळाड़ि गो नदोणो देवा साधु रै भेपै।

× × ×

भाण कोटी बोलगो रै गोआ बोन्यिौ आणि
धाडी देऊला बौलगौ री चादी री चाणि।

साराश गीत बहुत लम्बा है। नदोण के राजा बौइन्द्रा पर झूठा अपराध देवी की मूर्ति ओर सोने के छत्तर खो जाने क कारण लगाया गया। देव बौइन्द्रा को यह बहुत बुरा लगा। उन्हाने सन्यासी बनकर वना म तपस्या करने का पक्का इरादा वना लिया। वह घर बार छोड़कर निकल गए। बहुत दिनों तपस्या करने के वाद हिमाचल के घने जगन्ला आर पर्वतों को लाघते हुए कोटखाई क जगल कलाला पहुचे। वहा एक पवित्र स्थान पर अपने शिष्य कालू के साथ तपस्या करते रह। वहा धीरे धीरे गाव के लोग उनके पास स्थानीय क्रूर व्यक्तिया की कहानिया सुनाने लग। इनमें सबसे क्रूर घाली गाव का राठल वीर और भूईला गाव में रहने वाला मुआना था। वे किसी की नहीं सुनते थे। तपस्वी वाइन्द्रा न पहल उन्हें ऐसा न करने के लिए कहा। उन्ह धर्म विरुद्ध कार्य करने से रोका। पर वे नहीं माने। उनके अत्याचार वढते गए। इस पर

देव वाइन्द्रा न भूइला क मुआणा को खत्म कर दिया आर रोठन वीर को पकड कर बदी वनाया। कसे वह पछूछ (राहड) पहुया? यह लम्बी कहानी है।

धीर धीर देव वाइन्द्रा की ख्याति चारा ओर फैलने लगी। देवता न वनो से आकर दवरी म तपास्थली वनाया। यहा पर कोटी तथा अन्य पन्द्रह सो गाव के लोग धर्म विषयक उनकी शिक्षा ग्रहण करन लग। यहा पर उन्हान समाधि ले ली। वहा पर श्रद्धालुआ न सुन्दर पहाडी शली का मंदिर बना दिया। जहा आज तक पुजारी लोग दोना समय पूजा करत ह।

मेघराज गोलीनाग कोटखाई क दवता वाइन्द्रा की तरह राहड के पुजारली–3 क दवता गोलीनाग भी अपनी दिव्य शक्ति चमत्कार आर वपा लाने के लिए वहुत प्रसिद्ध है। इनका वर्णन भी देवता वाइन्द्रा की तरह क फरेजर की प्रसिद्ध पुस्तक **'ग्लासरी आफ हिल ट्राइव'** (1885) मे मिलता हे। उसके अनुसार पहल देव गालीनाग कोटखाई क्षेत्र म प्रसिद्ध हुए। फिर राहड़ू के पुजारली–3 मे इनका भव्य मंदिर वन गया, जहा उनकी नित्य पूजा होती हे। उनको वर्षा का देवता मेघराज भी कहा जाता हे। उसका एक उदाहरण उनके विपय म रोहडू (जिला शिमला) जनपद मे प्रसिद्ध गाथा गीत मे भी मिल जाता ह।

कहते है आज स 60 90 वप पूव तत्कालीन रामपुरबुशहर के राहड़ू क्षेत्र म भयकर सूखा पड गया। जब उस दूर करन का कोई साधन नजर नहीं आया, तब तत्कालीन राजा पद्मसिह ने बुशहर राज्य के सभी देवी देवताओं को वर्षा लाने के लिए प्रार्थना की। सभी ने असमर्थता व्यक्त की। तव समरकोट के देवता महेश्वर और जाबल के देवनारायण के सुझाव पर पुजारली के देव गाली नाग को निमंत्रित किया गया। इस गाथा गीत के मुख्य अश यहा उद्धृत किए जा रहे हैं

डालि शुके पावले हरे तृणा
काई नही करदा परजे रि घीणा।
　　चोटा मतलोगा नौवा गराहा
　　डालि शुके पावले नदी–नाआ।

× × ×

सुगरा र महशरा पूछौ जावला नरणा
इन्द्रा रि खवरा केजा देवता जाणा।
　　सुगरा रा महेश्वरा देआ चोडियो जवावा
　　इन्द्री रि खवरा जाणा देआ गालिया नागा।

काफी सोच विचार के वाद गोली नाग के श्रद्धालु भक्त न देवता की आज्ञा मान कर उन्हे रोहडू ले जाना स्वीकार किया। मार्ग मे देव रुदडा के ढोल नगाड़े भी साथ चले।

आगे-आगे हाडा ना चंवर वजीरा
पाछे पाछे हाडो गाली नागो रा शीरा।
धार फणआटा री छडी दरागा
जाणा पछूछीया एजो हूगरा वरागा।
लाग हड़ा ददुआ फरले गाडा।
डाल आओ ठाकरा भागे रो बाडा।

× × ×

लाये हेरा ददुआ शीकटी रो तारा
बाद बजारिय देखदे ढाला।
लाओ देवा गोलीया नागा रिमझिमो पाणी
म्हारा मालका पदम सिह हेरडो जाणी।
पाणी खै शकड नोआ राहड़ रा दरेऔ
लाई हरि बरखा देवा दादा मुलका भओ।

तेज वर्षा होने लगी। सभी खुशियां मनाने लगे। सभी लोगो ने गोलीनाग से राहड़ में ठहरने का आग्रह किया। परन्तु वह नहीं ठहरे। उनका वायदा था कि वह बड़े भाई देवरूदडा के पास ठहरेंगे। वहा से अपने घर पुजारली न –3 गालीनाग तीर्थ यात्रा पूरी कर घर चल पड़े।

रोहड़ दा गोआ हटिया घारा खिआए
तेथि उबी चुगडे गागा रे ढाए।

और गोली नाग द्वारा असभव को सभव बना देना ही लोक कवि के गाथा गीत की रचना करने की प्रेरणा बन गई। मानव गाथा ही दैवी चमत्कार मे लोक कवि की प्रेरणा का स्रोत बन जाते है।

देव शिरगुल गाथा गीत ऐसे लगता है हिमाचल के ऐतिहासिक महापुरुष शिरगुल की जीवन गाथा समय के धुधलके मे कहीं खो गई है। इसे खोजना इतिहासज्ञ का कार्य है। परन्तु पोराणिक रूप में उनका जीवन चरित्र चापाल (जिला शिमला) और सिरमौर जनपद में आज भी जीवित है। जिला शिमला और सिरमौर की सीमा बनाती हुई चूड़धार की चोटी लगभग 12000 फीट समुद्र तल से ऊची है। जहा वर्ष म छ महीने बर्फ रहती है। चोटी पर एक शिवलिंग की स्थापना की गई है। साथ ही एक जल स्रोत है और समीप एक पहाडी शैली का मदिर भी है। ऐतिहासिक पुरुष शिरगुल यहा पर शिव के उपासक के रूप मे पोराणिक देवता के रूप मे पूज्य समझे जाते है। उनके उपासक उनका लोक गाथा गीत आज भी बडी श्रद्धा से गाते सुने जा सकते है।

चूड़धारा रा भूमिया ऊची टीरी री टाइ
भूकड़ू तेरा बापू, दूधना तेरी माई।
उमरि ताइ शिरगुला धाना रि की वधाइ
एक घर बाइया साता री ली ववाइ।
खारिए काकिए चहती ता खादा पाणि ता पीन्दा,
चेहती खि आणाताए सातू रा पीड़ा।
केई नी आण काकिए पोण खि पाणी
तहरा तू पुरुपा इत्थिए फूटा ला पाणी।
राशा री झुनझुनि शिरगुला दि आए
माझी रोपड़ी दी फनिए लाए।
लाइ ओ राजा फेनिए पानी आपिए फाटा
चाह दिशिका भरुआ शाकरा माटा।
खाला बालगे दिति शिरगुले तेरा
छलाछल भरवि शावागा री सेरो।
हाट खेडों शिरगुला कन्दु कराडों
जान्दे गाआ बोहन्द धुंधु रवाड़ा।
धुंधु रवाड दि चित्ते लागे आए
हाट ले ओ शिरगुला चित्तिए खाए।
देवा राज शिगुलो दि राशौ रि आए
कुशा रो पौलि दो खाड़गो पलाए।
चार टुकडे चित्ती रैकाटिया पाए।
दिल्ली असा शिरगुला पाजा पाडु री ठाए
शीघडा आज शिरगुला दिल्ली एरी खाए।
रूखे शुखे टुकड हेडे शिरगुलै खाये
चालि लोगा खायौ मेरे दिल्ली स जाये।
शीघडा शिरगुला गोवा दिल्ली खै जाए
देवराजे शिरगुलै तेथि रसोइ ले पकाए।
तालन्टोर बागो दि धुनी हेडे लाये
खीरो री टोकणी बेलनी लाये।
पेरो गाशे टोकणा झोलि थी लाए
देखियो, दिल्ली रै मुगलो कोठे लागै आए।
तीनै मुगल मुगले सामने गुऊ ले आए
देवै राजे शिरगुलै दिति दुहाए।
तीनै मुगल मानि न देवौ रि दुहाए

गऊ रै गल दि सामन छुरिय लाए।
थागडे टार्न्णी देव राशौ री ताण
मुगला रै टावर लाए घाणया घाण।
खीरा री टार्न्नरि दिनि शिरगुल पार लवाए
चार टुकड मुगलौ रै काटियो पाए।
दिल्ली रै थागा दे ढिमा ढाम हाए
एखली देवै शिरगुलै लाए मुगला दाए।

देव शिरगुल की पूज्य माता का देहात उनके जन्म के तुरन्त बा॰ हो गया था। उसकी सातेली मा उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करती थी। एक दिन नव तग आकर सातली मा घटिया आटे का सतू बनाकर लाई तब शिरगुल ने चिढ़कर कहा कि हाथ धाने के लिए पानी तो लाना था। सातेली मा न ताना मारा—"आया पानी से हाथ धोने वाला। ऐसा है तो यहीं पानी पदा कर।" शिरगुल का बहुत क्रोध आया और उन्हाने जोर से भूमि पर पेर मारा। हल वाले बेल उसन खुले छाड़ दिए और स्वय जोर-जार स चीखता हुआ वहा स भाग खड़ा हुआ। सारे खत पानी म डूब गए। फिर वह कभी घर नहीं गया। चूडधार के पास ही एक दुर्ग बनान लगा। उसने अपने साथ बहुत सारे वीर एकत्र कर लिए।

फिर उसे सूचना मिली कि दिल्ली में मुगला ने तबाही मचा रखी है। शिरगुल ने अपने मित्रो के साथ दिल्ली जाने का निश्चय कर लिया। मार्ग म जगल की एक गुफा—धुधु रवाड—म रात को ठहरना पड़ा। वहा रात का एक अजगर ने उन पर आक्रमण कर दिया। शिरगुल ने अपने तेज खड्ग से उसके चार टुकडे कर दिए।

मुगला ने उसे चमडे की मशको मं कसकर जेल म डाल दिया। मुगलों की जेल से छुडान में गुग्गा पीर आर भगनिदेवी ने उनकी सहायता की। इस बात को लाक गाथा के कवि ने भी स्वीकार किया है

गुगा बागड़ा रा ताह रीतै न छाड़,
ता देऊ बाकरा आपू खाऊ खाड।
भगनी देवियें तू मेरी धर्मौ री दाई
शिरगुले सँगे तुभी सभियै पूजनि लाई।

शिरगुल वहा से अपनी शावी घोड़ी पर चढकर चूड़धार की ओर चल पड़े। मार्ग मे पता चला कि उनकी पवित्र जगह पर एक असुर ने आधिपत्य जमा लिया। उनकी तीव्र दौड के कारण उनकी घाड़ी ने चूडधार पहुँचने से पहले प्राण त्याग दिए। स्वय पैदल चलकर असुर स लड़ाई की। उसे मार दिया। स्वय वहीं शिवभक्ति में लीन हो गए।

इन गाथा गीतों से बहुत पुराने भाषा के शब्द मुहावरों एवं लोकोक्तियों की झलक मिल जाती है। वैसे तो समय और स्थान के कारण इन गाथा गीतों में प्रयुक्त होने वाली भाषा में परिवर्तन और संशोधन हो जाता है परन्तु कुछ शब्द अपनी सांस्कृतिक शक्ति के कारण फिर भी जीते हैं। कुछ शब्दों में जीने की क्षमता रहती है।

गाथा गीत परिभाषा की खोज

परम्परागत लोकसाहित्य का एक महत्त्वपूर्ण अग लोक गाथा गीत ह। लोक गाथा गीत का सामान्य अर्थ ह गीत द्वारा गायी गई लाक गाथा। फ्रक सिजविक न लोक गाथा गीत को वह सरल वर्णनात्मक गीत माना है जो लोकमात्र की सम्पत्ति हाता ह आर उसका प्रसार मौखिक रूप में होता है।[1] लोक गाथा गीत मे कथा तत्त्व आर गीतात्मकता साथ साथ चलते है और एक-दूसरे का प्रभावित करते है।

साहित्य और सगीत दाना क्षत्रों मे अब गाथा गीत शब्द के कई अर्थ ह। साहित्य मे इससे अभिप्राय छोटे छाटे सरल कथात्मक गीतों का होता है। प्रचलित अर्थ में इसक अन्तर्गत वह सब परम्परागत गय काव्य आ जाता है जिसमें भावपूर्ण आख्यान की प्रधानता हाती है। मूलत यह प्राचीन लोकप्रिय काव्य और गीत के आर बहुत बार लोकसाहित्य क अन्तर्गत माना जाता है। इसके विषय प्रेम वीरता बलिदान पुराण साहस की गाथाए आती है और सामूहिक चेतना को अभिव्यक्त करते है।

लोक गाथा गीतो मे जो अवशेष या सास्कृतिक तत्त्व दीर्घकाल तक स्मृति और श्रुति के सहारे जीवित रहते है उसका कारण लोक साहित्य में दूर तक उनकी बुनियादा का होना है। अतीत के लाकरूपों जैसे लोक गाथा गीत की पहचान के बिना उसके वर्तमान स्वरूप को समझना अत्यन्त कठिन है। रूस के प्रसिद्ध साहित्यकार गोर्की के अनुसार शब्द-कला का प्रारभ लोक वार्ता है। अपनी लोक वार्ता का सकलन करो इसका अध्ययन करो। लोक वार्ता से हमे पर्याप्त सामग्री प्राप्त होगी। अतीत को जितने अच्छे तरीके से हम समझेगे उतनी ही आसानी से गहनता और आनद से हम वर्तमान की सार्थकता को समझ सकेगे जिसका सृजन हम सब कर रहे है।[2]

लोक गाथा गीतों के सगीत पक्ष की अपनी मौखिक परम्परा दीर्घकाल से विद्य मान है। तभी कहा जाता है गाथा की रगत गाने मे है कहने म नहीं। वास्तव में सभी प्रकार गीतो की रचना का प्रारभ मानव सभ्यता एव सस्कृति के प्रथम प्रभात से हो चुका था। भारतीय परम्परा से 'गीत-काव्य' का इतिहास वेदा से ही प्रारभ होता है।

---

1 फ्रैंक सिजविक इन्डक्शन ओल्ड बैलेन्स पृ 3

2 मैक्सिम गोर्की आन लिटरेचर (1928) पृ 1936

ऋग्वद म गाथित शब्द गान वाल क अथ म प्रयुक्त हुआ ह। इस तरह सारा गाथाए तुकवदी पर सामाजिक अवसरा पर गाय जान याग्य हाती ह। उनस हम लाकगीता क तत्कालान स्वरूप का सकत मिलता ह। ब्राह्मण आर आरण्यक ग्रथा म भी अनक उल्लख उपलब्ध ह।[1] कवि नीरज क अनुसार 'गात काव्य का सवस प्राचीनतम रूप ह—कभा वह मत्र वनकर रहा कभी ऋचा वनकर कभा गान वनकर आर कभी गीत वनकर।[2]

लाक गाथा गीत विकासशील वातावरण ह। दीघकाल स चला आ रही लाक परम्परा म काइ भी गाथा गीत एक दा दिन म नहीं वनता। उसकी रचना की पृष्ठभूमि म दीर्घ आर सामूहिक प्रक्रिया कायरत रही ह। काइ भी गाथा गीत जिस रूप म आज उपलब्ध हाता ह उसकी गायन विधि उसकी धुन आर लय उसके कथानका म प्रयुक्त रुढिया आर उसे घुमाव दन का ढग आर कथा अभिप्राया म हा उसकी रचना प्रक्रिया स जुडा पिछले काल का सहज आभास हा जाता ह। जिन घटनाआ का एक युग म अधविश्वास पिछडापन या अमानुषिक समझा जाता रहा हा व ही किस अन्य समय म सम्भ्रान्त मूल्या का भाग समझी जाती ह। समाज चलता ह चलता रहेगा। चलत ढूढत आर भटकत पावा तल न जान कितनी सफलताआ-असफलताआ आशा निराशा साहस दुस्साहस सघप-उत्कप लगन आर महत्वाकाक्षा की कहानिया दवी पडी ह। सचाई तो यह है, कि जिस हवा म तत्कालीन समाज सास लेता ह। उसस निलिप्त होने की स्थिति म उसक लिए अस्तित्व का सकट आ जाता ह।

प्राचीन इतिहास निमाण म लाकगाथा गीता की भूमिका का नजरअदाज नही किया जा सकता। लोकमानस जिन,रूपा म घनीभूत हाकर अभिव्यक्ति पाता ह, उनम लोक गाथा गीता की भूमिका महत्त्वपूर्ण ह। इतिहास म जिन स्राता का प्रयोग हाता है वे सायास प्रयास की उपज होत ह। इसलिए ग्रामीण समाज की कृतिया, सफलताओ असफलताआ की सहज अतरग परिचय लाक गाथा गीता म प्राय मिल जाता ह।

लोक गाथा गीत लोकमानस स उपजत ह। लाक की मानसपुत्री होने के कारण वे बहुत लाकप्रिय अतरग आर अपरिहार्य हाती ह। उनम लाक के दुख दर्द लालसाए आकाक्षाए सपने सब कुछ अभिव्यक्त हाता रहता है। लोक गाथा गीत जन्म भले ही किसी एक प्रतिभाशाली लाकगायक क मन म लते हैं। परन्तु फिर भी वे जनसमूह के सामान्य अवचेतन की उपज हाते ह। पीढी-दर पीढी एक मुह से दूसरे तक की यात्रा के दारान ही उनका रूप बनता सवरता है। उन्ह कोई प्रतिवधित या निर्वासित नही कर सकता। लोक गाथा गीत तव भी जव इतिहास को विकृत किया जाता हे अपन में कुछ महत्त्वपूण सत्य वचा ले जाते हैं जिसे जनविराधी शक्तिया विकृत नही कर पातीं।

---

1 श्याम परमार भारतीय लोक साहित्य पृ 62

2 साप्ताहिक हिन्दुस्तान (30 अक्टूबर 1966) लेख—प्रश्नचिह्नों की भीड़ में घिरा गीत—नीरज पृ 18

कभी किसी स्त्री या पुरुष ग्राम या नगर रियासत का किसी काय साहसा युद्ध म प्रम या वीरता के क्षेत्र म असाधारण सफलता क फलस्वरूप लाक गाथा गीत द्वारा अतिशयाक्ति क सहार प्रभावात्पादक बना दिया जाता ह। प्रसिद्ध इतिहासकार लालबहादुर वमा क शब्दा म "जहागीर की प्रणय गाथा की नायिका किसी कबीले या गाव की सुकुमार अल्हड छोकरी अनारकली न किसी यात्रा म रसिक सलीम को क्षण भर के लिए मुग्ध कर लिया होगा। न केवल उस परिवार वरन् सपूर्ण जनपद के लिए आर पीढिया क साथ घटना का विस्तार होता गया हागा और प्रम की परम्परागत गाथाआ के क्रम म जुड़कर अनारकली सलीम की प्रणय गाथा प्रचलित हा गइ होगी।'[1] हिमाचल के प्रसिद्ध लाक गाथा गीत सुन्निमूखू, रानू फुलमू, चुन्नी लाल नाखू गद्दन कुजू चचलो इतिहास की तरह लोक मानस पर अंकित है।

समाज के अग्रणी व्यक्तियों के बार म प्राय असाधारण बाता या घटनाआ का प्रचार बडे ही स्वाभाविक ढग स हो जाता है। जैसे राजा जगता महीपप्रकाश वजीर रामसिंह होकूमिया मन्तराम झाका-अजबा की लाक्गाथाए आज भी बड चाव से ग्रामीण लाक वाद्या पर परम्परागत लाक गायक सुमधुर स्वरा म सुनाते है और ग्रामीण लाग बडी उत्सुकता और दिलचस्पी से इन्ह सुनते ह। मानव स्वभाव आर उसकी नसर्गिक कमजारिया का सहारा लेकर छायाए सत्य को आच्छादित करती हुइ बढ़ती रहती है आर मनुष्य जा वास्तविक जगत् मे नहीं प्राप्त कर सकता वह लोक गाथा गीत द्वारा प्राप्त कर लेता है। भारतीय धर्म गाथा गीता की श्रेष्ठता और साथकता जिन्हे शोपेन हावर ने भारतीय जीवन की सारी मान्यताआ उपलब्धिया और जीवन के ध्रुव सत्या से ओत प्रोत पाया था इसी तथ्य की पुष्टि करती ह।

हिमाचल प्रदेश के विभिन्न जनपदा म प्रचलित लोक गाथा गीता को पवाडा झड़ा बार भारथ हार आर बूढा गीत के नाम से पुकारा जाता है। नाम की विभिन्नता स्थानीय भाषा एव परम्परा के कारण आ गइ ह। परन्तु इन सभी पहाडी उप भाषा के नामो का ठीक पर्याय लोक गाथा गीत ही है। इनके गायन और लय क साथ प्राय नृत्य भी चलता ह।

हिन्दी साहित्य क इतिहास म चन्दबरदाइ का पृथ्वीराज रासो बारहवी शताब्दी ई की देन ह। यही हिन्दी साहित्य का वीर गाथा काल भी था। इस काल म और बाद म लिखित वीर रस की गाथाओं की रचना हुई जिन्हे बार' कहा जाता ह। जो भाटा मिरसिया परम्परागत लोक गायका द्वारा गाय जानवाले लोक गाथा कठस्थ थे। समय समय पर विभिन्न गायकों द्वारा गाये जाते रहने के कारण इनम नय नये शब्दा का प्रवेश हो गया और पुराने शब्द लुप्त हो गए। वास्तव म आज हमारे लिए कठिन ही नहीं असभव भी हो गया ह कि हम लाक गाथा गीता की मूल भाषा का शुद्ध रूप कहीं से प्राप्त कर सक।

---

1 लालबहादुर वमा इतिहास के बारे म (नई दिल्ली प्रकाशन सस्थान 1984) पृ 65

हिमाचल प्रदेश म इन गाथा गाता की प्रथा बहुत प्राचीनकाल म प्रचलित ह। प्राय विक्रमी सम्वत् क प्रारभ हाने वशाखी क दिन स इन वारा का सामूहिक रूप स गाये जान की लाक परम्परा रही ह। गायक भाट मिरासी आर बाजगी अपन-अपन ढग से अपने-अपन जनपद की परम्परा अनुसार गाए जान क कारण एक ही लोक गाथा गात क अनक पाठ मिलत ह। लाक गाथा गीत द्वारा अनक रसा का प्रतिपादन कर सगीतात्मक अभिव्यक्ति दत ह। इन लाक गाथाआ मे "युद्ध वीरता साहस रहस्य आर रामाच का पुट अधिक पाया जाता ह।[1]

परम्परानुसार हिमाचल क सभा लाक गाथा गीत दा दा की जाड़ी या अधिक गायक दल के समूह म गायी जाती हे। गायक दल जिन्ह लाक गाथाए कठस्थ हाती ह प्राय दा दला म बट जात ह। दोना गायक दल दो बराबर भागा म गोलाकार दायर में आमने सामन खड़ हो जात ह। हाथ म स्थानीय लाकवाद्य खजरी डुगडुगी खडताल आदि लेकर मथर गति स नाचत हुए गाते भी जाते ह। पहला गायक दल लाक गाथा गीत की पंक्ति गाता ह दूसरा दल उस दाहरा दत ह।

कइ ग्रामा म जहा गाथा गीत क नायक नायिका क वशज जीवित हात हे लाक गायका को पगड़ी पहनात ह आर अनाज या पस भी अपनी इच्छानुसार इनाम म देते है। यह लाक गायक पीढ़ी-दर पीढी लाक गाथा गायन कला का सचार करते रहत। अब समाजवादी ढाचे म सभी के लिए शिक्षा रोजगार के अन्य साधन एव आथिक दशा म सुधार क कारण परम्परागत सचार साधना क प्रति नइ पीढी में अरुचि बढ़ती जा रही है। परम्परागत लोक गायक प्राय भाट चारण तुक्कड मिरासी बाजगी रेहड काली कइ प्रकार क हाते थ। एक वह जा स्थानीय सामन्ता ठाकुरा राजा राणाओं जमींदारा जलदारों के दरबारा घरा म नियमित रूप स आत आर विशेषकर उत्सवा में युद्ध धर्म वीरता एव पारिवारिक कीर्ति के लाक गाथा गात थ। प्राय ऐसे लोग निम्न वग क हात थ। दूसर वे गायक जा पुजारी वग के हात थे व धामिक एव पाराणिक या स्थानीय देवी देवताआ के लोक गाथा गीत कठस्थ रखत थे आर विशेष उत्सवा पर गाकर सुनात थ। तीसरे घुमन्तू लाक गायक होते थ जस नाथ पथी जागी गुग्गा गाने वाल या जगम जा अपने धम के धामिक पुरुषो क गाथा गाते रहते है। चाथे व्यावसायिक लोक गायक जसे मिरासी या बाजगी लोग जा नर्तकी आर ढालकी के साथ अपने जनपद म विशेष उत्सवा म जाकर कीर्ति गाथाए गाते ह। पाचव वे लोक गायक ह जो दरबारी गायक या भाटा चारणों की नकल पर लोकगाथा गीत गाते है। अन्तिम ऐसे लोक गायक भी विशेष कर पहाडी गावा म मिल जात ह जिनकी स्मृति आर तुकबन्दी असाधारण हाती है। जो स्थानीय भाषा म गाकर आर नाचकर लोक गाथा गीत सुनात है।

---

1 राहुल साकृत्यायन हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास (षोडशभाग) प्रस्तावना पृ 74

लाक गाथा गीत का रचयिता कान ह? किसने यह कब गाया? यह काइ निश्चित रूप से नही बता सकता। इसक मूल गायक सदा हा अनाम ही रहग। परन्तु लाक गाथा गीता क गायन की परिपाटिया पीढिया स निधारित रहती ह। वातावरण आर जीवन की गति क अनुरूप इनकी रचना हाती ह। इस परम्परा का परिष्कार देना लाक गायक का वयक्तिक वशिष्ट्य हाता ह। लोक गाथा गीता म युगा युगा का स्फुरण एक साथ दखन का मिलता ह। विभिन्न सास्कृतिक युगा क अवशष या धराहर लाक गाथा गीता म सुरमित रहती ह।

हिमाचल क सभी गाथा गीता को हम निम्नलिखित ढग स विभाजित कर सकत ह

1 आकार की दृष्टि से लम्बी आर छाटी गाथाए प्रचलित ह। लम्बी गाथाए ता कइ दिन आर रात गाकर सुनाइ जाती है। इनम रमण पडण भतृहरि गुग्गामल इत्यादि की गाथाए।

लघु गाथाआ म रणसी वीर मन्ना कामना दव बाइन्द्रा गारखा बोइरीस शिरगुल परशुराम नाखू, गद्दण कुजु चचला लारा राझू फुलुमू इत्यादि एसी गाथाए ह जा 4 5 घटे लगातार गाकर समाप्त हाती ह।

2 विषय के विचार से इन लाक गाथा गीता का हम पाच भागा मे बाट सकत है जस—

(क) **धार्मिक गाथा गीत** जस शिव पावती पशुराम शिरगुल बाइन्द्रा लारा तथा अन्य स्थानीय दवी दवताआ की लाक गाथाए।

(ख) **पौराणिक एव मिथिकीय गाथाए** इनमे गुग्गामल भृर्तहरि गापीचन्द रणसीवीर रमण पडैण गेचली वरलाज कुन्ती नन्ती क नाम लिये जा सकत ह।

(ग) **वीर गाथाए** जसे राजा जगता वजीर राम सिंह होकू मिया नन्तराम कीछा ठुडुकसराऊ मही प्रकाश गढमलोणा सूरमा मन्ना धार देशू इत्यादि।

(घ) **प्रेम गाथाए**—जेसे कुजु चचलो सुनि भुखू, झिणिया मलकू, बिन्जी रुपणुनाखू, गद्दन पहाल फुलुमू राझू, गगी सुन्दर इत्यादि।

(ङ) **बलिदान गाथाए** जसे पवाड़ा झाको-अम्बा सती चेखी कुजी सिलदार चनराम माहणा रूलकुहल रानी सूही इत्यादि।

य सभी लाक गाथा गीत परस्पर व्यापन क कारण विषय वस्तु अलग हात हुए भी एक दूसरे से सम्बन्धित ह।

हिमाचल क पाय सभी लाक गाथा गीत निबद्ध और अनिबद्ध अर्थात् ताल मे गाये जाने वाले आर बिना ताल क गाए जाने वाले मिलते है। लाक गाथा गीतो में भावनाआ का वास्तविक प्रतिबिम्ब उपलब्ध होता है। यह एक प्रकार का अलिखित लोक महाकाव्य ह। इसमे शिष्ट साहित्य के महाकाव्य की चार विशेपताए सक्रियता चरित्र चित्रण पृष्ठभूमि आर कथा वस्तु पर विशेप बल रहता है।

ऊंचे ऊंचे पहाड़ों पर जब शीतकाल में बाहर बर्फ गिरी होती है। प्राय गांव के लोग लोक गायकों को बुलाकर सभी ग्रामवासियों को बुलाकर खुलवर में इकट्ठे हो जाते हैं और धार्मिक पौराणिक या वीर गाथाएं बड़े चाव से सुनते हैं। यह सिलसिला कई दिनों तक चलता है। किसी उत्सव या अन्य शुभावसर पर भी गाथा गीत गाने की परम्परा है।

ग्रामीण वृद्धों में धार्मिक पौराणिक एवं वीर गाथा गीत अधिक लोकप्रिय हैं। प्रेम और बलिदान के लोक गाथा गीत युवा वर्ग में अधिक लोकप्रिय हैं। कई बार इन गाथा गीतों के कुछ अंशों पर ही उन्हें सन्ताप मिल जाता है।

केवल पौराणिक एवं धार्मिक गाथाएं ही धार्मिक उत्सवों जैसे शिवरात्री रामनवमी कृष्णजन्माष्टमी तथा दिवाली के अवसर पर ही प्राय गाये जाते हैं। इसी तरह गूग्गा भी गुग्गा नवमी के आस पास। राजा भरथरी रमण पडण वफाती राता में ग्रामीण लोग सामूहिक मनोरंजन के रूप में दक्ष लोक गायकों से गीत और नृत्य के साथ सुनते हैं।

इन लोक गाथा गीतों से ग्रामीण जनता का मनोरंजन भी होता है रूक्ष जीवन में सरसता आ जाती है जनता की धार्मिक मनोवृत्ति की क्षुधा की तुष्टि भी होती है और ग्रामीण जनता की शिक्षा का महत्त्वपूर्ण अंग भी पूरा होता है। इन गाथाओं द्वारा एक पीढ़ी के संस्कार मूल्य आदर्श और जीवन पद्धति दूसरी पीढ़ी तक परम्परागत संचार साधनों द्वारा प्राप्त होता है।

इन अनेक लोक गाथा गीतों के नाट्यरूप प्रस्तुत करने की ओर भी प्रतिभाशाली साहित्यकारों द्वारा सफल प्रयत्न हुए हैं। इस प्रयास द्वारा इन गाथाओं के मूल उद्देश्यों एवं तत्त्वों को सुरक्षित रखने का प्रशसनीय कार्य हुआ है। परन्तु अभी तक उनके मूल गेय रूप को सुरक्षित रखने की दिशा में कुछ नहीं हुआ।

हिमाचल प्रदेश का कोई भी उत्सव त्योहार या समारोह विना गीत या नृत्य के विल्कुल फीका सा लगता है।

गाथा गीत वस्तु और सरचना

इससे पहले कि हम हिमाचल के लोक गाथा गीतों की वस्तु एव सरचना पर प्रकाश डाल यह आवश्यक हे कि हम इनक विपय वस्तु आर सरचना स्वरूप को समझने का प्रयत्न कर।

विश्व क प्रसिद्ध लोकवार्ता विद्वानों ने लोक गाथाआ का विश्लेपण करन का प्रयत्न किया हे। प्रो कीट्रिज क अनुसार लोक गाथाआ का केवल दा भागो म बाटा है। एक चारण गाथाए आर दूसरे परम्परागत लोक गाथाए।

चारण गाथाओ को गाने वाले यारुप म मध्यकालीन युग म सामन्ता क दरबारा म जाकर लाकवाद्य सरप' पर गीत गाकर और नाच कर सुनाते थे। राजस्थान में राजपूता की वीर गाथाए गाने वाल चारणो की प्रथा रही। प्रसिद्ध इतिहासकार टोड ने अनेक टूटी कडिया राजस्थानी इतिहास की इन्ही चारणो द्वारा गायी जाने वाली लोक गाथाओ द्वारा जोडी हे। ये स्वय ही इन लोक गाथाआ के रचयिता भी होते थे और स्वय ही गाते थे। इस सम्बन्ध म एक घटना का भी प्राय जिक्र किया जाता है। किला आगरा के मुख्य द्वार पर किसी ने लोहे का मजबूत भाला गाड दिया था। निकालत समय आधा टूट गया आधा गड़ा हुआ रह गया। कुछ दिनो बाद राजपूत पलटन ने अग्रज कप्तान के अधीन वहा प्रवेश किया। अग्रज कप्तान ने राजपूत सिपाहिया ओर अन्य धर्मो क सिपाहिया से उस भाले को बाहुबल से उखाडने की चुनौती दी कि जा उसे उखाडेगा उसे पुरस्कार दिया जाएगा। सभी सिपाहिया ने बारी बारी उस ऊपर खींचने का प्रयत्न किया परन्तु व्यर्थ। राजपूत सिपाहिया ने समय मागा ताकि वह राजस्थान से प्रसिद्ध चारणो को बुला सक। निश्चित दिन पर चारणा ने राणा सागा आर अन्य वीर गाथाए अपने लोक वाद्यो पर सस्वर गाना शुरू किया तब राजपूत रेजिमेट के एक पतले से सिपाही को इतना जोश चढा कि उसने उसी जोश म वह टूटा भाला पूरी शक्ति से खीचकर एक आर फक दिया। सब ओर तालिया यजी आर उस पुरस्कृत भी किया गया। यह है चारणां द्वारा गाये जान वाले लोक गाथा गीता की शक्ति।

दूसरे परम्परागत लोक कथाए वे ह जो दीर्घ समय स गायी जाती रही हैं। जिनका प्रभाव आज भी श्राता पर पहले जैसा पडता है। परम्परा से ये लोक गाथाए

माखिक रूप स प्राप्त हुइ परन्तु 19वीं एव 20वी शताब्दी म इह सगृहीत करने की दिशा म कुछ लाक बाता प्रमी द्वारा प्रयत्न किए गए। हिमाचल की ऐसी परम्परागत 5 6 लोक गाथाए पजाब की लोक गाथाओ क रूप मे आर सी टम्पल न कनल राज ने 1885 क लगभग सगृहीत का। हिमाचल की अधिकतर लोक गाथाए परम्परागत रूप म प्रचलित ह।

प्रो फ्रासिस गूमर न लोक गाथा गीतो को छ वर्गो म बाटा ह

1 प्राचीनतम गाथाए
2 कादुम्बिक गाथाए
3 अलाकिक गाथाए
4 पाराणिक गाथाए
5 सीमान्त गाथाए
6 आरण्यक गाथाए।

1 **प्राचीनतम गाथाओ** म हम वैदिक पाराणिक इत्यादि लोक गाथा गीतो का गिन सकते ह। हिमाचल प्रदश की ऐसी प्राचीनतम गाथाओ म हम बरलाज' ऐचली शिव विवाह राम तथा कृष्ण सम्बन्धी गीतों को सम्मिलित कर सकते ह।

2 **कौटुम्बिक गाथाओं** म हम हिमाचल प्रदेश की अनेक लोक गाथाओं को गिन सकते हे जसे रूहल आर कुहल वीची री बलि मोहना रूपीरानी रानी सूही जयाल वजीर इत्यादि का जिक्र आ सकता हे। ऐसी लोक गाथाओं मे नारी का शोषण मुख्य विषय रहा है।

3 **अलौकिक गाथाए** ऐसी है जिनम अलाकिक या रहस्यवादी घटनाओ की प्रधानता रहती है। मृत्युगीत भी इन्ही लोक गाथाओ के अग हैं। ऐसी गीत गाथाओ म चैखी नरजी झाकी अजबा सिलदार चेनराम राझू फुलुमू इत्यादि।

4 **पौराणिक गाथाओ** की कथा वस्तु किसी पोराणिक आख्यान लोक प्रचलित किसी किवदती पर आधारित होती है। इनमें घटनाओ का निर्वाह लोक भावनाओ क आधार पर होता है। ऐसी लोक गाथाओं मे मूल कथा म कई प्रकार के तथ्यात्मक तथा भावनात्मक परिवर्तन भी हो जाते है। इनम गुग्गा जहर पीर भर्तृहरि लारा दव, बाइन्द्रा इत्यादि लोक गाथा गीता को शामिल किया जा सकता हे। पहाडी लोकमानस पर ऐसी पाराणिक गाथाओं घटनाओं आर उनक लोकनायकों की अमिट छाप पड़ी हुई है।

5 **सीमान्त गाथाओ** म हम हिमाचल की धारदेशू, महीप्रकाश दुन्दुकमराऊ जैसी लाक गाथाओ का जिक्र कर सकते ह। इन गाथा गीतों म दो सामन्तो के राज्य सीमा विवादों का विशद वर्णन होता है। इनम किसी विशिष्ट व्यक्ति ऐतिहासिक घटना तथा उसम भाग लेने वाले पात्रो की वीरता भी वर्णित होती ह। इनमें हम हिमाचल की वीर गाथाए जैसे हारू मिया धारदेश नन्तराम गढमलाणा सिन्धु री टीकरी महीप्रकाश जैसे गाथा गीत सम्मिलित कर सकते है।

6 आरण्यक गाथाओ म प्रधान चरित्र एम वीर नायक का चरित्र चित्रण हाना ह ना प्राय नगल म डरे डालकर असाधारण वीरता क काय करता ह। जस इग्लण्ड म राविन हुड उत्तर प्रदेश म सुलताना डाकू इत्यादि। हिमाचल प्रदश का काइ भा लाक गाथा गीत इस वर्ग म नही आ पाएगा।

शष सभी वर्गीकरण हिमाचल क लाक गाथा गीता की पृष्ठभूमि क अनुसार नही ह।

1991 की जनगणना के अनुसार हिमाचल प्रदश की जनसख्या 55 लाख है। प्रदश क 95 प्रतिशत लोग यहा के 18 000 गावा आर कुछ नगर म बसन ह। इन सब लागा की एक एसी सस्कृति धम आर परम्पराए ह। प्रत्यक गाव म किसी एक दवी या दवता की पूजा अवश्य हाती है। अन्य पहाडी लागा की तरह हिमाचलवासी भी कठिन परिश्रम की थकान आर जीवन की दुखता का हसी लाक गीतो आर लाक नृत्य म खा दत ह। बच्चे बूढ नर नारी सबका इन लाक परम्पराआ स प्यार है। लगभग सार त्योहारा मेला आर लोक गीता का सम्बन्ध किसी पाराणिक कथा वीर गाथा प्रम कहानी या बलिदान स जुडता है।

हिमाचल प्रदेश क कठिन आर सीधे सादे ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण और सच्चा इतिहास जानने के लिए यहा की लोक परम्पराआ के बारे म जानकारी आवश्यक ह। किसी भी प्रदेश की सास्कृतिक परम्परा की झलक उस प्रदेश क लोक साहित्य लोक गीत लाक कथा लाक त्योहारा कहावता या गाथाआ म प्राय मिल जाती हैं।

जीवन सघर्ष म सतत आगे बढने वाल वीर पाराणिक पुरुषा देवी-दवताआ तथा प्रमी प्रमिकाआ की करुणा इन लाक गाथाआ के वर्ण्यविषय बन गए हैं। इन लोक गाथाआ को सभी गाते ह आर अपनी आर स समयानुसार इनमें कुछ जाडते या घटात रहते ह। य लोक गाथाए एक स्थान स दूसर स्थान तक आर एक पीढी से दूसरी पीढी तक श्रुति आर स्मृति के सहारे आग बढती रही। य लाक गाथाए प्राय कथात्मक हाते हुए भी गय हैं। इनमे स कई नृत्य या वाद्य के साथ गायी जाती है। इनम से कई लाक गाथाओ का अपना-अपना राग हाता है। जस बहती नदी म पत्थर के अनगढ टुकड घिस घिसकर गोल और सुन्दर आकार धारण कर लेत ह। इसी तरह लाक गाथाए जहा कहीं से गुमनाम लोक कवि क द्वारा प्रारम्भ हुई हो व लाककण्ठ स युग युग तक प्रवाहित हाकर नित्य नवीन रूप धारण करती रहती ह।

पौराणिक हिमाचल की पाराणिक लाक गाथाओ में रामायण महाभारत और श्रीमद्‌भागवत की कहानी अत्यन्त लोकप्रिय हुई है। अनेक पौराणिक लोक गाथाओ म से एक अश शिवजी के विवाह की गाथा लाक कवि के शब्दा म यहा उद्‌धृत कर रहा हू

अप्ट कुडि देवत खुमला पाई रे
भोले म्हारे इपरो खि ब्याहो रो बनाई रे

भाटा कारे ब्रह्म्या कासा कोटि जाइ रे
भान म्हारे इप री वरनी पाइ रे
भाटा माइ वारमिय वात बताइ रे
कोठि कारन सध्या गात्री काठा स्नानो रे
धारि कारे सध्या गात्री नाल स्नाना रे
भाट दिति बरमिया टोहि काह पाइ रे
भाटा गोआ वरमिया कासा कोटि जाइ रे
सातवटि राजरी पानी खे आइ रे
भाट दिति वरमिय टाइ वाट पाइ रे
छ वटी राज री टोइ लागिया डेंगिरे
सातया गिरजा खडिय राही रे
भाटा वानू बरमिया टाइ कई पाई रे
टाइ न वोलनि इपरा रा साइ रे
भाटा कोर वरमिया वापू ख जाइ रे
ब्याह रि वाता तंथि वातइ रे

साराश दवताओ की एक सभा हुइ। सवन यह निश्चय किया कि शिवजी के विवाह का वात करने ब्रह्मा पर्वतराज के पास जाएगे। बहुत दिनो की यात्रा के बाद ब्रह्मा पवनराज की राजधानी पहुच। वहा पनघट पर पानी के लिए राजा की सात बटिया आ रहा थी। इससे पहले कि व पनघट पर पहुचती ब्रह्मा ने साठी माग मे डाल दी आर स्वय एक ओर बठकर तमाशा देखन लग। राजा की छ बटिया माग की साठी की आर बिना ध्यान दिए उस पर स गुजर गयी परन्तु सातवी गिरजा वहा खडी होकर पूछने लगी—पडितजी यह लाठी मार्ग म क्या डाल दी है? पँडितजी बाले यह लाठी नही महादव स विवाह करन की स्वीकृति प्राप्त करने का सकेत ह। गिरजा न कहा—हमार पिताजी स महला म जाकर बात करें। ब्रह्मा न पर्वतराज से गिरजा का रिश्ता महादव स करन का प्रस्ताव किया परन्तु पर्वतराज पहले तयार न हुए। परन्तु आखिर गिरजा (पार्वती) की स्वीकृति मिल जान पर पर्वतराज को वात मान लेनी पडी। शिवजी अपना विचित्र बारात लकर राजधाना आए। राजा आर रानी इस विचित्र बारात का दखत रह। शिवजी क गण विभिन्न रूप रग आर वेश भूषा म आए। उन्ह देखकर पर्वतराज कहन लग—इस भस्मधारी साधु स म बेटी का विवाह नही करूगा। परन्तु दरबारियो और पार्वती के समझान-बुझान पर आखिर विवाह सम्पन्न हुआ।

इसी प्रकार की लाक गाथाए श्रीकृष्ण श्रीराम आर महाभारत क अनक पात्रा सम्बन्धी हिमाचल म प्रचलित ह।

धार्मिक लोक गाथाए वेस ता पाराणिक आर धामिक लोक गाथाओं म कोइ अन्तर नहीं परन्तु म यहा क्वल यहा वात स्पष्ट करना चाहता हू, कि धार्मिक लाक

गाथाओ म जहा केवल देवी देवताओ सिद्धो वीरो की लोक गाथाओ का ही वणन करूगा। प्रस्तुत लोक गाथा महासू म लोक कवि महासू देवता की महिमा का वणन किया है।

ब्रह्मा न जाये रे विरशुवा ब्रह्मा न जाये।
विरशूरे माउडे राजा चिडेक रानी।
ओवरे दे बाकरे राजा बाछडे दो ब्रागो।
ब्रह्मा न जायेरि बिरशुवा ब्रह्मा न जाए।
विरशुवा टणिया ऐजी का हुई?
गाआ सूई पन्द्रह राजा बाछठ दूई
ब्रह्मा न जायिरे विरशुबा ब्रह्मा न जाये।
काटिले बाकरे गाडिले लम्बी वारहविसी भाउरी भरा।
वाटारी ताबी ब्रह्मा न जायरि विरशुबा ब्रह्मा न जाय।
महासू री माड़ी
चिडिये रानी उटे लाई ढागरे उवो फूकणी वाणी।
चार महासू डेवे तोंसोर तालो
दिल्ली लाए महासुवे कोरच करे राजारे जाए
मोटे दे सुगटू भरी
ब्रह्मा ने जायेरि विरशुवा ब्रह्मा न जाय।

द्वापर युग म जब कृष्ण दुष्टा का नाश कर अन्तर्धान हो गए तो पाडवो ने बद्रीनारायण की ओर से स्वर्गारोहण को जाते हुए तास नदी को पार किया ओर वहा के प्राकृतिक सान्दर्य स प्रभावित होकर युधिष्ठिर ने विश्वकमा से हनोल म मन्दिर बनवाने के लिए कहा ओर स्वय नौ दिन तक वहा पर विश्राम किया।

रामायण आर महाभारत के युद्ध से भागे हुए जो राक्षस उत्तराखण्ड मे आकर छुप गए थे उन्हाने कृष्ण के अन्तर्धान हाने पर और पाडवो के गगोतरी व जमनोतरी की ओर जाने के लिए कुछ काल बाद यहा के निवासियो को नाना प्रकार के कष्ट दना आरम्भ किया। उनम सबसे अधिक बलवान आर दु खदायक किरमार दानू, बशी आर सगी जो मध्यरथ म तौस नदी के किनारे पर रहा करते थे।

उन दुष्ट आत्माओ ने उन सबको सताया जो उनके सामने आया। लाग प्राय रक्षा क लिए वहा से भाग निकले। एक वार एक देव वन मे तपस्या करने वाले हुण नामक ब्राह्मण के सात पुत्र तोस नदी म स्नान करने गए। माग म उनका किरमार दानू मिला। जिसने साता भाइया को खा लिया। जब वे बहुत देर तक घर नही आए तो उनकी माता किरतिका उनकी खाज में निकली और खाजती खोजती तौस नदी पर पहुची तो वहा उस किरमार मिला। ब्राह्मणी को देखकर उस पर मोहित हा गया

और उसके रोने का कारण पूछा। किरीतका ने कहा कि उसके सात पुत्र नदी पर नहाने गए थे वह अभी तक वापस नहीं लौटे। किरमार ने कहा कि मैं तुम्हारी सुन्दरता पर मोहित हूं अगर तुम मेरी इच्छा पूरी करो तो मैं तुम्हारी सहायता करूंगा। मैं वीर पुरुष हूं और रावण वंश से हूं। मैंने अपने बल से इन पर्वतों का राज्य जीता है।

परन्तु सती-बल और हाटेश्वरी को स्मरण करने से किरमार दृष्टि हीन हो गया और किरीतका वहां से घर की ओर भागी। घर आकर उसने यह वृत्तांत अपने पति हुण से कह सुनाया और कहा कि उनकी रक्षा हाटेश्वरी दुर्गा ने किरमार दानू से की। यह सुनकर हुण और किरीतका दूसरे दिन हाटकोटी दुर्गा के दर्शन के लिए चल गए।

वहां पर उन्होंने दुर्गा की फल फूल इत्यादि से पूजा की। दुर्गा ने प्रसन्न होकर उन्हें दर्शन दिए और कहा कि तुम कश्मीर के पर्वतों में जाकर महासू की उपासना करो वह प्रसन्न होकर तुम्हारा कल्याण करेंगे तुम वहां प्रसन्नता से जाओ तुम्हें मार्ग में कोई कष्ट न होगा। हाटेश्वरी के यह वचन सुनकर वह तत्काल कश्मीर की ओर चल गए। वहां पहुंचकर दोनों पति पत्नी रात दिन महासू की पूजा में लीन हो गए। उनकी इस प्रकार तपस्या करने से प्रसन्न होकर चर्तुज महासू ने उन्हें दर्शन दिए और कहा कि मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हूं। तुम्हारी इच्छा पूरी होगी।

जब महासू ने हुण को घर जाने की आज्ञा दी तो उसको एक कमंडल में फूल और दीपक भी दिया और कहा कि मुझ पर विश्वास रखो और अपने घर जाओ। भादो मास की अमावस्या को दीपक जलाकर और रात दिन जागरण कर मेरा पूजन करना। तीज का तुम्हारे घर के पीछे पीपल के वृक्ष के नीचे से एक शक्ति जल धारा के साथ प्रकट होगी। उसके शरीर से असंख्य देवता उत्पन्न होंगे। नाग पचमी को महासू और क्वालू तथा बनाड प्रकट होंगे। इसके अतिरिक्त शक्ति बल से बहुत सारे देवता प्रकट होंगे वह दुष्टों को मारकर मनुष्य की रक्षा करेंगे। उनका देवालय हनोल में होगा जिसे पांच पांडवों ने बनाया है। यह सुनकर हुण ने परिक्रमा करके प्रणाम किया और घर की ओर प्रस्थान किया। शिव वहां से अन्तर्धान हो गए।

> खुश हुए आदमी पहाडा रे सारे
> कोरे टेक खाम्भणी कुतो रे म्हार

किरमार और अन्य राक्षसों को मारकर महासू ने तोस और पब्बर नदियों की घाटी को सब देवताओं में बांट दिया और स्वयं हुण ब्राह्मण को आशीर्वाद देकर लुप्त हो गए।

दूर-दूर से लोग आकर हनोल स्थान पर भादों मास में रात्रि को उत्सव मनाते हैं।

वीरगाथा वीरगाथे भी असंख्य है। गुगे दी वार तो बिलासपुर मण्डी और

कागडा के क्षेत्र में प्रसिद्ध है। इसी तरह कागडा क्षेत्र में रामसिंह पठानिया जैसे वीरगान अत्यन्त लोकप्रिय हुए हैं

> घर सिआम दे रामसिंघ जम्मिया
> जम्मिया बड़ा अवतारी
> जिसदा नाम रख्या मार जग
> जिन रक्खी राजपूता दी लाज।

संक्षिप्त गाथा इस प्रकार है—रामसिंह एक बहादुर राजपूत था जो नूरपुर की रियासत की पुरानी शान को फिर से स्थापित करने के सपने देखा करता था। 1844 में रामसिंह ने जम्मू में कुछ सेना इकट्ठी की। इस बार उसने जसवन्त सिंह को नूरपुर का राजा तथा स्वयं को उसका मन्त्री घोषित कर दिया।

जब अंग्रेजी सरकार को रामसिंह के विद्रोह की सूचना मिली तो उसने होशियारपुर से एक सेना शाहपुर के किले को घेरा डालने के लिए भेज दी। वजीर रामसिंह और उसके सहयोगियों ने एक रात में किले को खाली करके नूरपुर से तीर जगलों में अपने मोर्चे लगा दिए। काफी घमासान लड़ाई के बाद वजीर रामसिंह की सैनिक टुकड़ी को हार का मुह देखना पड़ा। परिणामस्वरूप उसे गुजरात की ओर भागना पड़ा। फिर रामसिंह दो सैनिक टुकड़िया लेकर फिर लौटा और उसने **डल्ले दी धार** शिवालक की एक पहाड़ी पर मोर्चा लगाया। यह पहाड़ी रावी के किनारे शाहपुर के उत्तर पूर्व की ओर है। इस लड़ाई में अंग्रेज जनरल व्हीलर के अधीन लड़ने वाली गोरी फौज को नुकसान उठाना पड़ा। वजीर रामसिंह को फिर भागकर कागडा की ओर जाना पड़ा जहा उसे एक ब्राह्मण के घर शरण लेनी पड़ी। उसने अंग्रेजों का कुछ पैसा के लालच में उसके छिपने का स्थान बता दिया। रामसिंह को अंग्रेजों ने पकड़कर देश निकाले का दण्ड दिया और उसे सिंगापुर भेज दिया। इस प्रकार एक वीर पुरुष वीरगति को प्राप्त हुआ। रामसिंह पठानिया की लोक गाथा भाट गा गाकर ग्रामीण लोगों को सुनाते हैं।

इसी तरह की अन्य लोक गाथाए जैसे हाकूमिया टुण्डु-कमराऊ राजा जगता महीं प्रकाश धारदेशु इत्यादि वीरता और सामन्तशाही का सजीव इतिहास जनमानस पर अंकित करती है। इनमें वीर पुरुषों की अद्भुत साहसिकता अद्वितीय युद्ध कुशलता और दक्षता का विस्तृत चित्रण हुआ है। वीरता के कारण वीर गाथाओं के नायक समाज की श्रद्धा के पात्र बनते हैं।

प्रेम-कथात्मक गाथा लोक गाथाओं में जितनी लोकप्रियता प्रेम गाथाओं को मिली है उतनी अन्य किसी को नहीं। इनमें संयोग और वियोग दोनों का मनोहर चित्रण होता है। इनमें लोकपरम्परा और आधुनिकता व्यक्ति और समाज मान्यताओं विश्वासों और तर्क का संघर्ष पंक्ति पंक्ति में उभरता है। इनमें राजा भरथरी

सामा दालन नगी दयारी चुन्नीलाल, झाका अजया नाखु गद्दन गगा सुन्दर जाइग्मा पति स्पणु पुहाल कुजु चचला आर फुलमू राझू का प्रमगाथाए आन भी लाग भाव विभार हाकर गात आर सुनत ह। फुलमू रामू गीत गाथा का य अन्तिम पक्तिया किस हृदय पर अपना प्रभाव नही डाल सकता

दास्ता नी लाणी फुलमू कचया कन
जानी कुआरिया कन
ब्याहा करी हुन्द बत्मान सइयो
गल्ला हाई वीतीया।

लाक गाथा गीत का आधार कथा म नायक राझू एक उच्च घरान का युवक था आर फुलमू एक गरीब गडरिए की वटी। बचपन म व दाना साथ खल वडे हाकर उन दाना म प्रम बढा। जीवन भर साथ निभान के वायद हुए। परन्तु ऊचे घरान क घमड म पिता न एक दिन राझू का व्याह किसी आर लडकी स निश्चित कर दिया। फुलमू यह आघात नही सह सका। उसन मृत्यु ग्रहण की। दूसरे दिन एक आर स राझू की बारात चली आर दूसरी आर स फुलमू की अर्थी। राझू यह दृश्य दख नही सका। वह पालकी से उतरकर श्मशान का आर चला। कफन उठाकर फुलमू का चेहरा देखा। राझू स रहा न गया। उसने सहरा उतार कर जलती चिता म फक दिया आर स्वय भी जलती चिता म कूद पडा। जस चिता की लपट कह रही हो--

'गल्ला हाई वीतिया।
प्रम म कितना त्याग ह आत्मसमपण ह।

रोमाच सतीत्व या बलिदान गाथाए ग्रामीण समाज म सतीत्व या बलिदान का वडा महत्त्व है। कोइ भी असाधारण घटना समाज मे घटित हा जाए उसकी चचा दूर दूर तक काफी समय तक हाती ह। लाक कवि एसी घटनाआ को गाथा गीत का विषय बनाते हे। एसी घटनाआ का वड परिवार क लाग प्रसिद्ध स्थानीय लाक गायका को बुलाकर गाथा गीत बनाकर अमर बनान की काशिश करत ह। एस ही असख्य लाक गाथा गीता म सती नरजी सती चखी रानी सूही रुहल कुहल जसी लाक गाथाय गीत अत्यन लाकप्रिय हुए। चखी लाक गाथा गीत की ये प्रसिद्ध पक्तिया किसी श्रेष्ठ कवि की कल्पना हा सकती है

टुंजिया मार टुंनि गाइ हाटुआ री टीरा
कादू पूना माटीया पवारिया वाजीरो
टीर पाडि हाटुआ री लम्बरू घूई
कालिय राँडे बाटनिय कनीय न मूई।।

भावार्थ हाटु शिखर पर खाजत खोजने आख थक गइ पर पवारी वजार क

आने का कोई पता नही लग रहा। हाटु शिखर पर इतने काल आर घने वाद्ल छाए हुए है। यह काल ओर घन वादल झरते भी नहीं।

हिमाचल की एसी ही असख्य लाक गाथाए विश्व के किसी भी शिप्ट साहित्य क काव्य की प्रेरणा या आधार बन सकती है। हिमाचल की इन प्राचीन लोक गाथाओ म हम अपने पूवर्जो क रहन सहन लोकाचार धारणाओं भावनाआ अनुभूतिया आशा-आकाक्षाओ नैतिक्ता एव विषमताओं का झलक प्रचुर मात्रा म मिल जाती है। इनकी शुद्ध निश्छल पवित्र भावनाए हमारे मन और प्राणों को प्रेरित करती ह। आर विषमताए हमारे जीवन मे सघर्ष दूरदर्शिता आर गहनता की ओर सहसा प्रेरित करती है।

गाथा गीत स्रोत एव विकास

मनुष्य के अवचेतन म आदि काल से अब तक कुछ लाक मानसीय प्रवृत्तिया शेष ह। यह भावाभिव्यक्ति समय समय पर किसी न किसी रूप म पकट होती रहती हैं। यह उस मानव समुदाय की बात हैं जो सभ्य कहलाता ह पर इस सभ्य मानव समुदाय के अतिरिक्त भी एक ओर बृहत्तर मानव समुदाय ह जो आधुनिक सभ्यता की दाड़ से दूर ह जिसमे सास्कृतिक चेतना जाग्रत नहीं है थोथे पाडित्य प्रदर्शन की भावना नही ह। इसी समाज को लाक साहित्य के अध्येताआ ने लोक सज्ञा से अभिहित किया हैं ओर इसी लाक की अभिव्यक्ति का लोक वार्ता या लोक साहित्य कहा है।

लाक वार्ता या लोक साहित्य का यह प्रवाह प्राचीन सरिता के वेग की भाति अदम्य आर निरन्तर हे। 'लाके वदे च' श्लोक मे वद के पूर्व लोक की स्थिति स्वीकार कर श्रीमद्भागवदगीताकार न लोक विचारा की प्राचीनता का महत्त्व दिया है। लोक साहित्य की श्रृखला एव परम्परा सदेव मोखिक रही हे।

लोकाभिव्यक्ति की अनेक विधाए ह परन्तु स्थूल रूप म इसे दो भागो में विभाजित किया जा सकता है श्रव्य तथा दृश्य लोकगीत एव लोक गाथा गीत श्रव्यकाव्य के अन्तर्गत है और दृश्य मे लाक नाटक और लोक नृत्य का विधान है।

इनमें लोक गाथा गीत का एक एसा रूप है जिसम जाति और समाज की भावनाए पूर्ण रूप में प्रकट होती ह। इनम लोकादर्श का निर्वाह भी भली भांति होता है। लोक गाथा गीत म एक विशाल कथा हाती है जो लोकसगीत के माध्यम से प्रकट हाती है। विद्वानो न लोक गायाआ को निम्नलिखित नामा से अभिहित किया है

(क) गीत कथा

(ख) प्रबन्ध गीत

(ग) लोक गाथा गीत

इनम से लोक गाथा गीत शब्द ही लाकवार्ता क सदर्भ म अधिक लोकप्रिय हुआ है।

लोक गाथा गीत में लोक शब्द गाथा के रचयिता और श्रोता का सूचक ह। लोक शब्द के अर्थ मे व्यष्टि भाव समष्टि भाव मे विलीन हो जाता है। अतएव लोक

क साथ गाथा शब्द एक विशेष अभिप्राय को लेकर प्रयुक्त होता है। गाथा का अर्थ गान हो सकता है। गीत अर्थ में गाथा का प्रयोग सर्वप्रथम संसार के सबसे प्राचीन लिखित साहित्य ऋग्वेद में मिलता है। इस स्थल पर अर्थ पद्य, पद्य या गान है। गाथा ऋग्वेद से पूर्व भी लोक में विद्यमान था और उसी से प्रेरणा लेकर अर्थात् लोक से प्रेरणा लेकर ऋग्वेद ने अपना वाणी को सजाया है। मैत्रायणी सूत्र में भी गाथा शब्द गान अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। इस प्रकार यह सिद्ध है कि पद्यबद्ध कथा के लिए गाथा शब्द का प्रयोग अत्यन्त प्राचीन है। गाथा शब्द की प्राचीनता पर विचार करने से यह सिद्ध होता है कि गाथा का ना अर्थ ऋग्वेद से लेकर शतपथ, ऐतरेय आदि ब्राह्मणों में हुआ है और रामायण महाभारत आदि में रहा है इसी आगे चलकर जातक कथाओं में भी सुरक्षित है। पाली भाषा में गाथा जातक कथा का प्रमुख अंग है। यह गद्य कथा नहीं प्रत्युत कथा गर्भित पद्य है जो जातक कथा का प्रधान अंग बनता है।

आधुनिक हिन्दी प्रयोग में लोक गाथा परम्परागत गाथा शब्द से भिन्न अर्थ में भिन्न है वह कथा की प्रबन्धात्मकता क्योंकि वैदिक काल से लेकर आरण्यक उपनिषद् ब्राह्मण पुराण प्राकृत रचनाओं गाथा सप्तशती आदि में जहां-जहां गाथा शब्द प्रयुक्त हुआ वहां इस गेयता और संक्षिप्त कथानक का ही द्योतक समझा गया है। आधुनिक गाथा की भांति प्रबन्धात्मकता की प्रवृत्ति नहीं है वहां। अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि आधुनिक गाथा शब्द में विशालता गेयता तथा कलात्मकता इन तीन तत्त्वों की त्रिवेणी आवश्यक है। इस गाथा में लोक विशेष लगने से ऐसी गाथा का भान होता है जिसमें लोकमानसीय तत्त्व हो। अतः लोक गाथा शब्द लोकसाहित्य की इस आख्यानमूलक गयविधा का पूर्ण प्रतिनिधित्व करता है। और इसी कारण हम लोकप्रबन्ध के अन्य नामों से सहमत न होकर लोक गाथा नाम ही उचित मानते हैं।

लोक गाथा के लिए कुछ बोलियों में अन्य नाम भी मिलते हैं। जैसे राजस्थानी गुजराती मराठी ब्रज तथा बिहारी में पवाड़ा शब्द प्रचलित है। हिमाचल प्रदेश में लोक गाथा के लिए वार झेडे भारत पवाडा या हार शब्द प्रयुक्त किया जाता है। जैसे सनि चखी री वार एवली मस्त री हार प्रसिद्ध हैं पर रामायण महाभारत भर्तृहरि देवकन्या आदि के साथ हार या वार प्रयुक्त नहीं होता। इसका अर्थ यह हुआ कि हार या वार शब्द का प्रयोग विशिष्ट गेय कथानकों के साथ ही होता है। सम्भवतः वीर कथात्मक गय आख्यानों के साथ ही। किन्तु लोक गाथा के अन्तर्गत सभी प्रकार के गेय दीर्घ आख्यानों की आत्मा पूर्ण सुरक्षित है।

लोक गाथाओं की उत्पत्ति के संबंध में विभिन्न विद्वानों ने अनेक मत प्रकट किए हैं। वास्तव में इन सिद्धांतों को लोक गाथा की रचना प्रक्रिया के सिद्धान्त कहना चाहिए। कुछ विद्वान लोक गाथा का रचयिता समुदाय को मानते हैं और कुछ व्यक्ति को। पो ग्रिम तथा स्टेथले ऐसे विद्वान हैं जो एक से अधिक व्यक्तियों को लोक गाथा का रचयिता मानने के पक्ष में हैं। प्रो श्लेगल बिशप पर्सी तथा चाइल्ड एसे विद्वान

ट ना एक हा व्यक्ति का लाक गाथा का रचयिता मानत ह। हिन्दी म डॉ कृष्णदेव उपाध्याय समन्वयवादी का मानत ह।

काव्य या गान रचना प्रतिभा मनुष्य क सभा व्यक्तियो म नहा हाता। अत किसी बात का अनुभव करत हुए भा सब स प्रकट करन म अक्षम हाता ह।

लाक गाथा म एक कथानक का प्रवाह सभा लाक साहित्य अध्यताओ न स्वाकार किया ह। यह कथानक सूत्र तभा शृखलित रह सकता ह जब कुछ चुन हुए प्रतिभाशाली व्यक्ति लाक गाथा क रचयिता हा। अनक व्यक्ति यदि लाक गाथा क रचयिता हुए ता कथानक म एकसूत्रता का निवाह नही हा सकगा।

एक या कुछ व्यक्तियो द्वारा रचा गइ लाक गाथा का सप्रसारण मौखिक रूप स हाता ह। अत लाक गाथा क मूल रूप म परिवतन हाना चाहिए। एक गाथा युगा तक चलता रहती ह। अत प्रत्यक गायक अपने समय क अनुसार नवीन विचार उसम मिला दता ह। फलत गाथा का रूप बदल जाता ह आर मूल रचयिता भी तिराहित हा जाता ह। मूल रचयिता अज्ञातकाल म गाथा का रचना कर पाछ छूट गया आर लाक गाथा लाक रुचि क अनुसार नूतन नूतन गायका क याग स अपना कलवर पुष्ट करती हुइ प्रवाहित हाती रहता ह।

पाश्चात्य दशा म लाक गाथा पर पर्याप्त काय हुआ ह। प्रा किटरिज न इस गीत माना ह। जिसम काइ कथा कहा जाता ह। किटरिज ने इस गीतात्मक आख्यान कहा ह। श्री जाराल्ड भी बैलड म कथा आर गयता का महत्त्व दत ह। श्री साहागाट इसम कथा आर गीत तत्त्व क साथ माखिक परम्परा हाना अनिवाय बतलात ह।

भारतीय विद्वाना म मशहूर इतिहासकार जदुनाथ सरकार न लाक गाथा म (क) द्रुतगति (ख) शब्द विन्यास की सादगी (ग) विश्वव्यापक ममस्पर्शी प्राकृतिक आर आत्मि मनाराग (घ) स्थूल किन्तु प्रभावात्मक चरित्र चित्रण आर (ड) साहित्यिक कृत्रिमताओ का न्यूनतम उपयोग या सवथा अभाव हाना आवश्यक माना ह। लाकसाहित्य के ममज्ञ विद्वान डॉ सत्यन्द्र तथा डॉ कृष्णदव उपाध्याय भी कथात्मकता आर गयता का लाक गाथा म आवश्यक तत्त्व मानत ह।

उपयुक्त सभा परिभाषाओ म कथा आर गयता पर बल दिया गया ह। सभी विद्वाना न लाकगाथा का लाक प्रबध काव्य माना ह। इस दृष्टि स लाक गाथा म निम्नलिखित तत्त्व होन चाहिए।

1 चरित्र नायक की सपूण जीवन कथा
2 गयता
3 लाक आदर्श एव परम्परा का निरूपण
4 लाक मानसीय प्रवृत्तिया
5 स्वाभाविक प्रवाह

स्पष्टत हम समझत ह कि लाक गाथा लाक साहित्य की वह विधा ह जिसम

किसी चरित्र नायक की सपूण जीवन कथा स्वाभाविक रूप स वर्णित हो जिसम लाक मानसीय प्रवृत्तिया हा आर जनरुचि का विशेष ध्यान रखा गया हा आर साथ ही जिसम गयता हा। इस परिभाषा क उदाहरण स्वरूप रामचरित्र को लिया जा सकता ह। सर्वप्रथम यह कथा लव आर कुश द्वारा गाई गइ थी। इसम श्री राम का सपूण जीवन वर्णित है। गाथा एक कथा ही ह। सगीत का प्रयाग इसम रोचकता उत्पन्न कर देता है। अत सगीत भी इसका अग बन गया ह। लाक रामायण लाक महाभारत एव भतृहरि कथा के अश आज भी लोक प्रचलित ह आर हिमाचल प्रदेश क असख्य गावो म गाए जाते है।

परम्परागत लाक गाथा म कुछ एसे तत्त्व भी विद्यमान रहते है जा अलकृत काव्य से भिन्न ह ओर इनक कारण लोकगाथा म प्रकृति विशेषताओं का समावेश हा गया है। ये तत्त्व इस प्रकार ह

1 अनगढ़पन लोक गाथाओ मे साहित्यिक कृत्रिमताओ का अभाव हाता है। पर इसका अर्थ यह नहीं है कि लोक गाथाओ म सौन्दय नही है। उसमे अनगढता का नैसर्गिक सान्दय पूर्ण उदात्त रूप मे होता है। यही कारण है कि लोक गाथाओ में भावा का स्वच्छन्द प्रवाह होता है। श्री राबर्ट ग्रेव्स ने कहा है कि लोक गाथाए तकनीकी रूप स समृद्ध नही हातीं। एक उदाहरण देकर हम अपनी बात स्पष्ट करेगे। हिमाचली लाकगाथा भर्तृहरि की ये पक्तिया प्रस्तुत हैं

झोली ओ तो फावडी सगी मर साथी औ
गुरु लाआ किन्दरी दी बातो रे आमिया'

इन पक्तियो म कोई अलकार नहीं काई कृत्रिमता नही परन्तु मानव हृदय की उस असफलता की सशक्त अभिव्यक्ति उमडी है जिसमें श्राता समाज सिर हिला हिला कर रस विभोर हो जाता है। लाक गाथाओ म अभिव्यक्ति ही प्रधान है अन्य उपादान गौण।

2 सामूहिक भावभूमि परम्परागत लोक गाथा लोक सपत्ति होती है। गाथाकार एसी ही कथा को लाक गाथा का आधार बनाता है जो लाकरुचि का समान आधार बन सके। लोक गाथा का गायन समूह क सामने होता है। अतएव गाथाकार उन्ही भावा का उन्ही अशा को गाथा म महत्त्व देता है जा सामूहिक महत्त्व के हो। एकागी भावभूमि पर आधारित लोक गाथाए प्रचार नही पा सकती। त्याग बलिदान प्रम वचन निर्वाह आदि व भावनाए ह जिन्हे समाज का प्रत्यक व्यक्ति अच्छा समझता है। अत इस प्रकार से सर्वाजनक रुचि की भावनाओ को सामूहिक भावभूमिक कहा जा सकता है। लाक गाथाओ मे अधिकतर ऐसी ही भावनाओ को प्रश्रय मिला है। जैसे बरलाज' एव एचली की लोक गाथाए।

3 मौखिक परम्परा लाक गाथाओ की मोखिक परम्परा भी उनकी एक विशेषता है। गाथा का प्रथम रचयिता स्वाभाविक रूप स प्रतिभासम्पन्न तो होता ही

था पर लिखना नहीं जानता था। इस तरह वह अपने से बाहर के सामाजिक प्रभाव से अछूता रहता था। अत वह रचयिता के मस्तिष्क म रची गई और वायु की सहायता से जन क समक्ष आई। उसके बाद भी मौखिक रूप म ही सुरक्षित रही। आज भी लोकप्रिय लोक गाथाओ क लिखित रूप प्राय नहीं मिलते। जब हम लोकसाहित्य के सौन्दर्य की ओर आकृष्ट हुए ह तब हिमाचल की इन लोक गाथाओ को भी लिपिबद्ध करने के प्रयत्न की आवश्यकता का अनुभव करने लगे ह। अभी भी अनेक गाथाए ह जो लिपिबद्ध होने को ह परन्तु विद्वानों क कथन ह कि लोकगाथाए तभी तक जीवित रहती हे जब तक उनकी मौखिक परम्परा बनी रहती है। इसी संदर्भ म डॉ कृष्णदेव ने लिखा ह

"जब किसी गाथा को लिपि के शिकजो म बाध लिया जाता ह तब उसकी वृद्धि रुक जाती ह।

इस सम्बन्ध म हमारा मत यह है कि लोक गाथा के गायक आज भी अनपढ़ ह और साधारणत ग्रामो म निवास करते हैं। गायकों से लोक गाथा को लिपिबद्ध करने पर भी यह सब अन्य अनपढ़ गायकों तक नहीं पहुचता। यदि पहुचा भी ह तो उनके लिए व्यर्थ ह। अतएव लिपिबद्ध गाथा का लाभ तो नागरिक जन ही उठाते ह। इसलिए लिपिबद्ध होने से न तो गाथा ही मरती हैं न रूपातरित ही होती ह। रामायण या पडायण हिमाचली लोकमानस की प्रसिद्ध लोक गाथाए ह। यह दो तीन रूपो म प्रकाशित हुइ है। इनमे से पहाडी लोकरामायण का प्रकाशन हिमाचल अकादमी द्वारा और सपादन इन पंक्तियो के लेखक द्वारा हुआ हैं। इस गाथा को हमने अन्य स्थानो पर भी सुना है। इस सुने गये रूप म और प्रकाशित रूप म पर्याप्त अन्तर ह। इससे यह परिणाम निकलता हे कि लिपिबद्ध होने से इसके प्रचार और प्रियता म कोई अन्तर नहीं आता।

4 सगीतात्मकता गेय होना जैसे गाथा का धर्म है। प्रत्येक गाथा लय राग और ताल म प्रस्तुत की जाती हैं। साधारण रूप म गाथा का पाठ सुनने से उसका वास्तविक आनद जान पाना असभव ह। गायक एक वाद्य यन्त्र भी अपने साथ रखता है। इस प्रकार लोक वाद्य गायक का कठ माधुर्य तथा कथा सौन्दर्य तीनो मिलाकर आनन्द की त्रिवेणी उत्पन्न कर देते ह। हिमाचली गाथा भर्तृहरि' के नाथ गायक या जोगी बीन पर जब आलाप प्रस्तुत करते ह तो निशीथ के सन्नाटे म यह स्वर जड़ चैतन्य के विवेक को पशु बना देता ह। रागो की समयानुकूलता का भी ये गायक ध्यान रखते हैं। भावानुसार लय में समय समय के अनुसार गाथा मे अन्तर भी उत्पन्न कर देते है। मुख्य रूप से ये लोक गाथाए मुक्त छन्द म रची गई हैं। इस छन्द की भूमि इतनी लचीली होती है कि गायक चाहे जिस राग मे उसे ढाल सकता ह।

5 अज्ञात रचनाकार किसी रचना का रचयिता तो अवश्य होता ही है परन्तु गाथा के लिए मान्यता है कि गाथा के रचयिता अज्ञात होते हैं। आज इतनी लोक

गाथाएं प्रचलित हैं परन्तु उनका रचयिता कौन है इसका ज्ञान होना कठिन ही नहीं असम्भव भी है। क्योंकि गाथा में कहीं उसका नाम नहीं होता। और इतिहास इस सम्बन्ध में मौन होता है। डा कृष्णदेव उपाध्याय गाथा को नामीय रचना मानते हैं और इसकी विशेषता बतलाते हुए कहते हैं

इसका रचयिता दल के मुखिया का कार्य करता है और जब गाथा की रचना समाप्त हो जाती है तब उसके लेखक होने का वह अहंकार नहीं करता। इस कथन में दो बातें आपत्तिजनक हैं। प्रथम तो यह कि गाथा का लेखक नहीं होता रचयिता होता है जो मौखिक रचना करता है द्वितीय यह कि गाथा कभी समाप्त नहीं होती।

6 संदिग्ध ऐतिहासिकता लोक गाथाएं कल्पना श्रुति इतिवृत्त एवं अनुरंजना सम्पृक्त रचना है। जो गाथाएं ऐतिहासिक पात्रों को अपनाकर चलती हैं उनमें भी केवल नायक अथवा अन्य पात्रों के नाम ही ऐतिहासिक होते हैं। घटना व स्थानों की *ऐतिहासिकता संदिग्ध ही होती है। इसका कारण है गाथा के रचयिता का अज्ञात* होना। इतिहास का ज्ञान व श्रुत परम्परा से ही प्राप्त करते हैं। अतः घटनाओं का विकृत होना स्वाभाविक है। ये तथ्य भर्तृहरि मदनप्रकाश भागचन्द इत्यादि लोक गाथाएं सुनकर सामने आ जाते हैं। लोकगाथा का कथानक लम्बा होता है जिससे इसका विषयक्षेत्र विस्तृत हो जाता है।

7 दीर्घ कथानक और अनेक रूपात्मकता लोक गाथाओं का मूल रूप चाहे कितना और कैसा भी हो कालान्तर में उनका कलेवर बहुत बड़ा हो जाता है इसका एकमात्र कारण गाथा की मौखिक परम्परा है। एक लोकगाथा अनेक रूपों में उपलब्ध होती है। अनेक रूपों में उसका व्याप्त होने से वह अनेक परिवर्तनों को अपने में समाहित कर अनेक रूप धारण करती है। कभी-कभी इस प्रक्रिया में मूल कथानक का रूप भी बदल जाता है कभी पात्रों के नाम भाषा और शैली ही बदल जाते हैं। जैसे रामायण' और भर्तृहरि लोक गाथा हिमाचल में ही अनेक रूपों और कथानकों का पुट देकर गाई जाती है।

8 प्रचलित जनभाषा का प्रयोग गाथाकार अपनी रचना को गाकर सुनाता है। अतः वह प्रचलित जनभाषा का प्रयोग करता है। अलंकृत नागर काव्य में जहां काव्य रचयिता शब्दों के परिष्कृत रूप का प्रयोग करता है और भाषा की शुद्धता का विशेष ध्यान रखता है वहां गाथाकार इस बात की चिन्ता नहीं करते। लोक गाथा *की भाषा पुरानी नहीं पड़ती बरन् चिरनूतन रहती है एवं जीवित भाषा के रूप में वह* प्रचलित जनभाषा का प्रतिनिधित्व करती है। यही बात पहाड़ी की लोक गाथाएं रामायण पांडवायण एवं भर्तृहरि के विषय में कही जा सकती है वे पुरानी होकर भी नई लगती हैं। हिमाचल की विभिन्न बोलियों में विभिन्न रूपों में गाया जाता है।

9 व्यक्तित्व की छाप का अभाव– *अभिजात्य साहित्य में रचयिता का* व्यक्तित्व मुखरित रहता है। कभी-कभी तो व्यक्तित्व की यह अभिव्यक्ति इतनी प्रबल

होता है कि रचना सुनने वाले श्रोता यह समझ लेते हैं कि रचना अमुक कवि या लेखक की है। परन्तु लोक गाथाओं में रचयिता के व्यक्तित्व का अभाव होता है। इसका मूल कारण परिवर्द्धन परिवर्तन होने से गाथा के रचयिता का व्यक्तित्व तिरोहित हो जाता है।

10 उपदेशात्मक प्रवृत्ति का अभाव यद्यपि डॉ उपाध्याय ने लोक गाथा में उपदेशात्मक प्रवृत्ति का अभाव बतलाते हुए कहा है कि जिस प्रकार संस्कृत में नीति शतक और हिन्दी में नीति के दोहे मिलते हैं इन गाथाओं में उस प्रकार के नीतिवचन उपलब्ध नहीं होते परन्तु हम समझते हैं कि गाथा से यह उपदेश अवश्य लिया जाता है। प्रत्येक साहित्यकार प्रयत्नपूर्वक उपदेशक बनने से बचना चाहता है। परन्तु लोक गाथा सर्वथा उपदेश शून्य होती है ऐसा नहीं कहा जा सकता।

हिमाचल की लोक गाथा गीतों में लोक-जीवन का चित्रण उसके गुण दोषों आदिम वासनाओं आशाओं-आकांक्षाओं कुण्ठाओं के साथ बिना किसी दुराव छिपाव के प्रस्तुत होता है। प्रसिद्ध अंग्रेज विद्वान चाइल्ड के कथनानुसार लोकगाथाओं का आधार लेकर लोक का प्रतिनिधित्व करती हैं। ये साधु सदाचार या नीति की शिक्षा न देकर गुण दोषों का विस्तृत वर्णन करती है। लोक गाथा अपनी कहानी स्वयं सुनाती है। उसमें रचनाकार की वैयक्तिक भावना बिल्कुल नहीं रहती। रचनाकार अपने दृष्टिकोण का न तो मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करता है और न उसके विपरीत ही कुछ कहता है। वह लोक गाथा में वर्णित चरित्रों का भी पक्ष नहीं लेता।[1]

इसी वजह से लोक गाथा गीतों में सभी वर्गों की मनोवृत्तियों के लोगों की संवेदनाओं का स्पर्श उपलब्ध होता है। परन्तु हिमाचल के लोक गाथा गीतों में देशभक्ति माता की आज्ञा का पालन साहस शौर्य और प्रेम के अनेक ऐसे प्रसंग मिलते हैं जिनसे हम कुछ न कुछ शिक्षा मिलती है।

11 प्रमाणिक मूलपाठ की कमी लोक गाथा गीत भाषा की तरह विकासशील हैं जैसे भाषा निरन्तर सम्पूर्ण समुदाय द्वारा व्यवहार में लाए जाने से विकसित होती रहती है। इसमें कालान्तर में लोगों द्वारा परिवर्तन परिवर्धन या संशोधन होता रहता है इसका मूल पाठ खंडित होता रहता है। डा कृष्णदेव उपाध्याय के अनुसार प्रत्येक गवैया अपनी इच्छा के अनुसार इसमें नए शब्द या नई पंक्तियाँ जोड़ता जाता है।[2] उसी समय एक ही जगह पर दो गवैयों की भाषा या पंक्तियों में अन्तर हो जाता है।

प्राय किसी भी लोक गाथा का जो भी विद्यमान रूप उपलब्ध होता है वही प्रमाणिक नहीं हो सकता। इनमें पाठ भेद की प्रवृत्ति मिलती है। भर्तृहरि, गुग्गा मल्ल जैसी लोक गाथा गीतों के भी कई पाठ उपलब्ध होते हैं। हिमाचल के विभिन्न जनपदों में इसके मूल पाठों में अन्तर है। कुछ पाठों में भर्तृहरि की रानी पिंगला पति भक्त के

---

1 चाइल्ड इंगलिश एंड स्काटिश पापुलर बैलेड्स भूमिका क्यारिज हाल्न पृ 11

2 कृष्णदेव उपाध्याय लोकसाहित्य की भूमिका इलाहाबाद लोकभारती 1957 पृ 89

रूप म मिलनी ह जिसम रानी पनि इच्छा के कारण प्राण द देती ह और कुछ म छलना रूप म प्रस्तुत की गइ। इस तरह कागडा हमीरपुर बिलासपुर क पाठा म भतृहरि की कथा का अन्त सन्यासी वन जान क साथ हा जाना है आर शिमला कुल्लू, सिरमार जनपदा क पाठा म यह कथा का आधा भाग ह। सन्यासी वनन क बाद भतृहरि की भिरमा की तलाश म अनक तान्त्रिका जादूगरा कापालिका आर जागनिया स टक्कर होनी ह आर अन्त म भिरमा स मिल जात ह। इसलिए किसी भी पाठ का प्रमाणिक कहना भूल हागी।

12 स्थानीयता की गंध प्रत्यक लाकगाथा गीन म स्थानीय रगन का प्रचुर पुट मिलना ह। धामिक एव पाराणिक आख्याना का छाड़कर अधिक लाक गाथा गीता का जन्म आचलिक या स्थानीय होता है। स्थान विशेष क लागा का रहन सहन रीति रिवाज खान पान ओर आचार व्यवहार की प्रचुर झलक इन लाक गाथा गीता म मिल जाती ह। लाक गाथा गीत जस सामा दालतू, नेगी दयारी मन्ना ऊदू, गारखा बाइरस चखी नरजी नन्तराम लारा सुन्नि भूखू, स्पणु पुहाल टर्शी कलजम गन्मलाणा सभी में स्थानीय जीवन पद्धति आर सोच विचार की बहुत झलक मिलती ह। लोक गाथाआ म घटनाए चाह कहीं की हा कहानी किसा सामन्त या वीर पुरुष की हो उसम स्थानीयता का गहरा रग आ ही जाता है।

इसक अतिरिक्त कई लाक गाथाआ म स्थानीय सामन्ता का वणन आ जाता ह जस बरलाज लाक गाथा म कोटी के राणा का वणन मिलता ह जबकि यह लोक गाथा गीत अन्य जगहा पर भी लोकप्रिय रहा। स्थानीयता की गंध न कवल घटनाओ से मिलती ह बल्कि लोक गाथा की शब्दावली गाने की शली स भी मिल जाती ह।

13 टेकपदो की पुनरावृत्ति जैसा कि हम जानन है गीन की शीर्ष पंक्ति टेक कहलाती है। गाथा गीता म इस पुनरावृत्ति का बहुत प्रचार है। प्रो गूमर के अनुसार गाथा गीता म टेक पदा की आवृत्ति तीन प्रकार की मिलती हे।

गाथा गीता म एक टेक वह हाती है जो गाथा की प्रत्येक पक्ति के बाद अन्त म गाया जाता है। जब किसी निश्चित शब्द या पद की आवृत्ति एक पक्ति की अपेक्षा एक निश्चित पदावली के अन्त म होती है तब भी टेक का प्रयोग हाता ह। कोरस या सहगान उस पूण पद्य को कहा जाता है जा लाक गाथा के प्रत्येक नय पद के बाद गाया जाता हे।

जहा एक ही पदावली की आवृत्ति होनी ह उस प्राय वृद्धिपरक आवृत्ति कहते ह। लाक गाथाए चूकि माखिक परम्परा में गतिमान रहती हे इसलिए उसम इनकी विद्यमानता आवश्यक समझी जानी ह।

गाथा गीत की पुनरावृत्ति क पद दो प्रकार के होते है। एक सार्थक हाता हे दूसरा निरथक। साथक टेक पद उसे कहत ह जिनका कुछ अर्थ हाता है जैसे फुलमू राझू लोक गाथा गीत म 'गल्ला होई वीतीआ या राजा भरथरी गाथा गीत म 'सुनो समझो राजा भरथरी पक्तियों म टेकपदा की पुनरावृत्ति हुई है।

निरथक पद वे हाते ह जिनका कुछ शाब्दिक अथ नही हाता अपितु गवय गाने की सुविधा के लिए उनका प्रयाग करत ह जसे शिमला कुल्लू एव सिरमौर जनपद की लोक गाथाए प्राय एस पदा से प्रारभ हाती ह जस मूल री मुलाइय हाल कहरि मलाइ या गगी सुन्दर गाथा गीत म फुल्ला फुल्ली रा डाले तूनीऐ हाय मामा इत्यादि। प्राय ऐसे निरथक टेकपदा या शब्दा क प्रयोग का उद्देश्य गाथा गीतों म सस्वरता उत्पन्न करता ह।

टेकपदा की पुनरावृत्ति स गीत की प्रभावात्मकता म वढोतरी हाती है। बार बार पुनरावृत्ति से गाथा गीत का केन्द्रीय भाव श्रोताओ के मन म बैठ जाता है। कई बार गवैया जब लोक गाथा की एक कडी गाता है तब समुदाय के लाग मिलकर टेकपदों की आवृत्ति करते हे।

14 अलकृत शैली का अभाव प्रसिद्ध अग्रेजी भाषा क आलोचक हडसन ने काव्य को दो रूप के आधार पर दो भागा मे बाटा हैं

(क) अलकारयुक्त काव्य

(ख) विकासशील काव्य

अलकारयुक्त वह काव्य हाता है जो किसी एक कवि की रचना होता ह। यह काव्य शिष्ट साहित्य का भाग बन जाता ह।

विकासशील काव्य वह ह जिसकी रचना किसी एक व्यक्ति या गायक द्वारा न होकर सामूहिक रूप से पूरे समाज द्वारा की जाती हैं। समय समय पर मूल पाठ म परिवर्तन और सवर्धन हाना रहता ह। लाक गाथाआ म शिष्ट साहित्य की किसी रचना प्रक्रिया का निवाह नही किया जाता ह।

रामनरेश त्रिपाठी के शब्दो म इस तथ्य को और भी स्पर्श किया जा सकता है। वे लिखते हैं "ग्रामगीत प्रकृति के उद्‌गार हें। इनमे अलङ्कार नहीं केवल रस ह छन्द नही केवल लय है लालित्य नहीं केवल माधुर्य है।[1] इनम अलकारिकता अनायास ही आती है। इस प्रकार शिष्ट साहित्य का गुण लोक साहित्य का अवगुण कसे हा सकता हे?

कुछ लोकवार्ताकारों ने धम सम्मभाव' भी गाथा गीता की विशेपता माना हे परन्तु एक सत्य लोक गाथा गीतों म अवश्य झलकता है ओर वह हे, कि गाथा गीत किसी जाति या धर्म का प्रचार नही करते बल्कि जीवन की समस्याआ को प्रभावशाली ढग से श्रोताआ के सामने रखने का प्रयास है। जीवन के सत्य मूल्य ओर आदर्श अपरोक्ष रूप से जातीय सस्कृति के साथ गाथा गीतो म अभिव्यक्ति पाते है।

---

1 रामनरेश त्रिपाठी कविता कामुदी (भाग 5) पृ 1

हिमाचल के वीर गाथा गीत

हिमाचल प्रदेश की इस भूमि ने बाणासुर घटोत्कच परशुराम देव शिरगुल कमरू नाग सामा सन हाकिमसा दुन्दु कमराऊ सामादानतू, मस्नाऊदू सूरमा मस्ना नगा दवारा वीर रामसिंह पठानिया इत्यादि जैसे असाधारण वीर पुरुष को जन्म दिया जिन्होंने अपनी वीरता साहस निर्भीकता और आत्मबलिदान से अपना नाम कोटि-कोटि ग्रामवासियों के हृदय में अंकित कर दिया और आज भी वे उनके वार में गाये जाने वाले गाथा गीतों के द्वारा जीवित हैं। निस्सन्देह वे अपने समय सामाजिक परिस्थिति एवं राजतंत्र की उपज थे परन्तु अपनी असाधारण प्रतिभा से वे औरों की अपेक्षा अपना नाम इतिहास के पन्नों पर अंकित कर गए।

हिमाचल की पुरानी लोक गाथाओं में एक गांव के दूसरे गांव के प्रति एक परगना के अन्य परगना के प्रति एक राजा के दूसरे राजा के प्रति जनता का राजा के शोषक वर्ग के विरुद्ध देशभक्त वीर का विदेशियों के विरुद्ध वैर भावना 'प्रतिकार की भावना' को प्रकट रूप देने संघर्ष में जूझने विरोधियों के विरुद्ध वीरता दिखाने में जो वीर पुरुष विजयी हुए या वीरता प्रदर्शित करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए उनकी वीरता का शब्दचित्र लोक कवियों ने अपनी अनूठी शैली में प्रदर्शित किया है।

सेयणा दुनिया हार उदाहरण के लिए सिरमौर के वीर गाथा गीत 'सयणा दुनिया की हार' को ही लीजिए। वीर सयाणा दुनिया शिलाई का रहने वाला था। शिलाई गांव वालों का सिगटोऊ गांव के साथ वैमनस्य दीर्घ समय से चला हुआ था। एक बार उन्होंने फिर एक पत्र सयाणे दुनिया के लिए भेजा जिसमें उसे वहां के मेले के लिए बुलाया गया। सयाणा दुनिया चाऊ कागड का टीका समझा जाता था। घर वालों ने गांव वालों ने उसे न जाने की सलाह दी पर वह नहीं माना। वह साहसपूर्वक चला गया। वहां पहुंच कर उसके वैरी राजू ने सीधा उससे पूछा

> बाता थी राजूऐ दुनिये खि ढाल्य लाए
> कई काटा ता फाकी ख ताइ रानू राइया भाइ
> नियां वाला बाता लाई राजूऐ फारशी पाइ
> माटी बोली डाण्डी कुढ्यानी री बालट म खाई।

दुइ हाथ वाला मनिया ए डागरे ख पाए
पहला वाला डागर दुनिय दि भराए।

मूल मलाइ हाल कहरि मुलाइ
तथा दाभि दुनिय भागिया खाइ।

हाला दि लाइ हलशी भयड दि कीला
खअलीभि काटी लहगद दुनियरि पीली।

गार दि ना वाला वागन हाला वीउली री वुटी
वहादर काटा सयाणा दुनिया गाना सानिया छुटा।

फुलि कारा वाला फुलदु डाला फुला ला दाइ
रुना रुदा सानिया गाथा शिलाइ ख आइ।

शिव ना शिआरटीए भला वाशा ला कार
सयाणा दिया सानिया दाइचार दी धार।

वीनाए ला गयणीए छिडका ला पाणी
लाशा थाइ दुनिया शिलाइया खि आणी।

हला दी लाइ हलशा माड दी लाइ आगा
शाठी धारा शिलाइया पाडा दुनिया रा शागा।

गार शिलाइया दि काला घुघा लि कुत्ती
गार छाटा शिलाइया रा दुनिया गाना वारी ख सुत्ती।

खुमली दी वाना लाइ सयाण सानिया ए लाइ
ढाका दवा जिदराणा काटी बोइचा ख जाइ।

साधु र वाम कापड लाया पागडी दा गाटा
शिलाइया रा ढाकी वसजा काठी वाईरा ख हाटा।

गाव दि ना भि कोटी वाइचा हाली चिकनी माटी
माटा भटा ढाकी ख तिनै दीता नानडिया काटी।

गार दि शिलाइया माला खुमली थोइ पाइ
खुमली दि वाता थोइ सीगटाऊ री लाई।

काटी हुन्द वाला नानडिय थारे कुटारी दि चुरी
हजा भि नहा भाजन निनकी जाअता असा तुरी।

गाथा गीत के पद्यांशो से यह स्पष्ट हो जाता है कि सियाणा वीर को दूसरे गाव वाला ने धोखे से मार दिया। बदला लेने के लिए शिलाइ गाव वाला ने अपने बाजगी को भेजा। वह साधु के वेश में शत्रुओं के गाव में घूमता रहा। एक दिन मौका देखकर धोखे से उसने नानडिया को मार दिया।

नूर पुरे रा राजा जगता यह गीत गाथा भी राजा जगता की वीरता का बखान करती है। राजा जगता कर्मचन्द का पुत्र और तारा चन्द का पुत्र था। वीरता उसकी

रग रग म समाइ थी। एक दिन राजा जगता को दिल्ली क राजा न उसकी प्रसिद्धि सुनकर दिल्ली बुला भेजा। राजा जगता दिल्ली चला

जो अन्दर पहाडा त चले राजा
जगता रण वण भजने जाव जी।
चलया राजा जगता
डरा दिलिया जो आया जी।
ओ छज्जे वठिया मुगलेरिया
पहाड़ी फोजा जो देखदिया।
इक मुगलेरी बोलदी जी—
पहाडिया राजा आया जी।
दूजी मुगलेरी बोलदी जी—
"आया नोकर म्हारा जी हा
रोस आई राजा बोलया—
"ओ जी हऊ ज सई हुगा
राजा जगता पठानिया
बीणी रीया बटगा पछाडिया जी हा।
ओजी रोसे आया पठानिया
तिसा ई घडीया हुक्मा करदा—
अपण्या सूरम्या फोजिया जो हा।
इक्को ई पासणा छज्जे देण डुआई।
ओ जी चढी घोडे जो लक्का बणदी,
नली सलामा राजे जो करदा।
ऐसा सूरमा अपणे मुलका रहे ना
ओ जी अटका दे पार पुजाणा।
"ढाई घडिया धना जो लेया
दिल्ली तेरे हवाले करदा।
ढाई घडिया दिन रहे
फौजा सहरा च गइया।
सूना चीदी कुल मुकाया
होर नहीं छुया कुछ भी।
लुटदे लुटद दिन पहर चढया
दिलिया च हाय हाय मची जी।
ओजी अन्दर दिलिया ते चलया
नुरपूरे रा जगत पठानिया।

जान्दा-जान्दा कावुल पुज्या
जाइ न कावुल डर लाये।
आ जी हुकम करदा अपणया
सूरम्या राजपूत सपाहिया जा।
इक्को ई पासणा देणा डुआइ
आ असा जा आण प्यारी भाइ।
आ जी फाजा लडदिया जारा जोर
आ जी कावली टिक्क लड़द थ
ए ता दारू ता दमूका कन
पर जगत पठाणिय स्यून र तीरा न।
ओ जी फाजा लड़दिया जारा जार
मुसलमाण दित्ते सब मुकाई।
आ जी वाई टिक्के कावला रे मार
इक भी सामणे न आया।
उंचिया टिविया फौजा रे गव्वे
जगत पठानिया तम्बू लगाय।
हाऊ इन्दर-आ जगता बाल्या
खडी कुण सकाह सामण मर।

राजा जगता अपन समय का वीर पुरुष था। उसकी बहादुरी दखकर दिल्ली के शासक घवराने लगे। इसलिए उन्हाने उसे सवस कठिन कार्य सोंपा। उसे कावुल के विरुद्ध लड़ाया। वहा भी उसकी विजय हुई। इस विजय से राजा जगता का घमड बहुत बढ गया। वह अपने आपको राजा इन्द्र ही समझने लगा। शायद राजा इन्द्र को उसका यह घमड अच्छा नही लगा। उसके वापस लोटने स पहले कावुल पर इतना हिमपात हुआ कि वह और उसकी फाज तवाह हो गए। शेप वचे तो कुछ सिपाही यह गाथा देशवासियों को सुनाने के लिए।

सूरमा मदना वीर गाथा गीत का महत्त्व 'सूरमा मदना की प्रारंभिक भूमिका से स्पष्ट हा जाता है। जसे—

पाणी गाणा समुदरो हीरा उपजो मोती
चादो गाणे सूरजौ जीणहै धारती आटी।
सीजा गाणा मरना जू रीहणा जाधा दा मारि
सीजी गाणी वोईरा जीजी साई साथिय जालि।

वीर पुरुष भले ही अपन प्राणों की आहुति दकर प्राण त्याग दते हे परन्तु अपनी

यशोगाथा की सुगंधी चारो ओर फैला देते हैं। उन्हीं गाथा पुष्पों में मन्ना उद्द का लोक गाथा गीत भी गिना जा सकता है।

मदना बान्ना चार रा छटा रि चाला
हाथा दि तलवारा कांध खि भाला।
छेरा खि अम्मा शामलि दणा शस्ता वाणहि।
वाणहि नही वेरा शामला तर दिन्दा ना ताणी
टटा खि नाआला देरा तर बास रा काला
कोनिए आ नालीए डाड नही चुकदा।
छडा खि लाउय वटा तेर नाइए भाइ
बुग पाणा अम्मा दूणी रा वधला रागा।
आपी डऊ छेरा खि हा नाव्या जवाणा
लच्छ दखा ला भिन्न राजा दवाणा।
"तू चाला साइ छडो खि मरा का हाला हाला
छेडा ख जाद साइ इशा बाता लि नारा।
निन कटिया ल इन्द ता तू राहे इन्नी
ज ना काटिया तर दसा जाइ भाइ री थाली
शुणीनी नही सादया भाइ भाउणा री बाली।
'नाव्या मरा भाइया तू ओरना आइ
आपण लाए ला गानी दा मेर माहिरे खिलाई।

सूरमा मन्ना अपने परिवार के सदस्यों को सान्त्वना देकर युद्ध के लिए रवाना हो जाता है। मार्ग में अनेक कठिनाइयां उसके सामने आती हैं। परन्तु वह शत्रु का मुकाबला करने सीमा चौकी पर पहुंच जाता है।

जाद गोआ बाहद कहलूरा री बाडा
धूरा-कहलूरा दी नजरा फेरा।
सारी सरो कहलूरो राखी ताबुए छाय
ताम्बू दखी तुरको रे चूटी मदन री करा।
ऊढ़ जाणी नेगी खे मन्न बालना लाय
तुरका साथ लडन री ना जाणदा सारा।
'तुरका नोई मन्नया आटा की आटो,
हामे लडामि सामन घाटा की घाटा।
डोये लाग छायतो सादूरी नदी
देविए मरिए सादूरीय भाणा नि कीली
हाट हाम छेडा द दवमि चाली छेली।

बान करा म्हारा उपरा झाडा दव परहाइ,
साढूरा दना खि लाइ मानता मनाइ।
मन्न लाइ ताम्बू दा नाया आगा
आगा लाइ ताम्बू नि उड़धूपा फेरी
कहर सिंह बुगल न्या ताम्बू दा घरी।
सूरमा मन्न सरदार थी खाण्डणा बाही
काटि न्ता कहर सिहा गयनी माज री बाही।
काटि दिता मन्न शात्रणा रा जे हा घासा
लाहू री लागी गगा शीरा रे साटा।
फरी रासा मदने बिजली साण्डा
काटि दित तुरका राखा तीसरा बाण्डा।
लडदे भिडदे डाए आग राउल बागा
बागा घेरा तिह पाआडा कशारा।

× × ×

मन्ना की वीरता का इस पहाडी लाक गाथा गीत म बडा सजीव चित्रण हुआ ह। उन दिना अधिक युद्ध तलवारा भाला डागरा स हात थ।

इस युद्ध म सूरमा मन्ना का विजय गाथा का वणन ह।

गढ़मलौणा **गढ़मलोणा** एक आर प्रसिद्ध एव लोकप्रिय ऐतिहासिक वीर गाथा ह जा प्राय बिलासपुर हमीरपुर जनपद म अब भी गायी जाती ह। इस वीर गाथा गीत म बिलासपुर आर हडूर (नालागढ) की सनाआ क बीच युद्ध का चित्रण ह। इसम जहा कहलूरी सना का वीरता का चित्र प्रस्तुत किया गया है वहा मिया पम्मा नड्डा का दशद्राही बनना आर अपनी नीचता का फल भुगतना जनता क लिए एक सीख का काय करता है।

गीत गाथा अनुसार कहलूर आर हडूर की सीमा पर स्वारघाट क नजदीक ही पहाड की चाटी पर राजा नालागढ ने एक किला बनवाया। किला की चमक्दमक की सूचना बिलासपुर की तत्कालीन रानी बाल्ला का भी मिल गई। वह बिलासपुर के राजा को गढमलाणा पर आक्रमण करन क लिए मजबूर करती ह।

ज्यातिषिया न सनापति के लिए कहलूर के राजा को पम्मा नड्डा का नाम सुझाया। सनापति की कमान न हडूर के एक बड भाग को तहस नहस कर डाला। हडूर की सेना न एक चाल चली। उन्हाने हडूर की रानी की ओर से कहलूर के सनापति पम्मा का एक पत्र भजा

अज्न बालक टिक्का असा रा
राजया तरिया गोदा।

नाइया राह सिगटाऊ शीस धारा द जली
वटा तरा वजारा वाऊटी शाह तुर्नी।
वारीय थाए ताए सिधीया वारीय य ताग्रे मागछा भुली
वाड जागा एजा छन्टा, माल दइ ला वाली।
ढाली राही सिघा तर टाटी री केरा।
आखी भारा आशुए सिघा देआ लालरा।
आजी भी नही वजीरा एहरी झई धाडी
हाल्र खि तेरा बनू वालग वटा दणा मरा छाडी।
धारा एथी कोटा री हालि चिकर्नी माटी
काटी पाइ गावा सिगराउन छोयड री टाटी।
चनालू लाआ छाहट रा सिया रि जाती उग डाकी
खाए सीधीया चनालटू, गजी असा तेरी फाकी।
खाड़ी धारा चान्दपुरा री हाली चिकर्नी माटी
ठाहरी बुड्चा सिधीया बाकरा जेहा काटा।

यह था मध्ययुगीन न्याय बन्ला आर वर। ऐसी सैकडा लाक गाथाए हिमाचल के ग्राम्य प्रदेश म आज भी बडे चाव आर उत्सुकता स गायी आर सुनी जाती ह।

होकूरावत स्थानीय राजशाही वजीरा एव अन्य अधिकारियो के विरुद्ध अनक वीरा न आवाज उठाई। उनम वीर हाकूरावत का नाम भी सिरमार जनपद म बडे आदर से लिया जाता है। उन दिना जा व्यक्ति कर न दे सकत थे उन्हे कठार यातनाए दी जाती थी।

1680 इ म दिल्ली पर औरगजेब राज्य करता था। सिरमोर म उस समय नाबालिग पुत्र जोगराज (भारत प्रकाश) उर्फ मेहन्दी प्रकाश शासक था। उसके नाम पर मनमान ढग से दालुमिया शासन चला रहा था।

सिरमौर के घण्डूरी गाव म मिया होकूरावत रहते थे जो बाहुबल और जनसेवा के कारण जनता की कठिनाइया को समझत थ। आसपास क परगना की जनता ने दोलू महता के कारिन्दों द्वारा किए जा रह अत्याचारा की दर्दभरी कहानी बार बार मिया जी को सुनाई। हाकूरावत उनकी बात राजा तक पहुचाने के लिए तैयार हो गया।

होकूरावत न देव मानल (शिरगुल) से अत्याचारी दोलू महता क विरुद्ध विजय प्राप्त करने का वर मागा जो उस प्राप्त हुआ।

मूलरी मलाईए होले केहरी मलाई
गाव दी थोई मानलो बोला खुमली पाई।
खुमली दी बातो थोई बोला होकू मिये लाई
पाच शो फाउजो वोलो देणी नोइजी खैसजाई।

हाकू लागी सिगट मिया नाहणि रा बाइ
हाडा आणा एकाइ नाहणि ख जाइ।
काला बाला बाल्नी राहि गयणि ख छाइ
फाउना लागा हाकू रा पाडी कडारा ख नाइ।
वाटा बाटद मिया पाछू हाला हरा,
ठाइ छूटी घण्डुरी मिया कालमा री सरा।
जाग गावा बाहन्ना मिया जामट ख जाइ
जामट री दविय लाइ मिया ए शाइ।
साचा याल दविय का मन्न दा तर
जीता आउला भारता ताख रूऊ छल।
जामट री दविय शूणा न बुणा
लाटा ढाला पाना रा यकरा न धुणा।
तादी राहि रावना तव राजपूती आइ
आपण जूत रावत देवी दी लाइ।
सजो कारि दविय माना भाउलो तर
राजा साथ भारता जीनी लाउणा मर।

स्पष्टत दालू मिया न जा सना हाकूरावत को मारन या पकड कर लाने क लिए भेजी थी उस रावत की सना ने पराजित किया। वजीर दोलूमिया सटपटान लगा। दूसरी बार उसन कूटनीति स काम लिया। रावन का निमन्त्रण भज दिया। जाते हुए हाकूमिया न जमटे की दवी का आशीवाद लेना चाहा परन्तु वह नहीं मिला। क्रोध म आकर रावत ने देवी के सामने अपना जूता फक दिया। होकूमिया घमण्ड म आकर दवी का सकेत कि नाहक न जाओ नही समझा। वह नाहन की ओर चल पडा। रास्ते म ही दालू महता का जासूस सुदामा मिल गया।

बाता वालो लाअदीए सुदामा वालो फाटा ली केइ
ताख बाला रावता महता ए थावा बवरा शा देई।
वाता वाली शुणण खि रावत किये सकन काना
झगड री छोडा याला वातडी तुव म्हारे महमानो।
जाग गाया वाहन्ना मिया शियापुरी जाइ
वाई गाशे मिया सातु हरा खाइ।
जूठे सिउठ सातु लुए वाइ उद पाई।
दुलो लगा भाहत हाकू रावतो रा डारा
दाती करीया बोला तू मोहिला रा वै फेरा
तेशा करु बै न्याव बोलो जो चाहा ला जीवटा तरा।
फाजा दी चौलो बातडी लाव फोजो रा मिया ज्वाला

वीचा क्रिया चुगाना दा फाउजी रावडा माहाला।
हाकू राव सिघटे जीशी बारादुवारी द जाई
भट राज खे मुरी पाइ जयदेवा शाइ।
बाहरि वाला फाउजा घन्नी लागी राहि थी घाटा
राज छाड़ना माहत रा एब्ब हाणो लोगा रा राजा।
आखि दी वाला महता र भल्ल पाडो ली घेरो
जाणि पाया बोला हाकर एब्ब माहत रा फेरा।
दादू दी बाला हाकू रे पडी माटड़ी शी करा
गरजी गाया होकू रावता बाणा रा जेहा शेरा।
तादी राहि हारू रावता राजपूती आई
खाडा गाजा चाकरा गाश ता घुमाई।
दुला रे चाकरा दि बुलाणी जहि लाइ बुझाइ
मा शी जाई रोई चाकरो री हाकू सीगट फेराई।
बोला ला दालू महता नासमझी री बाता
गाली दे ला काटी मारुला तरी जातो।
निहि तार चाकरे थीया घरणा लाई
दुला थोई माहत त खाड री पाई।
दानू हाले माहते रे बोढा भायो
धा तेरा हाकुआ खाम्भ दा लागा।
खाडेरी लागी गोहरी शाटी मारो चाकरा लेरो
बाहरा गरजा दुआरी दा होकू मिया दुणी दा शेरा।
हिलाइदे न हाकुआ तेरे एब्बे महला रे खुण्ड
गाशो शी आई ईटा जू लागी होकू रे मुण्ड।
धोखा करिया महते आपणा धर्मो गाला
होकू रै मुण्डे शा लगी गोवा लहू रा नाला।
शीघ न शिआपटी ए बोला फाटा ला टोवा
लाहू दइरो होकू मिया बोला शदीदो होवा।

होकूरावत मर कर भी जनपदीय जीवन म अपनी वीरता से जोश भर दता है। किस तरह स छल-कपट स दुला महता ने उस बुलाया अपनी काली करतूतो पर परदा डाला और वीर पुरुष को मार दिया। परन्तु जनमानस मे क्रूरता की नहीं वीरता की छाप सदा अमर रहती है।

रैजट मेला चोपाल जनपद म भी सनाइया और पजाइकों क खूद मशहूर ह। मला के अवसर पर ही य दो परिवार एक दूसरे की वीरता को चुनौती दत थे। ऐसा

ही नरया (चापाल) के समीप रीजट म एक मला लगभग 60 वप पहल जुडा था जिसम सनाय्या आर पजय्का के बीच जमकर लडाइ हा गइ। सनाइ की दुगा न उन्ह चतावना भा दी कि मल म मत जाना। नए युवक मान नहीं आर रक्तपात हो गया। एक व्यक्ति मारा गया 18 घायल हो गए। इसी घटना का स्थानीय लाककवि ने अपनी अनूठी शैली म प्रस्तुत किया ह—

ठाहाहरी मून ठकर खुमलि पाइ भाईया
खुमलि दी बाता जतदार लाई भाईया।
दाइया भाइया रीजट बीशू लाआ भाईया
सन तूह ठागड बीशुए आओ भाईया।
बाना री हलशी वाइद डंरु व माह रूरीघाडा भाइया
ढाढू डवुआ हरिया सुखरामा घाड़ी भाइया।
पानी वाडा हिवणा रो नावो री जागह भाईया
घीयू जाला बाटिय दीन दा न तेलो भाईया
वीशू लागा रीजट मारन रा खेला भाइया।
धारा एयि कोडले दो छाडि ओ धाव भाइया
नव्व नव्वे छोकर बीशूए आव भाइया।
काठि लाग सलाहीन्दे शाखो रे लफींगे भाईया।
जागह उतरी नावा री देवा लि कीशा भाईया
पाछू फीरसनाइया हारते दीशा भाइया।
कोनिये लाय ला फागिया नगारै दे काछू भाइया
चोढा हुन्दा खाशिया फीरदा नही पाछू भाईया।
नूपा देओ ला सनाइया रा नाचियो रै फर भाइया
एकणो मूर्ए मोईये एकणा झागणे भेर भाईया।
धारो एथा काडतै छोडना मुहाला भाईया
सूता हुन्दा पजइका जिलकि न जाला भाईया।
ठेकर झूजा कालकि रीजटे रो घाटा भाईया
केहलडि लागा नूपिया कुंभिये री खाटा भाईया।
आजि भी सनाइयो टिम्बरा रा साटा भाइया
अठारहाँ नीय लोथड अनशूऔ मांडो भाईया।

इस लोकगीत मे घटनाओ का व्यग्यपूर्ण चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

चरणु हेड़ीया वीरता का अन्य गाथा गीत शिमला जनपद का चरणु हड़ीया' रामपुर अन्य क्षेत्र सुगरी से सबंधित है। यह क्षेत्र घने जगला और जगली जानवरा से भरा पडा ह। इस क्षत्र के लाग बाघ के आतक स दुखी थ। एक दिन बाघ ने चरणु

की एक भेड और दो ममन अपना ग्राम बना लिया। चरणु को बहुत क्रोध आया और बन्ला लेने के लिए जंगल में दो साथियों और एक शिकारी कुत्ते के साथ निकल गया। बाघ और चरणु के मध्य घोर युद्ध हुआ और अन्त में चरणु ने बंदूक बाघ के मुंह में घुसेड दी और गोली चलाकर उसे मौत के घाट उतार दिया। उसकी वारता का गाथा गीत आज भी लोग बडे चाव से गाते हैं

मूल मनाइए कहरि मनाइ
बारभि हाम चरणु हंडिये रि गाइ।
इजीय चाणा माऊडीय लौटी पीओ
भूखुआ बेटा चरणुआ हन्नी रा नीआ
आशिओ गांवा पहुंचि डाकिया बारा
आणक्ल छाजरे ना पाणी रा लोटा।
सुगरी बाघी खदराला साहबा रे ताबू,
दूधा भरण कन्णा खे चरणु रा लाम्बू।
आपू गांवा बेटा चरणुआ घरा ख आए
साहब सिपाही देणा सुगरी ख सभाए।
दवरी धारा चरणु ख टलिया ला कूणा
बाहटी बराल्टीय तागा दा शुणा।
भड़ा खाइ माहल गायू रे जोडि
सज राशे चरणुआ राफ्ला शोडि।
ओरु दे मरी दस्ताना दारु री पापों
सीओ सग लडना कमाइ दो लिखा।
आगुए तागे चरणुआ भरि बन्दूका
साथी चाला मईरामा परमसुखा।
गाचीआ माल डागरा चन्दरा चीरा
काहागाशे राफला न सापिनी साका।
दवरी धारा चरणुआ देआनी धाआ
तू ता सूई सिऊनी रा खशणा रा हाआ।
लाड़िया डेवी ल भिडिया नाय री झाआ
छिम्बरु मरो कुकरा ना धरमो रो भाइ
सिआ री आश खारा मरी दाहिणी बाइ।
आयूगा घरा चरणुआ घारा ख आई
सीआ रे निगि हीआ दि गालिय चलाइ।

यह भी वारता और साहस परम्परा का एक ज्वलंत उदाहरण है।

नन्तरामरीहार दिल्ला क मुगल वादशाह शाह आलम का अधा करन आर सिरमार क न भू भाग पर लूटमार करन वाल गुलाम कादिर राहिला का घमड चूर चूर कर न वाल वार नन्तराम नगा (नातराम) का हिमाचलवासा नहा भुला सकत। उसका वारता का लाक कवि न अमर कर दिया ह। इस गाथा गान क दा पाठान्तर उपलब्ध ह जिनम मूल कहाना वहा ह परन्तु भाषा शला ताल आर लय म अन्तर आ गया ह। दूसरा पाठान्तर परिशिष्ट म दिया गया ह।

सिरमार जनपद क पवित्र स्थान कटासन म जहा गुलाम कादिर का पराजय का सामना करना पडा विजय स्मृति स्वरूप दवी दुगा का मदिर निर्मित किया गया। इस युद्ध का नायक नन्तराम नगा ता यमुना पार करत हुए धाख स मारा गया परन्तु शत्रु का सिरमार स वाहर करन का श्रय उस हा जाता ह।

दून क्षत्र म मुगल सना न लूटमार मचा रखी था। एस समय म राजा सिरमार का नन्तराम नगी जस वारपुरुष की याद आ गइ। उसन उस वुला भजा आर आदश दा कि वह पावटा क्षत्र म शान्ति स्थापित कर। नन्तराम तयार ता हो गया परन्तु यही पूछता रहा मर वाद वच्चा का क्या हागा? राजा सिरमार न उनकी दखभाल की पूरी जिम्मदारा ली आर साथ म जितनी नन्दार उस चाहिए वह ल जा सकता ह। छाटकर उस अपना घाडा आर वूट दिए। साथ म अपना पगडी पहना दी। घाड पर वठकर नन्तराम नाहन का राजा लग रहा था। जान स पहल दवा गुसायाणी क मन्दिर म जाकर विजयश्री का आर्शीवाद मागा आर विजयी हान पर भट चढान का वायदा भी किया। पावटा जाकर नन्तराम न माचा सभाल लिया। एक रात भेष वदलकर मुगला क तम्बू म घुस गया आर सनापति का शाश काटकर भागा। परन्तु जव वह तैर कर वापस आ रहा था ता किसा कारण दरिया म डूब गया। उसकी वारता का विशद वणन गाथा गीत म मिलता ह

> दूणी लाई पावट री मुगले खाइ
> वाइ उद पाइ लाई माहिशी दी गाइ।
>> तदी वाणा भूपसिहा राणीय भाई
>> मरी जाणा काताय मोलान ख जाइ।
>
> छाकरा नन्तरामा शूरा, वीरा रा शिरो
> सी नी साका मुगना री लीरा।
>> भूखा हाला नगीया राटी नाहण खाए
>> मालान शा छिटका दशाराति जाणा नाहण आए।
>
> जिन भूपसिँह ढील भी न पाइ
> घाइ दा लाइ शीघा काटा चढाइ।
>> नाहणि छिटका राआ मालात ख जाइ
>> नगाथिए नन्तराम ख राणा रमिणा शाद।

ता थीया नगीया शीघडा नाहणं खे वदाइ
तने नेगीय ढील भी ना पाइ
सीधा लागा जमन गाइ जाइ।
नाव र मर नावरिआ नाव दणि लाइ
इयो दणा छाडिए जमना पाग कराइ।
जमना शा छुटका नन्तराम राजे आग जाई
भट राज भी मुरा पाइ जयदेवा शाइ।
बालो राजा साहबा मुदा का नागी राइ
कीयो याआ राइ दा मू नोहणि बुलाई।
दूणी लोइ पाजटे रि मुगले खाई
बाई उदी पाई लोइ माइशो दे गाई।
बाते लाआ राजा साहबो नगीये शुण
नेगीणी मर नेगटू धाचा ला कुणे।
कही ख ढोली नेगीया तेरी टाटी री कैरा
नेगीणो खाओ ले नेगटू भडारा रा सरो।
ज काटी लियावेइला मुगलो रे शीरो
कालसी देऊ तोसला दी बोटी वजीरौ।
जै लियावैला नेगीआ मुगलौ रा ठाणा
खडो दऊ सीया रो सुमराडी रा लाणा।
दुणी खेली पाजट नेगीआ सूरमे री मारा
चाटे लाये टाटी रै लोहू रि धारो।
एजा आया मुगलिया नन्तरामौ रा शोटाका
भूटी गीया दूणो एजा जाया तिद रा साटा।
फोजा थोई रोहिल रि भागणी खाई
हैट मेरिया नगीया हट तेरी माई।
काटी लोई बोइरी जीआं दाचीयै सागो
बोइरी पोडा भीनरी जेहा बाकरी माझ वरागा।
शीरौ बोला मुगलौ रो हाथै गो आई
शीरौ दीतो नन्तराम झाले दो पाई।
भागियो नन्तरामा बाला भागणी खाई
पला गोया पलिये नाव घाटा दा जाई।
नाव रै नावडिया बोला वणे धर्मो रे भाइ
शीघी वोलो नावडिया मुखै नाम देवा लाई।

याता नाव नावडिया जीयौ रे भारो
नाव नीं हाम ला ऊद पसा रानै रा डारा।
देवराज चीजटा रा चोला झटका नेजा,
हाव भी असू नावड़िया चोला राजै रा भेजा।
टली गोए नन्तरामा माथै रै भागा
एकल दाखल ख बोली नाव भी न लागा।
भलीए मरिय नदीये सदा हरि ए हरि
पला दीता पलिय तिन नन्ी पाण्डी तारि।

आर इस तरह मृत्यु की गाद म एक वीर पुरुष विजय क क्षणा मे समा गया।

मानसिह की फौज इस बहुत पुरान लाक गाथा गीत म कुल्लू के वीर राजा मानसिह की अपने पड़ोसी राज्यों पर आक्रमण का उल्लख ह। राजा मानसिह की विशाल सजीली फोज किस तरह बढ़ती हुई रामपुर बुशहर की सीमा तक पहुच गइ। परन्तु राजा बुशहर ने बडी हाशियारी से कुल्लू के राजा के सामने हाथ जोडे आर उस नजराना देकर सना का मुह माडन का कहा जा उसने मान लिया और अपनी सेना का मुह कुमारसैन की ओर मोड दिया। विजय प्राप्त कर राजा वापस मुड गया।

नगरै दारुवडूव घोडे भारी जनकूणी,
ताले चोलू ला घोडे बदेरूआ तै के खाबरा शृणी।
तेरी माता राजे साहवा धारा तीरथा होणी
ताए चोलूगा घोडे बदेरुआ जुणा हाणी सो हाणी।
तीन रा डेरा पौंडा टीकरा बाई
मानसिह री फौजा आधी ओजी भी न आई
नगर दारु बडुए राए छडे नगारै
मानसिहा रै हाजरू आऐ बीजी गणी रै तारे।
तीदा रा डेरा पाड़ा दाड़ी डुआरे
चाथे ध्याडै पूजै आनी बाजारै।
आनी चारदी बाणा माझ नेगीए घोडी
थोड़ी पाई तरी छाछा ल देंणी म्हारै झीकणा घाडी।
तीदा रो डेरा पाड़ा कुरपणा गाड़ै,
दूजै ध्याड पूजी गोए रामपुरा रे बाडै।
नौदी लाहगी गहणें कापडै न भीजे
घुघतू वासहरै बाला आजो भी न धीजै।
मानसिहै री नावता बाजी ढोला बाजी नगारे
अणगिणता फौजा आइ कलगी ए झालारै।

एडी गाए थाना फुलुए छाम्र माडू र रल
छागा भाइया मूसली नइ मारु र गल।
फाट वाइ पार तगा री लागा शान्ना लाए
शाडीग शालूटकीयं परना री माए।
रामपुरा र रानआ गआ धरना घाटी
हाथा जाडिआ नाजरा दाना कुल्लू फाजा हाटी।
कमारशणा री थीला चाली कुल्लू री फाना सारी
रामपुरा वाजरा दी एकी झाणा थाली ना मारी।
कुल्लू कर रानया तू आ खमारटिआ नाआ
म्हार आआ बसाहर ल हाँडे वचना लाआ।
काडूरा डामारिये टाड माटाड
तुवकी ए चुसकू लाग तारा लागुए कार्श।
नगर्रे दास्वटुग जाडी वानी दमामा
कणा लागा घुघुतुआ म्हारे राजे रो कामा?

आर इस प्रकार कुल्लू आर बुशहर का युद्ध हाते हाते टल गया। परन्तु लाक कवि न अपने व्यग्य वाणा स भावी पीढ़िया क लिए लाक वाणी म इस घटना को सुरक्षित रखन का प्रयास किया ह।

धार देशु सारा हिमाचल प्रदेश लगभग 31 रियासतो का समूह है। ये छोट बडे शासक एक दूसर से जलत थ वर रखत थ आर लडत रहते थे। इनक अनक युद्धा की झलक स्थानीय गाथा गीता म मिल जाती ह। एस हा अनक वीर गाथा गीता म धार देशु भी प्रसिद्ध ह। यह युद्ध राजा सिरमार और राना क्याथल क बीच लडा गया था। इस युद्ध की आग भडकान का मन्थरा सा काय किया 'वलग की ब्राह्मणी न। उसन राजा सिरमार को व्यग्य से युद्ध क लिए भडकाने का काय किया। राजा सिरमार ने क्याथल पर आक्रमण कर दिया।

दशू घूरा नगारा राणा शृणा ला काटी
नाइदा दा नि राणा धान्दा नानिमदा राटी
शीरा आप गाथ वायरी हाइ वाता खाटी।
दीउटू वाली तुणग दशू बला न ऊखा
धारा नाणा दशू री हाइ पुन्या रा राता।

साथ म राना सिरमार न धमका भरा पत्र राना क्याथल को भज दिया। उस अपनी शक्ति पर अधिक घमन्ड भी हा गया था

मरी माने राणा साहिबा जाइ मिलणी आइ

बारा ल्याहइ चाकरा हासला सृइन रापाइ।
डाली आइ चइ दऊआ री दशुआ री धारा
चीज़ा आइ घइ साज्य खाचरा र भारा।
शुणा राखा नी राणया? आसा माहिया मरा नाग
फूफ़ा दऊला जुणगा जिशा काली रा गाग।

यह धमकी भरा पत्र जब राना जुनगा का सदेशवाहक काहनिया वडाशिया क हाथा प्राप्त हुआ तब राजा जुनगा साच म पड गया। तब राना जुनगा क राजगुरु हनुमानी गासाइ न राजा का साहस बढात हुए कहा

हनुमान गुसाइ ए लाआ राना झुचकी शाइ
राजसी रे धामक दा डारी जम्मानी जाइ।
एसी कहानिय तुमा विदा देआ कराइ
पाथा भरी शरिया रा गिरहा दआ बधाइ।
दाण गिणिया शरिया र फाज़ा दह चढाइ
'स्हाना भारि सातू शागटी रे गिरहा दआ बधाइ।
खाटा चाडी जमदू ठाड पाना गिन्दे खाई
ददे हामे आपी बागो दी गूधी राही नाई।
आ जाम हाम सुवटू धामा राखि पकाइ।

राजगुरु न काहनिया क पास राजा सिरमार को सदेश भिजवा दिया कि वह बारात लकर आ रह ह-खाना वगरा तयार रखना। राजा सिरमार की धमकी का पूरा उत्तर दने क लिए राजा जुनगा न पूरी तयारी प्रारम्भ कर दी। यह बात गाथा गीत की इन पक्तिया स स्पष्ट हा जाती ह

बारहा बीशा चनालो री दी बाझणा मगाइ
एतनी बीशा चनाला री दी कोटी दा बुलाइ।
सारे जाणी क्यूथला दी राण री पाडी दुहाइ
ब्याहण र श कापडे लाए छेना ख धोआइ।
आइ मन्ता राण री राढू सतलुजा दी आणो
सरी भारी आदमिय थोड भारिय बूणा।
जुनग रे बागा माँय राइ भासिया केला
आइ मदता राज री भरा कुभा रा मेला।
बाधी फौजा राज रा धारा नागणी ख लाइ
घडी बाध मरदा दिय मढनो ख पाइ।
राज जाणी साहिब निया हुक्मा लाई
नेगी मर चाकरा माहाना दणा कराइ।

ठारा शा नाली रा न्यिा मोहाला चलाइ
मुहाला छूटा रामचगा रा मुनका दिया कवाइ।
कावा क्यूथला रा हुदा सायणा जागा
राजा सूत्ता नि॰रा जुलका रा लागा।
राज बाना साहिब लाउ वालणुलाइ—
आरा थ मिलण खि हाइ गाद लडाइ।

पहल हमल म राजा सिरमार का पलडा भारी रहा आर दसर म राणा क्याथल का। दूसर हमल म क्याथल की सना न कसे सिरमारी सेना को पराजित किया इसका विशद वणन गाथा गात म दखिए

काफट री चादरा रा वाडा चाउन्ना घिरा
जादू री हार चादरा गाली चपटी फिरा।
दवी जाणी दवत सभीए गाय भागी
राजा वोला साहिवा न्यिा क लिए छाटी।
राजा जुनगे जाणी लोड वालणु लाइ—
चाणी रे वादरे रे ताल देओ खुलाइ।"
मुठीए री आनल दीती तलवा वडाइ
लाभी जाणा लालची री शिरी न्ती क्टाइ।
शोरू धाणुटी द छूटा उभ नाठे स पूणा
राजा साहवा गूठा पाय रा लरा कानिया शुणा।
टारा शा रामचगी रा माहाला गाआ चूटी
राजे री फाजो आखी शी गोइ फूटी।
शीनी जाए गाइ जामगी आग गाइ वधाए
धारा नाच देशू री क्याथली ठिडा आए।
कासी सारा रे टागट हाथो रे रऊशा र बीन
ठिडा कारि लाय नकट घोन कारि लाय लीड।
खीम जाणा महत सन्त लाआ कमाइ
आपी वटा डाड पागिए राजा दिया निभाइ।
झूमी पाइ काल कम्वला री फाजा मि दिया रलाइ
राण साहिवा री आख हटिए राना दीना वचाइ।
नाच हाय भराठिय गाय पागिए आय
नाच हाय भराठिय दीता ताव डागरा वाय।
काटि न्यिा खीमा महता गायली पागिए री वाटी
न राहा ला राजा नाहिणा रा न व रान रि ताइ।

राना सिरमार पराजित हाकर नाहन जान की स्थिति म नहीं था। उनकी गुलरा राना यार था। इसलिए उसका सामना करन की बजाय अपन क्षत्र म आकर दम लिया आर माग म राना का क्षमापत्र लिखा आर स्वय तीर्थयात्रा पर चल जान का सदश भजा।

वीर रणजीतसिह इन्हीं कडिया म स कुछ अधूर गाथा गीता स व कडिया लाक कवि ने अपनी अनूठी शली म उभारने का प्रयास किया ह। कहत ह एक बार गढवाल क एक सामन्त रणजीतसिह न बुशहर रियासत क दूरस्थ क्षेत्र डाडरास्वार पर आक्रमण कर दिया। डाडरास्वार क सामन्त की रानी का जब इस आक्रमण स बचन का कोइ उपाय न सूझा तब वह एक साधारण सी ग्रामीण महिला का भष बदलकर गढवाल सामन्त क तम्बू म चली गई। वहा जाकर उसन पहाडी शली म रणजीत का प्रणाम (सूईं) किया। रणजीत क मुह स महसा आशीवाद निकल गया। उसन उस बहन कहकर सुहागवती रहन का आशीवाद दिया। इस पर उस रानी ने अपना असली परिचय दिया आर निवदन किया कि बहन क सुहाग को न उजाडो आर हम शान्ति स रहन का वरदान मागा। बहन क नात उसे बहन की बात अच्छी लगी। पुरान लाग अपना वचन निबाहना खूब जानत थे। वह वापस चला गया।

शीलआ लडातूआ थाना डाडरा रा घाटा
खादी खोरचा पूरा ला मरा र गुम रा माटा।
दुपिधारा दवरो जाला बिन्थरी रा शीरा
का कारा राणी बजीरा तरो लाकडा बजीरा।
लाडी झिगालन कारा ल विप्पा बजीरा ढलिया री सूही
साता जगा रि लाडिय मर तू बाहिणा हुइ।
बाला ग टोडरा र पापत आ गाड र धाए
दूणी बिन्थरी रा शीरा पाडा कादा चलाए।

राजा फुम्बडुआ एक अन्य गाथा गीत म कुल्लू के राजा भगवन्तसिह जा लागा म राजा फुम्बदुआ क नाम स प्रसिद्ध थ क विवाह का वणन ह। एक बार राजा भगवन्तसिह बारात लकर नालागढ रियासत चले गए। विधि की विडम्बना बारात म वहा जाकर हजा फल गया। फलस्वरूप राजा के साथ गए हुए बारातिया म स बहुत सार मर गए। जा बाराती ठीक ठाक वापस लाट उन्हान दूसर लागा का चतावनी दी ह कि फिर कभी नालागढ न जाना

म्हार राज आ फुम्बदुआ
नाला नहीं गटा वे जाणा ला।
जाड कान व अक्ल दणा
नालागढ नहीं व जाणा ला।

नहीं पूछ दऊ दरत
नहीं पूछी न्योली राना।
बीमारी पाए नालागढ ना
शादी न गिर्णी न जाणी।
राजा म्हाराकुल्लू रा शाभला
नालाढा री राणी।
न्या रखी म्हार दरत
बीमारी नहीं कुल्लू ब जाणी।

नेगी दयारी इसी तरह एक अन्य घटना का सुन्दर चित्रण नगी दयारा गीत गाथा म उपलब्ध होता ह। प्राय राजाओ के खाली समय क खेला म जुआ पाशा भी रहता था। शायद पहाड के राजाओ न यह घातक परम्परा पाण्डुओ स लकर जीवित रखी। जुआ पाशा खेलन की चुनौती प्राय राजा लोग एक दूसर का भजन रहत थ। एक बार सिरमार के राजा ने कुल्लू के राना को एक ऐसा ही निमन्त्रण भजा। उन दिना कुल्लू क राना जयसिह थ। राजा निमन्त्रण की पृष्ठभूमि का चाल को भाप गया। उसन अपन मन्त्री नगी दयारी को बुलाया। उसस सलाह मशविरा किया। अपन स्थान पर उस अपना प्रतिनिधित्व करन के लिए नाहन भेज दिया। नाहन म नेगी दयारी का भव्य स्वागत किया जाता ह। सिरमार की महारानी नेगी दयारी को अपना धम भाइ बना लती ह। नेगी दयारी नियमानुसार नाहन की एक गली म ताथू के साथ जुआ पाशा खेलता ह। इस खेल म पहली बार नगी दयारी बाजी हार जाता ह। यदि वह दूसरी बार भी यह बाजी हार जाता तो शत क अनुसार उसका वध किया जाना था। नगी दयारी न दिल की गहराइ स कुल्लू की कुल दवी हिडिम्बा का स्मरण किया और रक्षा की प्राथना की। देवी हिडिम्बा की कृपा से नगी दयारी दूसरी बाजी जीत गया और नाहन के राजा के प्रसिद्ध खिलाडी तीथू का कुल्लू क राजा के मान की रक्षा कर विजयी क रूप म वापस लौटता ह

नाहणीय राज चिटा दीणीलया
कुल्लू बाजारा दी आइ।
हाय बाला हाय मेरे कुल्लू कर रानया
कुल्लू बाजारा दी आई।
चीटी दीणी लया वाला नाहणाय राज।
"जूए पास तू खेलना आए।
न न आगा तू जूए पास खेलदा
कुल्लू दऊ तेरा मुड जलाए।
कुल्लूए राजे चिटी लाए बाचणा
माझा मारी गाग्गआ दाना।

"हाव बाला हाव मर कुल्लू करी रागिय।
एनि का आन विपना पाटी?"

× × ×

नाँ गाभा बाहद कुल्लू बाजारा
नगा दयारिया आए।
"मूल बाना कार वाला हुम्मा।
रानया कऊ काम मू बान्नाआ?
डार भी ना टार मर कुल्लू कर राजया।
पीठी ल मू नगा दवारा।
जणा बालू मृ तणा कार तू राजया।
विपन्न नी पौदा बगा भारी।
छाआ बीताश शाआइना घाड द
पानका ना शाआ डागू सपाही।
टारह ज भजा इना कुल्लू कर कालशा
पाठी दआ गा हिडिम्बा माई।"

कुलूग रान चिठी दाणा लया
नाहणि बानारा दी ताव आइ।
हाय वाला हाय मर नाहणीय राजया
नाहणा बाजारा दि आई।
"ताबू ि न राहदी चानणा न राहदी
एहा गूहाडी बढ वाणाए।
ज ना वाणाय तू बढे भाणा
तेरी देऊ नाहणि सारी जलाए।
नाहणीय रान चिट्‌ठी लाइ बाचणी
माझा माझी आठ गआ दाडी
हाय वाला हाय मरी नाहणीय राणीय।
मूख आज विपन्न गाइ पाडी।
तावीए टाकु था राजया गाआ
शूणी गाल्न न पाए धराडी।
कारणी आपणी भुगतणी पाडदी
आपण पर पा लाइ खराडी।
डार भि न डारे मर पति पडमशरा
पीठी ल मू हादी प्यारी।
जणा मू बालू तणा कार राजया

विपता न पाडदी भाग।
तावुए न डादी ना टादी महला
ना सा सा काद बान्इ।
कुल्लू र वाजारा तऊ नगी दयारी
माग मू लऊ धारमा लाइ।
पऊ भी ना पाड वाला नगा दयारिया तारथू ब्राह्मण पा मार।
तूण भी हारे तूए पाश खलना
तेउए कारना पा पतार।
तीरथू री ब्राह्मणि लाशा करी बसना
सम्ेशा पा तीरथू लूटा।
ध्याड़ी बीता कारदा लिलरी लिलरी
बडी कादाऊदा पा मूडा।
एकि बीता बाजी मारी नगी दयारिय
घाड़ हर पालगी पा हारी।
दूजी वाला बाजी मारी नगी दयारय
हारी दीणी गोए फाजा सारी।
टारह कलशा पा देवत हार
जदी ची खेली बाजी दयारी।
चोथी बाजी लै नगी दयारिय
आई गोई मून री पा बारी।
"कादी बीत गए घाडे बोला पालगी
कोटी गई फाजा पा सारी।
कादी वाला बाला गेई मेरे कुल्लू कर कालना
कादी वाला गई हिडम्बा पा माइ।
दूजा वेरी खेले तू जुआ नेगिया।
मू भी समूरी पौ लाई।
एक बीता जुआ खलो नगी दयारिय
घाड बोला पालगी आइ।
दूजा वाला दाआ मारो नगी दयारिय
जीती हर डागू सापाही।
चीन वाला जूए ल कुल्लू रेनगिय
कौलशा दवते गाए आए।
काटी दीनी मुडकी तीर्थू ब्राह्मणे
चाथे दावे पाए।

स्पष्टत दया कृपा साहस के बल पर नेगी दयारा विजयी रहे और दुष्ट ताय ब्राह्मण को अपना सिर देना पड़ा।

हिमाचल प्रदेश में असख्य ऐसी गीत गाथाएं हैं जिनमे साहसी पत्नी स्वच्छा से पति की चिता पर जल मरी। आज के सन्दर्भ में ऐसी घटनाओं को नारी के प्रति अन्याय और अत्याचार ही कहा जाएगा। इसी प्रकार मेला ठेला मे आन हठ और किसी की मूखतापूर्ण हठ से अपने विरोधियों को छल-कपट से निर्दोष व्यक्तियों की हत्या कर दी जाती थी। कई बार ऐसे जघन्य काड मे अपने विरोधियों का सिर काट कर अपने गांव की ठौड (ग्राम काली) मे दबा दिया जाता था। उन्हें लोग खूद कहकर पुकारते थे। ये खूद अपनी वीरता और साहस के गीत रचना के लिए प्रसिद्ध स्थानीय लोक गायकों को निमन्त्रित कर इन साहसी एवं निन्दनीय गाथाओं को कंठस्थ कर विशेष उत्सवों पर गवाते थे। इसी प्रकार यह गाथाएं स्थानीय जनमनोरंजन भी करती थी और स्थानीय वीरों एवं घटनाओं को भी दोहरा कर याद दिलाती रहती थीं।

रोमाच-साहस के गाथा गीत

हिमाचल प्रदेश क प्रसिद्ध रोमाचपूर्ण कथात्मक लोक गाथा गीतो म उल्लेखनीय ह सती चखी नरनी कुर्ना माहणा झाको पजरा राना चम्बयाली कूल्ह मायना गाथा कजर ब्राह्मण माधुसिह सिलदार चतराम इत्यादि जस कथात्मक लोक गाथा गीत। इनम स अनेक गाथा गीत 200 वष पहल स भी पुराने ह।

सती चैखी 1801 ई आर 1814 ई क मध्य अनक पहाड़ा रियासतो पर गोरखा आक्रमण होत रह। एक बार गोरखा सना आक्रमण करती हुइ तत्कालीन रामपुर बुशहर रियासत की राजधानी सराहन तक पहुचन का खतरा हो गया। रामपुर बुशहर क शासक के पास कोई नियमित आर प्रशिक्षित सना नही थी। उन्हाने अपन प्रमुख मन्त्री पवारी (पिआ क समीप किन्नार म) के विष्ट को सनापति बनाकर गोरखा को रियासत स खदेडन का निणय लिया। वह अपन घर किसी काम स गय थ। वहा पत्र भजा गया। उसकी पत्नी उसे अनक तक दकर रोकन की कोशिश करती रही परन्तु वह अपन कतव्यपरायणता स नहीं हट। पति पत्नी का परस्पर-अगाध प्रम था। अपनी पत्नी को जीवित लोटन का वायदा कर वह जान के लिए तेयार हो गए।

श्री सराहनो दा कागली आइ
विष्टे पवारीय बाचन लाइ।
बाच बुच कागलि कोटा जेवा दि पाइ
इया आइ कागलि कि धावडी रि ढाइ।
चेखी बिष्टाणीयै धाय ला धोय
धावोडिया जाणा राजा री कापड दे धोये।
धाए न लाऊ ला लाऊ ला छौराण
धावडिया राज री देआ ला जाणे।
छीए नहीं लाऊ चडा बादला देवा
चिट्टा तेरा कापडा ईदा भरीया ले चवा।
डेवण जाओ धावडिया राजा री माडा
मुइया डेका डोगरे राजा री माडा।

/ हिमाचल प्रदेश के लोकप्रिय गाथा गीत

टाग रा दऊ राना ख बाकर खाड़
तना ऊगा रानी रा टाग न छाड़।
चुपा चुपा चखाय इणा नी बाना
खाड़ म्हार बाकर आपूख हाना।
दादा रा दऊ राना ख नाका रा घाड़ा
तना ऊवीं रानी रा टाड भा न पाड़ा।
चुपि चुपि टालिय स्या न वोला
चाम म्हारा नाका ग आपू ख हाला।
कादु लागा माराया थागनू सवा
साथीं तरा दाडा तिगरा दआ।
सान सात तिशरआ धम्मा दाणा
नाणा इऊ टालिया आशु ला ताणा।
थाल सवाहद चखीय परा वन्दा
काट झाऊ चखाय रान रा वान्दा।

अपन सुन्दर पत्नी चखी स विदाइ लकर विष्टा पवारिया मन्त्री राजा स आना लकर युद्ध भूमि का आर चल पड़ा। विष्टा की सना क पास वन्दूक इत्यादि कुछ नहीं था। इसलिए उन्होंने बड़ बड पत्थर आर लकडिया गिराकर गारखा सना का मुकाबला किया।

धावडि गाए गनी रै राला सवाला
एखू चूजा गिगा एखू झूजा ढाला।

परन्तु इस युद्ध की दुखद घटना यही थी कि विष्टा पवारिया इस युद्ध म मारा गया। उधर उसका पतिव्रता स्त्री चखा उसकी प्रतीक्षा कर रही ह। लाक कवि ने बड मार्मिक शब्दों म इसका वणन किया ह

टूज मोरू टूजया हाटूआ री टीरा
कदडू पूजा माटीय पवारिया वजीरा।
टीर पाडे हाटुआ री लूम्बरू धूइ
कालिय राम वाल्लाय कदीय न मूइ।

× × ×

ताग वटा धखीय लम्बकूए ऊट
ढाल न किए हाजरीआ वीगरा चूट।
पोरू शणाआ हाजरीया धावटी रे नाखी
कुण आजा सारा नीरा कुणिया माखी।
का शणाउ दाढिय धावडिरि नाखी

आर आग मार नार दिप्टा माया।
        म्हि याणा जगाण शाग रा नाग
        रन ि घगमा दिप्या राग।
रू डर चराव माग मरना
विप्ना घाट राणा राह, आर री वर्ली।
        भाइया दाना मण्णुआ सूचिया का तरा
        माड़ा मार्स्ती रा रर सकरा।

अपन प्रिय जीवन सहचर का मृत्यु का समाचार सुनकर चखा फूट फूटकर राइ। परन्तु उसने दृढ़ निश्चय कर लिया कि वह अपन पति क साथ जलगा। उसक भाइ न बहुत समझाया। अनक प्रलोभन दिए परन्तु चखा नहीं माना। वह अपन पति दिप्टा की चिता पर जीवित जल गइ।

आज स लगभग 60 वप पहल तक यत्र-तत्र एसा असाधारण घटनाए हा जाती थीं। सती हान का रिवाज नहीं था। परन्तु फिर भी दुख की तीव्रता जीवन क उद्दश्यहीन बन जान स पहल 10 20 वर्षो म एसा घटनाए कहीं न-कहीं हा जाती थीं। एसी विचित्र और असाधारण घटनाओ का लाक कवि गाथा गान म गाकर अमर कर दत ह। ग्रामीण समाज म एस रामाच स भरे लाक गीत आकषण का कारण बन जात ह।

रूल्ह-कूल्ह कुछ निरंकुश शासक किस प्रकार अपन अंधविश्वासा क लिए निर्दोषा का बलि चढा दत ह यह हिमाचल प्रदश क कागडा जनपद के प्रसिद्ध गाथा गीत रूल्ह कूल्ह स स्पष्ट हा जाता ह। यह गाथा गीत तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था पर एक चुभता व्यग्य है। नारी की स्थिति समाज म कितनी दयनीय रही ह यह इस गाथा गीत स पता लग जाता है।

उन दिना उस क्षेत्र का शासक जसपत था। उसक चढी गाव म एक छोटी सी कूल्ह निकालन की समस्या आन खड़ी हुइ। इसी समस्या स उलझा हुआ एक दिन उसे सपन म सन्देश मिला कि अपनी किसी प्यारी वस्तु की बलि दी जाए ता पानी चढगा। राजा का ज्योतिषिया न पुत्र या बाड की बलि दन का सुझाव दिया। राजा न साच समझकर अपनी बहू की बलि दन का निणय लिया। इसलिए उसन बहू का मायक स बुला भजा। पुत्र क घार विराध क हान हुए भी राजा ने बहू का जीवित समाधि द दी। यह भी एक दुखान्त गाथा गीत ह।

सुपना जा हाया राजे जसपत जा
    कूल्ह सुपन विच आए राम।
        खुणिया ता पूत्रया राजा बला चढाया राम'

×

मुणिया ता मुणया नूह मरिए कुल्हा पूनणा नाश न
तरया ता हत्या कुल्हा छिरदाया आणा राम
सहा बा सहा राजया तिस कुन द पराहते न
कुल्हा जा म पूजणा नाणा महूत ता लणा जुटाइ राम।

× × ×

चुस्कया ता चुस्कया टाला राणिया दा कुल्हा द कड़ ना
लख ता कराड़ बकर रान आथु वढाए राम।
एक ता खारी चाला दा राणिया त दित्ती ह डुलाइन।
खार सारे रणिया फुल्ला द दित्त हुण डाला राम।
वाही त हुण पफटी राणा कुल्हा दित्ती खड़ेरा ना
घरया आ धरया चक्का राणिया दीया जघाराम
नाजुक ता पर राणिया दे भजी टूटी जाद ना

× × ×

ढाइ ढाइ घडिया दिखदया दिखदेया खून दी कुल्ह आइ न।
राणिया दा पवित्र लहू कूल्हा वगी आया राम।

× × ×

जसपत राजे अपणी करणा पा वदनाम हाई न,
राणिया जा सब पूजद लाक देविया मनाइ राम।

गाथा गात लम्वा ह। लाक कवि ने कहानी क हर उतार चढावो पर अपना दिल डालकर रख दिया ह। गाथा गात सुनत सुनत लोगों की आखा मे आसू आ जात हे आर नारा क प्रति घार निदयता एव अन्याय क विरुद्ध जसपत जस पुरुषा क प्रति घृणा पैदा हाती है।

प्वाड़ा झाकी अजबा सिरमार जनपद क प्रसिद्ध याका-अजवा पवाडा की पृष्ठभूमि म अजया क लड़ाइ म वारगति का प्राप्त हाने उसका पत्नी झाका द्वारा सता हा जान दा गाथा दिव्यर आर कुफर क आपसा वर भाव का मिटान का मार्मिक कथा ह। यह गात भी नसार का तान म इसा लगाकर गाया जाता ह।

इस गाथा गान म नायक नायिका—झाका आ अजया क प्रम वारता सुख दुख आ दुर्भावना का झलक मिलता ह। गाथा गान का इन पंक्तियो म दा गावा क वमनस्य क कारणा का झलक मिल जाता ह।

1 क नाए र मानआ पावा नागा आरण अगाइ नागा दूमा रा जाना र कुफर घ आ गुमान नइ लागा प्यार रा जाना व।

टीरा पाद ख दूधमा टाप गारुए न क साआ रे।
हानर सवआ दिलमि गार हुन्दा टिब्बर ख न टाआ र
गारा भाटा चावटा दवा थागा क्लाणा रा घाण्टा व।
नुणजा आजा ख भाजा ला नूधा ख वारा स्पइग रा हाला डाण्टा व।

शणाइ ग्राम म डूम दवता का मेला लगा था। कुफर के लाग पचायत कर रह थ।

लऊ दवस्थान पर प्याद की यात हा रहा थी। उनक पशु दूधमधार सामा पर ग्रामवासिया डिब्बर न पकड लिय थ। इस पर झावटा पुजारी न घण्टा उठाकर गाव वाला का युद्ध करन की प्ररणा दी।

आण्टा गाव स कुफरि रा पाण्डा पिरणा चीशा रा नाला व
नुसरा चाला खाशिया दीता धारा मोती री शाआला व।

ससुराल म गए वीर अजवा का यह मालूम हा गया कि उसक गाव वाल कहीं युद्ध करन जा रह ह। वह जल्दी-जल्दी वहा स तयार हाकर चल पडा। अजवा अपन गाव का नायक शिरामणि वीर समझा जाता था। गाव म जब पहुचा ता उसकी पत्नी रात को बुर सपन की वात सुनान लगी। परन्तु अजवा न उसकी एक न सुनी आर उसे टागरू आर तीर कमान उठाकर दने का आदश दिया। अजवा तीर कमान लकर सीधा माती धार स होकर दूधम स्थान पहुच गया। वहा स डिब्बर के पानी के पास पहुच गया। उसन डिब्बर गाव क थम्ब मिला या आग लगान का आदश दिया। इस क्रिया म सिर्फ एक याद्धा दिलमी था शप गाव वाले अन्य जगह पर थ। लाककवि क शब्दा म

राता क जाणी सुपने साइया दखा नोखआ न चाना व
लागणो जाले घामरे रे मर तरी देखा खुटिए लहू रा नाला व।
राता क जाणी सुपने देखिया खाटया न ख खाटा ब
जाजा लागो साजा साखा रा भाई लागा वापा रे न भाटा व।
ऊब बीउजे झाकोणे सणिऐ दए डागम खे कनरू ब
झाना ज लागेआ मूइद पारी डवी जूझनी टाटी छेडू व।
जाशूरि होए वारखा निवटा झीटेओ ऊबा न्हीआ वे
धाणू किआ कनेरू हाथा दे डागरा आजवे क वे दिया व।
कुफरि रा जाणी छटका धारो गाया मानी री न आवे व।

× × ×

तथाआ रा जाणी छटका डिब्बरि गाआ नाले वे आव व

छाए वीशा रा मशनारा ताइ नटलाडा रे काल व
हुन्दी काटा क्लआ खापरा वाइरी आफिए के हाल व
भाडा वाला स आजवा दव रा कनआ न काटा व
थाड भिनरा वाएर काटा कारा आग लाण ख न साटा व।

× × ×

धाणू ताण दिन मिए कनरू घाना मारा दा लाए र,
आनव री नाणा खुटा दविशाल व्रागटू र गाआ पाए र।।
डाव एआ आनव दा याला सुजका न कारे व
आण गिर कुफर ख आनवा पचा याना रे नाड़े व।
थागआ ल्हवा आजवा ए आण ताला कुफरे आग व
दरणा जाणा जठणा री कासर पाना गाआ कुफर न लाग वे
एकि हाथा दा चिलमा दून छाए रा क लाटा ब
डोजएआ आनव दा पाड़ा ढाला रा ख झाटा व।
चाका भारा आखाटी द साइया तम्बाकू द शाटा व
सातू रा पीन्ना सतानटा थाड दन्दा तम्बाकू रे न शाटा व।
राए न बाठण चाखाए दण कचणा न खाए व
खाड़ा रा घूटा कुम्परा एनी ख न तू राए व।
आछी र भार डाबरा जाआ दा थआ वगाला रे
वगाला चाटिया ठिम्रू आशू र भारिए नाला र।

गाया गीत म घटना क प्रत्यक्ष माड का विस्तृत वर्णन ह। विपल तीर का निकालन क लिए रनश राय क रानउघ का तुरन्त बुलाया गया। रानउघ न तीर टाग म निकालकर गान बाव मुनन का परहज बताया नहीं ता जान का खतरा है।

परन्तु हाना टाल कान? ना परहज बताया था वह पूरा नहा हुआ। कुछ घण्टा बाद यात्रा म गलत खबर क कारण अठारह टाल करनाल म बाना बताया गया। बाना मुनन हा अनवा का क्षण भर म मान हा गए।

भर अनवा का पत्नी न अपन मन म दा निर्णय कर लिय कि क्षत्र क सभा श्रष्ठ वृद्ध कुफ्फर आर ठिग्र का वर भार समाप्त कर उसर बाद वह अनवा क साथ सता हा जाएगा। 18 गिर डिग्र क आर 17 कुफ्फर क क्सी वर भावना स कर गए थ। भगारहवा गिर थाका सता होकर द गयी था। दानों गावों क लागा न सत मान था।

धूए रा गाग ढाढसा उटा आग रा न फऊ व
नाजना र ट्या शिग्गुना नऊरा ख दऊ र।
धीर टाम तुम्ह दख ना दन राग व
आमिरा बालू वानआ भाइया आ सनि गाए हाए व।

आर बाका सनी हा गइ। दियानी म कुफ्फर गाव म अब तक बूढा क बाद प्याटा गाया जाना ह। एस कथा गीत हमार अलिखित इतिहास की मूल्यवान धराहर ह। इनक द्वारा हम तत्कालीन सामाजिक जावन की सजीव झलक प्राप्त हाती ह।

देवी सरण और गिवसन प्रस्तुत गाथा गात का नायक दवी सरन गाव पलनारा तहसील रामपुर का रहन वाला राजा बुशहर का तहसीलदार था। यह व्यक्ति स्वभाव स ही निर्भीक आर साहसी था।

तत्कालीन राजबुशहर शमशर सिह न (1906 1913) न अपन पुत्र श्री पद्मसिह का अपना उत्तराधिकारी मानने से इन्कार कर दिया आर अग्रेजा क इशारा पर उन्हान एक अग्रज युवक गिवसन को अपना दत्तक पुत्र बनाकर अपना उत्तराधिकारी बनान का निश्चय किया। बुशहर की जनता का यह प्रबन्ध मान्य नहीं था। इसलिए उनम विद्राह की लहर फल गइ। इसका नतृत्व तहसीलदार दवासरन कर रह थ उनके नेतृत्व म कुछ लागा न गिवसन का मार दन का षड्यन्त्र रचा। एक दिन दवीसरन अपनी बन्दूक आर शिकारी कुतिया को लकर सतलुज नदी क (जहा स गिवसन राज घूमन जात थ) चट्टान पर बठकर उसके आन की प्रतीक्षा करन लगा। अचानक गिवसन आ गया। हडबडाहट म उसन गाली चला दी वह गोला उसकी अपनी कुतिया का लगी परन्तु उसन गिवसन का पीछा किया आर उस पहाड की आट गाली मार कर खत्म कर दिया।

राजा बुशहर न विद्राही नताआ का पकडकर कद कर दिया आर दवीसरन को कातिल करार देकर उन्ह कालापानी जान का दण्ड दिया। लवी मेला क अवसर पर पुलिस दवासरन का कदी बनाकर ल गइ। उसने अपन सम्बन्धिया का समझा बुझाकर वापस भज दिया। यह दृश्य लाक कवि न बडी सशक्त लोकवाणी मे प्रस्तुत किया ह। गाथा गीत इस प्रकार ह

1 ढालनी गिशर वारू सहिबा दूना दराआ ला
पीठ पाछ तरा वार नागरा आआ ला।
मरिय वणदूकुटीय तू बना कभाग ला
टिकफि थी गिवसनाखि कुतिय दि लाग ला।
काडु ए मरी कुतिय तू लाग ल न दाशा ला
ताद लाग बन्दुआ लागा लाफ्ना रा राशा ला।
2 झाग हरा गिवसना ढाम्ड रा आल ला
वार्गी र वढकुआ तू जारा ख न वाल ला।

शालिगरामा शाला शाग नड मनणा ला
पन्द्रह शाआ रा नागरा राइपूरा ल लणा ला।
काल नाहा पाणी न ुआ रान रा दराहा ला
हाथा द पाणा हथकरा राठा द लाहा ला।
3 न ता राआ सिलगारना घास अम्बर दास ला
काल ना नाहा पाणा स दआ इधरा फासी ला।
आज दा दिना तिनदारा ताआ रान्द ता हाए ला
खापटा धीशा ढाका माथर कातक लीए ला।
काला वाला पाणी र मानण न झीर ला
आढना ल कावला मिला वठागण ल दरि ला।
4 दुरगी वर वाबू माहिवा दूश ला आशु ला
सागा माथा विना मिलुआ मिलुए न शाशू ला।
शिमला बाजारा मिली याल वाकाला ला
गनि हुइ जाबू माहिवा पलुक मिला ला।
भीमा काली वन्ना करु लाकना वीरा ला
जाया मभ हाला च तिनर फारा ला।

नहमालगार दग्रा सरनगाम का कालपानी का दण्ड दकर विद्राह समाप्त नहा हुआ। अन्त म 1914 म राना पदमसिह का बुशहर क राजसिहासन पर बठाना पड़ा। इसम बुशह क तत्कालान वजार काटखाइ क कवर दुगासिह न भी महत्वपूण भूमिका निभाइ।

मोहणा आज स लगभग 100 वष पहल बिलासपुर क तत्कालीन राजा स्व राजा विजयचन्द का शासन था। उस समय गान गाथा क नायक माहणा का भाइ राजा बिलासपुर का भण्डारी था। एक बार माहणा क बड भाइ ने यह समझकर कि नव राजा साहब का उन पर कृपादृष्टि ह एक मुसाफिर का किसा झगड क कारण खून कर दिया। भण्डारी क विरोधिया न उसक विरुद्ध राजा क कान भर दिए। राजा न सार मामल का छान बान स्वय शुरु कर दा। भण्डारा न समझ लिया कि साथ अपराध स बचना असम्भव ह। उसन अपन कनिष्ठ भाइ माहणा का बहला फुसला का तयार कर लिया कि वह कुछ ट क लिए मान ल कि खून उसन किया ह। बाद म राजा स सिफारिश कर उस छुड़वा लगा। माहणा न अपन भाइ का वृद्धावस्था परिवार का भाइचार स बात मान ला। भाल भाल माहणा का अन्त म फासा का दण्ड मिला। उस अन्त म फासा पर चढ़ा दिया गया। लेकिन लाकमानस म वह निरपराध भाला भाला मान द बठा। माहणा अब हिमाचल का एक लाकप्रिय गाथा गान बन गया ह

मन दाड था महणा मन बचड था
नग मा र कला माहणा मीर बचड आ।

तू नी ?िसदा आ माहणा तू ना दिसदा
भाइए रीया किनिया त तू ना दिसदा।
तरा फिकर व माहणा तरा फिकर व
मरा ?िल लग्गा मुखग तरा फिकर व।
आया मरणा आ माहणा आया मरणा व
भा?ए रा किति? आया मरणा व।
फासा चढना माहणा फासी ?ढना आ।
?िन र वारह वज फासी चढना आ।
बारह वजी गए आ माहणा बारह वजी गए आ
राज दी घडिया वारह वजी गए आ।
परवाना लिखीता आ माहणा परवाना लिखाना आ
राज तरी फासी दा परवाना लिखीना आ।
खाइ पहनी ले आ माहणा खाइ पहनी ल आ
अपणीय मरजी रा खाइ पहना ल आ।
दान करी ले आ माहणा दान करा ल
अपणीय मरजी रा दान करा ल आ।
तू नही बचना आ माहणा तू नही वचना आ
राज दी ?लमा त तू नही बचना आ।
लग्या सुखण आ माहणा लग्या सुखण
ताला ताला खून तरा लग्या सुखण आ।
दद फुल्लया ओ माहणा द? फुल्लया
तरे तमास वखन आइ ख?ी दुनिया।
फासी चढी गया व लोको फासी च?ी गया
भा?ए री किति? पर फासी चढा गया।
किस वजणी आ माहणा किस वजनी आ
पजव? मुरली आ माहणा किस वजनी आ?

इस मामिक गाथा गीत क प्रारभिक अश मा क द्वारा उभरत ह जिनस माहणा करुणामक गाथा क सभी सस्त सहसा मिल जात ह। गातामकता का आधार क्था क साथ बना रहता ह।

रानी सूही चम्बा का गाथा गान रानी सुनयना या चम्बयाली रानी क बलिदान का गान गाथा अपनी मामिकता आर प्राचीनता क लिए प्रसिद्ध ह। जब राजा ?ल वमा न चम्बा नगर बसा लिया तब पानी रावी न?ी से या सराथा नाला स लाया जाता था। राजा न कूल्ह चम्बा लान क अनक प्रयत्न किय परन्तु सभी व्यथ हुए।

कहत ह एक रात चम्बयाली राना का स्वप्न हुआ जिसम इस काय के लि?

रानवश स किमा क आम वलिदान मागा गया। रानी न जनकल्याण क लिए आम वलिदान कर दिया आर नगर म पाना आ गया। कूल्ह क स्थान सराथा नाला क पास राना न अपन आपका जीवित चुनवाकर वह अमर हा गइ। रानी क जावित स्वच्छा स चुनवाय जा पर सहसा विश्वास नहीं हाता। फिर भी गाथा गान म इस सन्देह पर काइ प्रकाश नहा पडता। परन्तु आज तक राना चम्बयाली की स्मृति म चम्बा म प्रति वप चत्र म रानी सूहा का मला लगता ह जिसम कवल स्त्रिया भाग लता ह। चम्बा नगर म रानी का एक मदिर भी बनाया गया ह। इस गाथा गात म इसा घटना की पृष्ठभूमि ह

सुनिया सजा राणिया जा सुपना ज हाया ना
कुल्हा सपन च आयी राणीया जो कुल्हा सपन आइ ना।
वड्डिया वलिया मगदा भाइया वड्डिया वलिया मगदी ना
हुक्म ता देया राजा जा म कुल्हा पुषणा जाणा ना।
सद्दा ता कहारा जा भाइया कस्सा मरा डाला ना
कुल्हा पुजणा जाणा राणिया ने कुल्हा पुजणा जाणा।
पहला ता सागण राणिया दा वाहर परासी द हाया ना
मधुर बोली वाल कागा तरी चुजा सुनिया म ढाली ना।
धन ता वहानी राणा कुल्हा ऊपर जादी ना
रक्खा ता कहारो भाइया रखा मरा डाला ना।
खणा ता चुराहियो भाइया खणा मरी समाधी ना
सद्दा वद्दा भाइया मर कुन द पुराहता ना।
वणी ता वणाइ राणी वठी विच्च समाधी ना
चन महीन भाइयो कर मरा मना ना।

चत्रमास लगन वाल रानी सूइ क मल म इस गाथा गात का एक विशप भाग गाया जाता ह जिस प्राय भरमार की गद्दी आरत गाती ह। इस व सुकरात कहता ह। इसक हृदय विदारक शब्द आर स्वर लगभग 1200 वप पूर हुए नारा वलिदान की करुणा पलका का छाया पर नाचन लगत ह।

गुडक चमक भाउआ मघा हा
हा राना चम्बयाली र दशहा।
किहा गुड़का किहा चमका हा
हा अम्वर मरारे तार हा।
कुथए दी आइ काला वद्ला हा
कुथए दा वरसया मघा हा।
छानी दा आइ काला वद्ली हा
वणा दा वरसया मघा हा।

सुखरात कुड़िया चिड़िया
सुखरात राज द वहड़ आ।
सुखरात कुड़िया चिड़िया
सुखरात नाणा पाणी हारा हा।
सुखरात कुड़िया चिड़िया
सुखरात लक्ष्मी नारायणा हा।
ठण्डा पाणी मिठा करी पाणा ना
तेरे नैणा हरी हरी नीणा हा।
सुखरात कुड़िया चिड़िया
सुखरात रान द वहड़ हा।
सुखरात कुड़िया चिड़िया
सुखरात रानी द वहड़ हा।
सुखरात कुड़िया चिड़िया
सुखरात चम्ब द चागाना हा।
सुखरात कुडिया चिड़िया
सुखरात नौण पाणीहारा हा।

तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था म नारी का स्थान कितना नगण्य हीन और अमानुषिक था। इस गाथा गीत स इतना निष्कप तो हम निकाल ही सकते ह। इस दुखान्त लोकगाथा की पंक्तिया जब लोकगायक भावपूर्ण गाते ह तो आज भी सहसा आखो स आसू टपक पडते ह। इस गाथा गीत के गय तत्त्व न इस और भी रोचक बना दिया ह।

बींची री बौली नूह की बील चम्बयाली रानी क बलिदान लाहाल की रूपीरानी का बलिदान बिलासपुर रुक्मणी का बलिदान और सिरमार म बींची री बाली एसी दर्दनाक गीत गाथाए जिन्ह सुनकर आज भी रागटे खडे हो जाते है। दिल रो उठता ह कि मध्यकालीन समाज म नारी का स्थान भेड़-बकरिया की भांति था। इन सभी देविया का केवल कूहल (पानी) की कमी का दूर करने क लिए जीवित दीवारा म चिनवा दिया गया। इतने गहरे अधविश्वासो म समाज डूबा हुआ था कि वास्तविकता का पता साधारण जनता का लग ही नही पाता था। बींची री बाली गीत गाथा का एक अश देखिए

कूहल शुरू मलावणा री जीरी शुरू झीजडी नू फूली
कूहला नहीं जान्दी जाणे स देवी बाला लागा बाली।
बेगानी बाढीया आ ददी बहू आपणी राटी लया
बींची बाला मरी काणछी बहू बाली ख ब दिआ।

बींची डमी वाटीयाग जापा बाडी देनी बाला लाइ
शाशू रे लकारारा बींची लाग पता साव वाता चित पाइ।
वाढीया तू चीणी पारी छाती रा मूड छाडे नागा
वटा आआ ला मरा न्हानडा पीआ ला दूधा पाडा।
आमा आआणा मेरी आमा कारा बढिया चोटी
आवण मेरे से आपण हाथ देवल राटी।
बाबा आजा बींची रा लागा राणी बटी जू चीणी
साल थिया साढ सनी रा गूठी गाश दीनडु गीणी।
मालका आना उजली बींची रे फुलदू चढाए
दखदे दखद फुलदू सब स सुत्र हाई जाए।
शाशूरे जुलमो रीवाता बींची दी ली गाई,
पर बींची री बाली दी कूहल मलावणे दी आई।

सास के धाख आर अत्याधार ओर बहू के बलिदान की यह गीत गाथा आज भी गाइ जाती ह। कहत ह इस घराने म सात लडके थ। इनम से बींची छोट लडके की पत्नी थी। बीची क भाई न क्रोध म आकर केवल अपने बहनोई को छाडकर शेष छहा भाइया का वध कर दिया था।

रूपी रानी इसी तरह रूपी रानी चम्बा के राजा की बहन आर घुसाल के राण की रानी। कहते ह घुसाल गाव म पहले पानी नहीं था। सयागवश एक साधु वहा पहुचा। उसने पानी के लिए एक मात्र तरीका बताया। बलिदान के लिए पहल राणा की काली कुतिया बिल्ली का नाम सुझाया गया परन्तु राणा का सिवाय रूपी रानी की ही चरि दर्ना था। उस बेचारी का बलिदान कर दिया जाता है। सर्दिया म लाहुलवासी ऊचे-ऊचे पहाडों पर गिरी बर्फ म घटा तक यह गीत गाथा गाते रहते ह। उसी गाथा गीत की प्रारंभिक पंक्तिया यहा उद्धृत कर रहा हू

मूरण शूकी कूहल शुकी पाणी नाई टी पूजे
गूशरी पापू डारा शूरारा गेइ ज।
चम्ब आई उदटू राडा राण री जाडी काडी ज
राण री प्राढा काडी ज पातीं पानी री हेरी ज।
पानीं री अदू राज काडी कूी बाटा ज
ऊदा मामा टीदू माइता माना सूबा कीती ज।

इस तरह हिन्दू समाज कब तक नारी का बलिदान करता रहगा। कहीं वह मृत पति का लाश क साथ सती हा रही ह ता कहा दहेज की बलि चढ रही ह। नारी क प्रति यह अपमानजनक दृष्टिकाण क्या आर कब तक चलता रहगा?

हिमाचल प्रदश म जा नारिया पति क साथ नत मरी उनम स कुउ क गाथा गीत ग्रामाण समाज म लाकप्रिय ह। इनम उल्लखनीय ह सिरमार का गाथा शिमला का नरता कुजी माटी टाकू, माइ रूपू, लाला ठाकुर चनगम मडाल्टा क गाथा गीत।

दुनिया ता बमान् कि बमान् हाल।
आमचु बरड् शाड टी गालिम् प्रानु वन्नड
हुनागु बरड् शाड पुरु बइमानी।
जडमापानियु कनुउ जड् गुगरू।
मियन् चो लानाश दा पातल् गुगरू।
भि मा खुशिश वनड ज गुगरु थगु छात।
चुन्नीलाल हिम्मन दन
जडमो निंगग वेरड ख्याया।

इस पाठान्तर की भाषा शली ताल आर लय म भी पहल स काफी अन्तर ह। प्रम म कवल मिलन या मृत्यु हा नहा कइ बार बवफाइ की ठस भी सहना पडती ह। यह इस गाथा गीत स स्पष्ट हा जाता ह।

उपयुक्त गाथा गात म एक पुरुप का एक सुन्दरी क हाथा टाकर खाना पटी। परन्तु प्राय पुरुप भी पत्थर दिल हात ह। उनम किन्नार जनपद की नगा गगा सहाय की प्रमगाथा भी उल्लखनीय ह।

नेगी गगा सहाय 1890 ई म टिक्का रघुनाथसिह न नेगी गगा सहाय का भीनरा टुकपा परगना का पटवारी बनाकर भजा। वहा पहुचकर उसका प्रम थागा ग्राम क नगी न्याकचउ की अत्यन्त सुन्दर बेटी नरयुमपति स हा गया।

टीका साहीवस लानाश अग हुशियारी हम तन?
हुशियारा त लानमा पागी पागन्तु छग
पागी पागतु छगा अग पमाशा विरायन
पागतु छागस लानश गु तुकपा मा विग
गु तुकपा मा विग गु शूर बिनक।
टिका साहीवस लानश अग हुकुम म रानचिस
अग हुकुम म रानचिस न हाला रिंगनन?
डाक रिंग रिंगि थीमा खाचु टागा
खाचु टागा न्याकच नगियू गार न्याकचउ नय नरयुमपनि बाटिन।
नरयुमपति बाटिन न्याकमी ठलिग ग्यास।
गगा सहाय मुशी थ्याकमी निरपा ग्यास।
नरयुमपनि बाटिन लानश गु किन रग बुनक

गगा सहाय नातश कि अग रग ट जइन
अग परमि काचग युन श्रातु चिमन
क्तिु ताग ताग क्ना वरक्या तापस लचरू।

नव मु रा गगा सहाय की उस गाय स तयनीला हा गइ तव नरयुमपति भी उसरू साथ जाने का तयार हा गइ। परन्तु गगा सहाय नहीं मान। वह यह आश्वासन दकर चला गया कि वह उमकी खवर दखभान दूर स करता रहगा।

ढुडू कम्बराऊ 200 वप पुराना भारय 'ढूढू कम्वराऊ' उस समय जयकि मनुष्य का भड वकरा क समान हर कहीं हत्या की जाती थी, की एक ऐतिहासिक लोक गाथा ह। इस समय का वर का वाइर कहत ह। **तहसील चौपाल मे स्थित 'ढूडपा' नामक स्थान के निवासियो को ढूडू तथा सिरमौर स्थित कम्वराऊली स्थान के लोगों को कम्वराऊ कहते थे।** किसी समय उन्हा क आपसी वर की यह गाथा ह

मुनरा मुलाइय कर मुलाए भड़ा गाइ ढूडू री धनल जाए॥
टीरा फुला दुधल धासणी द गानी साए पडी धवल ढूडू री छानी॥

चौंपाल पर्वतीय इलाका है। अधिक वफ पडन क कारण भेड वकरी पालन वाले सभी किसान अपनी भेड लेकर धाड अथात् सिरमार क गम इलाका म शीतकाल मे अव तक भी जाया करत ह।

इसा प्रकार ढुडू अपनी भेड लकर धनला नामक स्थान पर चले गए और वहा अपना 'छानी' झापड़िया वना लीं।

एजे गोए खावरा कम्वराऊ खे जाए
नाइय कम्वराऊट खुमल पाए।
एनिऐ लेऐ ढुडुए वारा द खाए
बाणा रा वणोकरा लाणा ऊगाए॥

यह समाचार कम्वराऊ को मिला। कम्वराऊ क नाजवाना ने मीटिग वुलाइ और कहन लग कि इन ढुडू लागा ने हमे हमेशा ही तग किया है। इसलिए हम इनसे 'वणाकरा' जगल का टेक्स वन का महसूल उगाहग।

मुल री मुलाई ये करे मुलाय
चार झणे कम्वराऊट धनल खै जाए।
ढुडू छाडा सवला नशणा लाए
कथु गोआ ढुडुआ धनल ख आए॥

कम्वराऊ के चार नाजवान धनला स्थान पर आ गए आर ढुडू की ओर से भेड़ो की रखवाली वाले सवला नामक आदमी स नेश पूछ की।

एआ भी नी बातणा आ राआऊ नीत
तरा आजा धनलो बीखा दो चात ॥
साय तर धनल राधो ली भागा।
ठुडू आगा कम्वराऊटे बणोकरा मागा॥

सबला कहन लगा कि म साफ नीयत से यहा पर अपनी भेड लाया हू क्योकि मुझे तुम्हारा धनला कदम कदम पर याद आता है। फिर कम्बराऊ उससे टैक्स मागने लगे।

साय तेरे धनले राझा ला कीता।
वाणा रा बणोकरा कौनी नी दीता॥
ठुडू आ कम्वराऊरे जागाए तेंडा।
देए न बणोकरा तरी हाकुला भेडा॥
साय तर धनले राझाला कीता।
जआ बैटाए खशणी रा ला भेडी दा छीटा॥

ठुडू सबला कहने लगा कि हमने बणाकरा कभी भी नहीं दिया। कम्वराऊ कहने लगे यदि टैक्स न दोगे तो हम भेडे कब्जे मे कर लेंगे। इसी तकरार मे सबला ने कह दिया कि यदि राजपूतनी के पट से जन्म लिया हे तो भेडा को 'छीटा (भेड हाकने की पतली छडी) तो लगा लो।

कयुआ ऐ गावीया केयुआ गाडा।
आफी हा थियाडुला गाबदु रा बाडा॥

एक कम्बराऊ कहने लगा कि तू वेसा कहा का इतना बडा आदमी आ गया है मैं स्वय ही गाबदु' ममने का 'बाडा' रहने का शेड खोल लूगा।

धारा फिरा बागरो नालटे हीशौ
ठुडू लाग सबलै पाणी रे चीशौ।
सौंय तैर धनल चिकणा माटा
बाऔ आग धनल सबला काटा॥

सबला ठुडू को प्यास लगी तो वह पानी की बावली पर ज्यो ही पानी पीने गया उसे कम्वराऊ नाजवानों ने वहीं पर कत्ल कर दिया।

मुन मुलाईय केर मुलाय
नाइय कम्वराऊटे धौरो ख जाए।
जोध कम्वराऊटे कम्वराऊली आए
टारी आगै तेनियें लीं वरी लाए॥

सवला' का मार कर कम्बराऊ नाजगान घर वापस आकर वे सब टारी दुगा क मन्दिर क पास एकत्रित हुए आर नारा लगाने लगे।

काट शुणा ठुड़ण खलिए डोबा।
मरा काटा मालका कन्न रानेआ गोवा।
रूदा लागा री ठुआ चुणा ला पालु।
बठे रा लागा लीवरो भुण भी ना वोलु॥

ठुडण की धार म जब सबला की पत्नी ने नारा सुना तो खड खडे चक्कर खाकर गिर पडी। विलाप करने लगी कि मरा पति जिस प्रकार केल का तना हाता है निठुरा न क्याकर कत्ल कर दिया। सबला का बूढ़ा बाप रीठू अपने सफेद वाल नाचकर रोने लगा। हाय! एक पिता अपने बेटे क कत्ल का नारा किस प्रकार लगाता ह।

साय तर धनल रींभै ल सापो
चीज लागा म्हीने खे सबलै रो पापौ
काडी री काजी ठुडुए हामलौ खे लाए
जाण हाला दाईया पोखा खै आए।
सबले रा वदला दणा ऊगाए,
पापे लए सबले र धुणआ खाय॥

अभी तीन ही महीने हो पाए थे कि सबला की रूह सभी ठुडुओ को परेशान करने लगी। सार हामल म टुडुआ क दाई विरादरी रहते ह उन्ह संदेश भेजा गया कि यदि हमारे भाई हो तो लडने के लिए तैयार हो जाओ। हम सबला की हत्या का बदला लना चाहते ह ताकि उसकी आत्मा को शान्ति मिले।

नो नाली हामलो खा बरा पाए
टारी आगे ठुडणे खुमले पाए।
खुमली दी बातडी भेखलू लाऔ
चार झणे ठुणटे चानणै खे जाओ॥

ना नालो के वीच रहने वाले परगना हामल के ठुडू खबर मिलते ही ठुडणा ग्राम में 'टारी दुर्गा के मंदिर के पास 'खुमती मीटिंग के लिए इकट्ठे हो गए। मीटिंग में भेखलू बुजुर्ग ने कहा कि चार ठुडू जवान पहले ग्राम चानणा चले जाओ।

चोऊ जाणी जाएऔ का धौरणा सीका
दू ड ओलै ठूणटै कालसी ओ भीखा।
कैई गोआ दुडुआ चानणे आए
पूरणै पावचे नेशणै लाए॥

चार जन जाने की आवश्यकता नहा लाग शरू करग। कालसी आर भीखा दा ही नगान चानण चल जाएग। ग्रानणा पहुचकर पूरण नामक ज्यातिपी ने उनके आने का कारण पूछा।

एआ दा नी बालणा आ राआऊ नात
खली री मगरा लाए उडाला भूसा
खाज दआ पावचा थगना रा दसा॥

युवक कहन लग कि हम सद्भावना ले कर आए ह। तुम्हारा चानणा आज का (धार चान्दना) हम कदम कदम पर याद आता ह। ज्यातिपी हमार लिए कोइ वगड का मुहूत निकाल दीजिए।

मरा धराटिया तरा जजमाना
ऐजा कामा धराटिया कारद ना आम।
भीखा दआ कालसी वटी री गाली
माटा खाली पूरण काठी री तानी॥

पूरण ज्यातिषी जजमाना को कहन लगा कि हम लाग यह काम नहीं कर सकत। भीखा आर कालसी द्वारा वेटी की कसम दने पर वचारे पूरण को मजबूरन पुस्तक का सन्दूक खालना पडा।

साच रो लागो वाठकू कास रा थाला
सींघ लागा काकडा कान्या तुला।
ग्राह आण खाजआ ताई दिशा शूला
देस दीता पावच जटा रा मुला॥

कासे की थाली पर 'साच (गणना करन का पहाडी ज्यातिप ग्रन्थ) का वैठक रखा गया। सिह कर्क कन्या आर तुला आदि सभी ग्रह ओर दिशाशूल आदि की गणना करके ज्यातिपी ने उन्ह जठ महीन की सक्रान्ति मूल झग करन का मुहूत दिन निकाला।

भीखा गाए कालसी घारा ख आए
म्हीना गाआ वशा आ रा नेनीए आए।
ना नाली हामला सरा ह रोयी आए
हार्थी आडया अरजा वीजटा ख लाए॥

भीखा आर कालसी घर वापस आ गए। अव वसाख का महाना नजदीक आ गया। तमाम ना खंडिया क वीच रहन वाल हामल निवासी सराह पहुच गए। सभी लागा ने हाथ जाड कर वीजट (गिरिपार प्रसिद्ध दवना) की प्रार्थना की।

तरा देवा भरासा तरा ही ईटा

मर नागा पाखा ख पूर ला पाग।
उनर न्ति उनर हाथा द ढार
खाग ना दुद्दू टाटिए कासा न नार॥

बिजिट दवना हम तरा हा भरासा आर तरा हा आसरा ह। हम लगाट म ना रह ह हम हासला दा। बिजिट दवता क पुजारी म दवना व्यापक हाकर कहन लगा कि तुम लाग खश गन्न करक नाआ आर किसा स डरन का आवश्यकता नहीं। साथ म दवना न उह एक तार अपना निशाना दिया।

टुण्ण दू जखन कारर चाल
लाणा गाश काकर किए मिहाल।
लाणा गाश काकर लाइआ नाटा
सागला लइ कलटा धियान ख काटा॥

ग्राम टुडणा स चलकर सब दुदू लाग काकरा धार पर पहुच। वहा पहुच कर उन्हान पटाख चलाए। उसक पश्चात् उन्हान मनारजन क लिए वहा लाक नृत्य (नाटी) किया आर पूरे-क पूर दवदार क वृक्ष आग जलान क लिए काट।

लार्णी लाआ काकर झाकडा ख धाआ
गाजी बदरा ऊआ पाखा ख आए।
खीदा री शिखरीए कलआ दा बादा
झुथिए पुन्दराउटीए चलटा था खादा॥

काकरा धार स फिर उन्हान झाकड गाव म रहन वाल गाजी नामक आदमी का आवाज दी कि वह भी 'पाख सना म सम्मिलित हा जाए। आवाज सुनकर गाजी अपनी झूथी पुन्दरा ऊटी नामक पत्नी स कहने लगा कि म चली नाश्ता करना चाहता हू।

का लाए साया मरा चली रे आज
आणण द साया मरा पाणी र धाड।
धाड़ा छाडा नेगणिए तागटू पाद
आपू लागे नणा चली र धाध॥

मोर सया' य आज नाश्ते की क्या रट लगाइ हुइ ह। ठहरो जरा पानी का घडा तो ला दू। पानी का घडा लाकर 'नगन अथात् नेगी की पत्नी न 'टागटू' बरामदे मे रखा आर स्वय नाश्ता बनाने मे लग गई।

चली चाणो नेगणा भाल रे धीआ
खाण ख देओ धादिय लौट आ धीआ।

नगन किसा भल मानस की वटी न नाश्ता वनाया आर गाजी अपन पति का भर पट घी आर लाट (एक विशष प्रकार का पहाडी चपाती जाकि आट का बिल्कुल पतला गूध कर तव पर पकाइ जाता ह) खिलाए। तत्पश्चात् गाजी भी पाछ म शामिल हान क लिए चल पडा।

जेती किया जाग दव राटी रा शीका,
द ऊली ही लाघ द जाकटुए छाका।
छाक मरा वाकटुआ नाकटूर सार
वाघ खाआ ला वाकरी आणू ला धार॥

उधर दूसरी आर कम्बराऊ का 'जागन्द' नामक आदमी 'वागण' नामक स्थान पर भडा के साथ था। जितन म जागन्द रोटी का 'शीका' छीका तयार कर रहा था कि 'देऊली' दरवाजा लाघते ही एक वकरु (छलू) ने छींक लिया। नागदेव का सशय हुआ किसी भी काय स पहल छीक विघ्न डालती ह। कहन लगा' छलू वट तू वशक छीक ले यही कि वाघ वकरी कोइ खा लगा ता उस घर ल आऊगा।

मूल मुनाइय कर मुलाए
भडा गाई जागदवा वागणा जाए।
हाल मरे वागण वागणो रा खाड़ा
भडो ज थी वाकरी घारदी पोड़ा॥

नोगन्द की भड वागण स्थान पहुची। वहा का दृश्य कितना सुन्दर था माना सारी वागण की भूमि भी अखराट के पेडा के साथ (हिल) नृत्य कर रही हो। वहा पर भेड़ खुशी खुशी चराते ह।

मूल मुनाईये कर मुलाए
भेडी छाडी जोगदेवै दुपाची लाए।
भार पाचा राणपाता हुके दा पाणी,
भाट म्हार तमाखटु वाठआ खाणी॥

नोगदेव ने भड (दुपाच दापहर की धूप म भेड नही चरती उन्ह इक्टठा करक पेड़ा की छाया म विठाया जाता है) विठा रखी थीं। उसने साथ म अपन पाल 'रणपात' को हुक्क म पानी भरन का कहा कि म वठ के तम्बाकू पीना चाहता हू।

शोटा नाना खाण रे ना राय काचे
धारा विसराइर दा शाकरा वाचे।
हाल मरे वागण वागणो रा खोड़ा
पार हाड़ा नाना मरा गुण मुण मारा॥

रणपत कहने लगा कि दादाजी तम्बाकू पान का ता मान कच्चा हो गइ है क्योंकि हम धार पर स्थित अपने टर म शाकरा चकमक पत्थर और उसको रगडने वाला लाह का टुकडा ही भूल गए ह आग जलानी असम्भव ह। तमाम वागण नृत्य कर रही थी। चारा आर अखरार के हिलते हुए प जस उन्ह कुछ समचा रह थ। दादाजी उस पार स कुछ गुण मुण (आत्मिया क वातचात करने की ध्वनि) सुनाइ द रहा ह।

सार दिशा वागणा टाला आ छागा
एज आसा पाचा मरा बिशारू लागा।
आर्थी नाइ नाना मरा विशारू र हाडा
घाढी हार्दी आ धाणटी आसणा द काडो॥

तमाम वागण टाली आर छाग नामक स्थान नजर आ रहे थे। जागदव अपने पोत का समझाने लगा कि यटा य विशारू' मन म आन वाल लाग ह। रणपत कहने लगा दादाजी य मन म आन वाला की चाल नहा ह इनकी धनुष चढी हुई ह ओर बगल म काडा तरकस पड हुए ह।

शाटदा तम्राखु था बीचा न आगा
ढुडू पाड नाईए जए वाकरी ख वाघा।
हाल मर वागण वागणा रे सरा
आगु कार जागदवा डागर खे करा॥

तम्याकू पीना चाहता था परन्तु दुभाग्यवश आग ही नहीं ह जागदव इतना ही कह पाया था कि चारा आर स ढुडू नाजरान जस वकरी को वाघ घरता ह उसे घेर चुक थ। जागन्व न एक दृष्टि दाडाइ। वागण नृत्य कर रही था ओर वागण की 'भर लहलहाने खेत जैस उस अलविदा कह रह थे। जोगन्व' कटने के लिए अपनी गर्दन आगे करा उस हुक्म था।

चाल पाची चालना पीपला दी पाजा
डागर किया लगा वदराऊ गानी।
गानिया वदराऊ आ काखेआ तरा
भीखा लाओं ला डागर सरखा रा मरा॥

जोगदेव को उन्होने अपने काबू म कर लिया था। अब उसका सिर चन्दा ही लम्हों में धड स अलग हान वाला था। ढुडू लागा ने उसका सिर काटने के लिए वदराऊ गाजी को आग किया। धन्य है उस वीर के लिए मौत सर पर है फिर भी हौसला देखिए अरे वदराऊ गाजी मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है? तुम मेरे मुकावले के राजपूत नहीं हो। भीखा नाम का ढुडू भी साथ था जोगदेव कहने लगा कि मरी गर्दन भीखा

ग्ढटेगा क्योंकि वन मेरा सरख मुकाबल का है।

> नागल्आ रे टागर दे पानिया रे फूल
> मेरा चाल ठुडण राय चागी दा झूल।
> जागल्आ री करा दे रूपाइया रे काड
> इथाला टुडू डागर दूर वालदा मी हाटा॥

जागल्य के पातल मढे हुए टागर काटने के फरस को ठुडूआ ने उससे छीन कर कहने लगे इस तो हम अपने गाव ले जाकर ऊँची जगह पर टाग देंगे। नागल्य के गले मे रूपया का हार शोभा दे रहा था। उसने निडर वाक्यो मे उनसे कहा कि मुझे यहीं पर ही मार डालो क्योंकि मैं अब अंतिम समय दूर नहा चल सकता।

> पुनआ रे जुइणा पाछया भात
> जाके तान राणपत डूग दे दीत।
> नाइय गाए ठुणट धारा ख आए
> सबल रा वाल्ला दीता उगाए॥

पूर्णिमा का चाद पश्चिमी दीवार पर अपनी सुनहरी आभा बिखेर रहा था। डर कर उस नाबालिग नागल्य के पात रणपत ने गहरे पानी डूगे मे छलाग लगाकर अपनी जान गवा दी। इस प्रकार सबला की हत्या का बदला चुकाकर ठुडू नाजवान अपने घर आ गए।

यह था वह जमाना आज से कोई दो शताब्दी पूर्व का जमाना। जरा सी बात के लिए कई सिर उडा दिये जाते थे। मनुष्य की जिन्दगी भेड बकरी के समान थी। परन्तु आज जमाना बहुत आगे बढ चुका है उस समय के चरवाहे के पास उसका 'टागरा' हुआ करता था जबकि चरवाहे उसी प्रकार एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेडें ले जाते हैं लेकिन आज उनके पास शस्त्र के स्थान पर बासुरी मिलेगा। आप कभी भी सुदूर पहाडियो से चरवाहो की मधुर बासुरी की धुन सुन सकते है।

प्रेमकथात्मक गीत

प्रम एक एमा पवित्र भावना ह जा एक प्राणी का दूसर स एक समाज का दूसर स एक धम का दूसर स आमा का परमात्मा स शारीरिक प्रम का दिव्य चतना की चरम अवस्था तक पहुचा दता ह। हम जानत ह कि किसी अन्य व्यक्ति क साथ साचना आर इसस भी अधिक किमा अन्य व्यक्ति क हमार साथ साचन आर हमार साथ एकाकार हान का अनुभव करना क्या हाता ह। जहा सच्चा हार्दिक एकीकरण हाता ह वहा एक आर एक मिलकर दा नहीं अनन्तता वनती ह। यह मनुष्यता क विकास की एक सीढी ह।

जा नारी आर पुरुप एक दूसर स प्रम करत ह उनकी मानसिक स्थिति ता कुछ आर ही हाती ह परन्तु लाक कवि जिस रूप म उम शब्दचित्र आर सगीतात्मक बनाता ह उसकी अपनी ही वानगी ह।

हिमाचल प्रदेश क प्रसिद्ध गाथा गीता म चम्बा जनपद का राझू फुलमू का गाथा गीत प्रेम भावना के लिए अपनी अलग पहचान सदिया स बनाए हुए ह। चम्बा की भटियात तहसील का यह हृदय विदारक गाथा गात सार पहाडी क्षत्र म बड चाव स गाया जाता ह।

राझू फुलमू गल्ला हाइ बीनिया गाथा गीत का नायक राझू एक जागीरदार का पुत्र था आर नायिका फुलमू एक गरीव गडरिय की वटी थी। बचपन का साथ खलना कूदना बड हाकर पारस्परिक प्रम म परिवर्तित हा गया। उनक प्रम की चचा जब फलन लगा ता राझू क पिता न बट का सगाइ किसी अमार घरान का वटी क साथ कर दी।

यह वात फुलमू का जब मालूम हुई उसक दिल पर गहरी चाट लगी। दूसर दिन एक आर स राझू की वारात चली ता दूसरा आर स फुलमू का शव यात्रा चली। राझू न यह सब दख लिया। उसन अपना पालकी भूमि पर ठहरान का कहा। वह भी फुलमू का चिता म आग लगान चला गया आर जब हृदय विदारक घटना उसस सहन न हा सकी ता स्वय भी चिता म कूदकर प्राण द दिए। लाक कवि न इस अमर प्रम का इस रूप म स्वर म गूथा ह

याडुए सुगाडुए तू कना झाऊरा पका कजा मारदी?
दा हथ वुटण द लाया फुलमू, गल्ला हाइ वीतिया।
वूटणा लगाण तरी ताइ घाचाया रायू सस्रा भाभिया
निहा द मना विच चाआ राझू, गल्ला हाइ वीतिया।
कुना वाहमण तरा व्याह लिखिया राझू व्याह लिखिया
कुनी कीती कुडमाई राझू गल्ला हाइ वीतिया।
कुल द पराहन मरा व्याह लिखिया फुलमू मरा ब्याह लिखिया।
वापू कीती कुडमाइ फुलमू गल्ला होइ वीतिया।
वाहरे वाहर राझू दी जाना चली भाग्या डाला चलिया
वाहर वाहर फुलमू दी लाश चली गल्ला हाइ वीतिया।
रखा तो क्हारा मरी पालकिया रखो पालकिया
फुलमू जा दाग लगाणा जानी गल्ला हाइ वीतिया।
वाय हत्थ राझू चिता जो चिनी राझू चिना जो चिना
दाहण हत्थ लाइया लाम्बू भाइया गल्ला होइ वातिया।
दास्नी नी लाणी फुलमू कच्चया कन जानी कुवरिया कन
व्याही करी हुंदे वईमान सइआ गल्ला हाइ वीतिया।

आग की लपट जस कह रही हा—कुवारा स प्रेम नहीं करना चाहिए क्योंकि वहा किसी अन्य स विवाह रचाकर निष्ठुर हा जात ह।

रूपणू पुहाल चम्बा क इस प्रम गीत की तरह लाहाल स्थिति का प्रम गाथा गीत रूपणू पुहाल म प्रम का अन्य रूप का परिचय मिलनी ह।

रूपणू चम्बा जनपद का एक पुहाल (गड्‌रिया) है। प्राय गद्दी लाग छ मास क लिए अपनी भड वकरिया का हरी भरी चरागाहा म दूर दूर तक ले जात ह। रूपणू भी भेड़ वकरिया का लकर सग्न ग्राष्म-काल म पागी भरमार क ऊच पवना की आर चला जाता ह। अन्य पुहाला की भाति वर्षाकाल की समाप्ति पर वह भी भेड वकरिया सहित चम्बा म अपन घर स हाता हुआ शरद समय व्यतीत करन के लिए मदानी क्षत्रा की चरागाहा की आर प्राय चला जाता ह।

पर एक वार रूपणू भरमार स वापस लाहाल नहा आया। उसकी सुन्दर युग पत्नी उसकी प्रतीक्षा कर रही ह आर दवी-दवताआ की मनानिया कर रही ह।

मरु वा पुहाल घर इल हा—
रूपणू दा आया सुखान्ना हा।
रूपणू पुहाल घर ईला हा—
शिरनी ना दनी नुआला हा।
कालका ना वकर चढ़ानी हा—
कनगा ना भरली मनारा हा।

रसा त वदामा सका भणा हा
चित्त मन कुस कण लाना हा।
जला गया रसा रा चेता हा
दिल मरा जला नादा हा।
सव ता पुहाल घर आए हा
रूपणू दा आया सुखसात हा।
मरा-तरी ढिक्नू दी जाड़ा हा
कुना निंदि वरिए वउड़ी हा।

उमका प्रमिका की प्राथना स्वीकार हा जाती ह। रूपणू इस वार घर आ रहा ह। रेवड़ की सख्या म कुछ कमी दखकर युवा पत्नी उपालम्भ भी दती ह

धार धार कुत्तर घुघार हा
आया मर रूपणू दा डरा हा।
वकरी चुरासी भड़ा आसी हा
रूपणूआ तेरी वदमासी हा।
नाने नाल टिमरू वणाला हा
जली मुआ धरमो वणोरा हो।

भरमार म रूपणू की उच्छृखलता का उसकी युवा प्रेमिका को पता है इसलिए वह उस लाहाल वापस जाने से राकती ह।

रूपणुआ लाहाल मत जान्दा हो,
दोस्ती दा मजा वरसान्दा हा।
ता कन किसा सक्किया भणा हा
कुण कुडी लाहाला जा नीणी हो।

रूपणू की प्रमिका उसे अपने घर लाहाल जाने स राकती है। वह भरमार की दा वहना स प्रम करता ह। उनम स एक वीमार हो जाती ह। वह वहाना वनाकर वैद्य क रूप म प्रमिका क घर जाता ह। एक हाथ स रागी के हाथ की नाडी दखता ह आर दूसरे हाथ स उस जा भ्रम ह उस दूर करने क लिए उस वप वह भरमार ही रुक जाता ह। दूसर वप उसक साथी पुहाल फिर उसकी भड वकरिया लकर पहुच जात ह आर उस घर लाटना पड़ता ह। उसकी प्रमिकाए पुकार पुकार कर कह रही ह—रूपणू, लाहाल मत जाआ।

रूपणुआ लाहाल मत जान्दा हो
दास्ती रा मजा वरसान्दा हा।
कुण कुड़ी सखा वमारा हा
हथ छतरी मुन्हे झाली हा।

इकहथ रागणा दा नाा हा
जनमुआ ण् वणा बहन्ा हा।
इक हथ मगी दा डाली हा।
रूपणुआ लाहाल मत जान्दा हा।
दास्ती दा मना वरसान्दा हा
भड्ा पाया लमा डरा हा।
जाना मर रूपणू दा टरा हा।
रूपणुआ लाहाल मत जान्दा हा
दास्ती दा मना वरसान्दा हा।

धोबन और राजा का प्रेम इसी तरह का विचित्र गीत गाथा कागडा जनपद और चम्बा जनपद म धावन आर राजा क प्रेम की लोकप्रिय ह। इस गाथा गात म एक धावन जाति की युवा सुन्दरी आर चम्बा राजघरान क किसी पुराने राजा की प्रणयगाथा का वणन ह। धावन की असाधारण रूपराशि दखकर राजा माहित हा गया। राजा न धावन का रानी बनान का फसला कर लिया। धावन बार बार अनुनय विनय करता रहा कि वह राजमहल क याग्य नहा। वह एक निम्न वग स सम्बधित ह। परन्तु राज हठ क सामन उसकी एक न चली।

महला की रानिया भला कम यह सहन कर सकती थीं। उन्हान दासिया स कहा कि वह चूरी म महुर (विष) का चुरकी मिला द। चूरा (पटा) का ग्रास खाकर उस पर विष का प्रभाव हान लगा आर वह मर गइ। धावन का जलाने की अपक्षा सुन्दर कफन म बाधकर नदी जल म प्रवाहित कर दिया गया। दूसरी आर धाबी कपडे धो रहा था। उसन मृत स्त्री की लाश का पहचान लिया। यह ता उसकी धावन थी। कितनी हृदय विदारक आर दिल को कचाटन वाली घटना ह। उसी लम्ब गाथा गीत के कुछ चुन हुए अश अपनी कहानी आप कह रह ह

काला घाघरा सिला क हाय सिला के
हा धावन पाणिय जा गइ ए तरी साह
हा धावन पाणिय जा गइ ए
धावणी घडा रक्खया हाथ रक्खया
हा राजा रखिया आ गद्दी म तरा साह
काला घाघरा सिला क हाय सिला क
हा धावन पाणिय जो गइ ए तरी साह
हा धावण पाणिय जा गइ ए।
धावण घडा चुक्कया हाथ चुक्कया
हा राज वाणा त पटरी तरा साह
हा राज वाणा त पटरी तरी साह

काला घाघरा सिला क हाय सिला क
हा धावण पाणिये जा गइ ए तरी साह्
हा धावण पाणिय जा गई ए तेरी साह्
छड द रानया वाणी हाय वीणी
हा मरी जात कमीणी म तरी साह्
हा मरी जात कमीणी, म तरी साह्
काला घाघरा सिला के हाय सिला के
हा धावण पाणिये जा गइ ए म तरी सोह्
हो धावण पाणिय जा गई ए।
खबर करा महल राणिया हाय राणियो
व राज धोवण ल्यादी तरी साह्,
ये राज धावण ल्यादी तेरी सोह्
काला घाघरा सिला क हाय सिला के
हा धावण पाणिय जा गेइ ए।
हा धावण पाणिये जो गेइ ए।

× × ×

दूजी पिड्डी वणाइ हाय बणाइ
आ बिच जहर मलाया म तेरी साह
आ बिच जहर मलाया
काला घाघरा सिला के हाय सिला क
हो धोवण पाणिय जा गइ ए म तेरी सोह्।

× × ×

न मरी धोबण जा फुक्कया हाय फुक्केयो
हो धावण काली भी न हाए म तरी सोह्
सीन दा पिजरा वणाया हाय वणाया
हा नगीया रूढाइ म तरी साह्

× × ×

धोबिय पिजरा सह फडया फडया
हा धोवण कड्डी बो न्हलाइ ए म तरी साह्
हा धावन कड्डी बा न्हलाइ ए
धाविय पिजरा सह खाल्या हाय खोल्या
एह बच्चया दी माई ए म तैरी साह्
एह बच्चेया दी माइ ए।
काला घाघरा सिला के हाय सिला के

धावण पाणिय ना गई ए म तरा साह्
धावण पाणिय जा गइ।

ऊच नीच का परवाह राजा नही करता। वह धोवन क रूप लावण्य पर आसक्त है। धावन की मृत्यु हमारे चरमरात सामाजिक ढाच पर एक करारी चाट ह।

इस लाक गाथा गीत की लय ताल भी अनूठी ह। हाय सिला के म तरा साह् की पुनरावृत्ति आसक्ति आर करुणा के भाव जाग्रत करता ह।

राजा और गद्दन इसी तरह का प्रेम परन्तु इस गाथा गीत स हटकर नायू गद्दण आर राजा हरिसिह का कागडा चम्बा जनपद म लाकप्रिय ह। परन्तु अब तो सार हिमाचलवासी इस प्रम गाथा गीत का बड़ चाव स सुनत ह।

गुलेर क राजा हरिसिह एक दिन शिकार क लिए महला स जगल की आर निकल। माग म एक चरागाह पर एक अत्यत सुन्दर युवा गद्दन दखकर राजा शिकार करना भूल गया आर स्वय उस सुन्दर गद्दन क प्यार का शिकार हा गया। राजा आर गद्दन की बातचीत का जिस ढग स गीत म विचार उभरे ह उनस स्पष्ट हा जाता ह कि दोना का अपने अलग-अलग जीवन से प्यार आर गव है। राजा के महल आर उसका वैभव प्यारा गद्दन को अपना पहनावा रहना सहना आर घुमक्कड जीवन प्यारा। अन्त म राजा उस गद्दन को अपन महलो की पटरानी बना लेना है आर दोना क अब समाप्त प्यार का परिणाम सुखद है। इस प्रसिद्ध गाथा गीत की य पंक्तिया हृदय पटल पर एक अमिट छाप छाड जाती ह

दई के नगारा आ राजा हंड जा चल्या
लाक तमासे जो आए जिया जो
मेरेया ओ हरिसिया राजेया।
रिलुये द वण राजा जु चढिया
वह हेडे जो चल्या
गद्दन तमास जा आई
लागा दे बाग गद्दन बकरिया चार दी
राजे दीया नजरिया पई जिया हा
मेरिए हीरा बो गदेटेडिए आ।
चार बो पयाद ओ राज दडबड भेज
ओ तेरी सो दडबड भज ना
गदणी जा पकड़ मगाए निया हो
मेरिए हीरा बो गदेटड़िए।
भितलु दित्ता चलाई
भुख्या दा साणा छड़ी बो दणा

पलगा दा साणा जो आ ना
मरिय वाकीय गद्दण।
गद्दन–पलगा दा साणा राणिया जा वणिया
भुइया दा माणा प्यारा वा
मरिया वाकिया राजिया।
राजा–ऊना दा चोला गदणी छडा वा दया
रशमी पुशाका जो आ बो,
मरा हीरा वो गदटडिए।
गद्दन–रशमी पुशाका राणिया जा वणिया
ऊना दा चाला प्यारा वा
मरिया वाकिया राजिया।
राजा–रीढिया दा रहणा छाड माइए गद्दण
म तरी सा छा माइए गद्दणे
आ मरिय हीरा बा गदेटडिए।
गद्दण–रीढिया दा रहणा असा गद्दिया जा सजदा
असा गद्दिया ना सजदा
लगी जादी बुरी आ मेरिया वाकिया राजिया।
एक दिन राजा छली छली पूछता
राजा–म तेरी सा गद्दणी पा पुच्छ ना
गद्दी आ प्यारा कि म जिया हा
मरिए हीरा बो गदटडिए आ।
गद्दण–आ थाडी ता थोडी राजा साभा ही जा लगदी
म तेरा सा साभा दी ज लगदी ना
गदिए दी बज्जी नादी छुरी जिया हा
मेरेया आ हरिसिया राजया।
राजा–आ छाडी ता दण ओ गदणी प्हाडा दा ज हडणा
कि तरी सा प्हाडा दाजे चलणा ना
पधर गुजरे ना जाणा जिया हो
मरिए हीरा वा गदेटडिए।

सारी घटनाओ का विस्तार एसे गाथा गीता म प्राय उपलब्ध नहीं परन्तु विषय वस्तु का साराश इसम सहज ही उपलब्ध हो जाता ह।

राणा माधोसिह कई बार सच्च प्रेम की प्राप्ति म अनेक जोखिम भी उठाने पडते ह। जान भी गवानी पड़ जाती है। ऐसा ही गाथा गीत कोटखाई (जिला शिमला) के राणा माधोसिह और सारी रियासत क राणा की राजकुमारी क अमर प्रम का ह।

इस गाथा गीत के अनुसार राणा माधोसिंह और राजकुमारी नयणा एक दूसरे को चाहते थे। परन्तु इस प्रेम के मार्ग में राजकुमारी के जिद्दी और हठी पिता राजकुमारी का विवाह कहीं और करना चाहते थे। कोटखाई के राणा अधिक शक्तिशाली थे। जुब्बल के राजा भी उनके पक्ष में थे। सारी एक छोटी सी 3-4 गांव की ठकुराई थी। दो शक्तिशाली सामन्तों के सामने जब राजा की एक न चली उसने तान्त्रिकों से कोटखाई के राणा पर मूठ चला दी जिसके कारण राणा की मृत्यु मार्ग में हो ही गई परन्तु कोटखाई वालों ने (बाराती ने) यह रहस्य तब तक नहीं खोला जब तक राजकुमारी का डोला ब्याह कर वापस कोटखाई की सीमा पर नहीं पहुंच गया। जब राजकुमारी को यह मालूम हुआ कि उसके पिता ने जानबूझकर जादू टोने से उसके प्रियतम को समाप्त कर दिया है तो उसने जल उठाकर शाप दिया कि पिता का राज्य निर्वंश खत्म हो जाए और सारी का चिह्न तक न रहे। ऐसा ही हुआ।

तेरी कोटखाई दे साहिया जन्मी वधाई
जुवरी दई शीरी ओलीय लाई।
धाची किया पालिया दूधा रा न खुदा
तेती ऊवा थागा बाले वय रा ऊना।
एक ब्याह कुमारशणा दूजा बैया वडोली
तीजा ब्याह माधूसिंहा कदूपणा ओली।
बूढिय नानीय कभी चई न मूइ
सदा चई सदीय मन्तो पूछणे खि हुइ।
ब्याहा जाणो कुमारशणा दा दूधा री पणेली
सराहट सयवी मित्री जुड़अ मूशा आ वरली।
पार जोन्हा ले नाणीय तरी आखिर कूए
चूल्हि पाछा नी आणदा काण कुमारशनु दूए।
दइ हालि सराहटे री जाणी जुहणा न बानी
राधा होलि चाजारी हालि सरसू काली।
धारि जाणी वरसाडी हुलमूआ घोडा
खरी डालिय राज रा शीहरा चाडा।
शीरा गाशुआ शीहरा दिन्दा माधुसिंहा खाली
तब पोरे समझी बुढी नानीया री बोली।
खोटे आ ताह रापुआ कुणी भी न धीजा
माधुसिंहा री पलगी पाणी वागरीय भीजा।
नहीं दिन्दा वेटडी राजा वेटडी का तरी
इसा पाकडू टापीय जा जुब्बला री सैरी।
माधुसिहो री परजा खाली बस्ता माटी

दखण ज दइ न छाया डावलीए खाटी।
टाहू री जाणी चुजरा ख उलटा वाजी
भाहिदि छाटआ पलगा मर दखि लणा राजा।
दइ रूआ सराहट रा खालआ जाया र कालआ
राजी हुआ सुरगवाभा दइ सराहट री जालआ।
छरीय तू माहतीव पाछडू जा फीर
मोती रा विसरा काडू मर पाछुए तार।
देइ रूआ सराहट री दाढि दशा दा न्यारी,
काटखाइ न दखवा मर माइ री क्यारी।

अमर वहीं प्रम हुआ जिसम वाधाए आइ तूफान आए या प्रमी युगल ने विपरीत परिस्थितिया म मृत्यु पाप्त की। एसा ही काटखाइ क राणा क साथ हुआ।

हिमाचल प्रदेश क सभा जनपदा म प्रमगाथा गीत अत्यन्त लाकप्रिय है। प्रम तो व भी करत ह जा मिल जात ह आर सुखी जावन व्यतीत करत ह परन्तु लाककवि प्राय एसी प्रेम कथाआ स प्ररित या प्रभावित हाना ह जिसम असाधारण घटनाआ का समावश हा गया हा। जस काइ उच्च घरान की सुन्दरी किसी अन्य जाति या निम्न वग क साथ स्वयवर रचा द। जनपदा म एस असख्य गाथा गीत मिल जाएग जिनमे एसी घटनाए वर्णित ह जा जनपद शहरी प्रभाव स दूर रहे वहा क लोकजीवन म अब भी इन परम्परागत सचार माध्यमा का महत्त्व उतना ही ह जितना पहले था। हिमाचल प्रदेश म कुछ ऐसे गाथा गीत भी सुनन को मिल जात ह जिनम लाक गाथा गीत की कुछ विशेषताए आर तत्त्व ता मिलत ह पर इनम स बहुत सारे पुराने गाथा गीता की पूरी गान पंक्तिया उपलब्ध न हान क कारण व अपूर्ण लाक गाथा क रूप म भी हिमाचलवासिया के मन प्राणा पर छाए हुए ह।

हिमाचल के इन असख्य गाथा गीता म सुमित्रा' शाता हीरा कमला बांठिण गापी नयना लाडी बीदि जियालाल, सुन्नी भूखू, जाडमा पति सेवा दवी मणीए-दणेरकिए गगी सुन्दर दासी लाड़ी नानू लाडी अछरी फिरका लाडी याबू जोगिन्दर सुमित्रा सायणा सुरसता मालरू, हरिसिह-काला गदटडी इत्यादि एस असख्य अधूरे गाथा गीत यत्र-तत्र जनपदा म बिखरे पड ह जिन्ह मधुर स्वरा आर लोकसगीत म बाधकर युवा एव वृद्धवर्ग आज भी किसी उत्सव मेल टेल क आनन्द का गाकर चार चाद लगा देते हे।

कुजू चचलो—युवा कुजू एक सम्पन्न माता पिता की सन्तान थी। चचलो मध्यम परिवार की युवा वटी। दाना का परस्पर प्रम हो जाता ह। परन्तु गाव वाला को उनका इस तरह मिलना-जुलना अच्छा नहीं लगता। वे इस साधारण सी घटना का षड्यन्त्र का रूप द दत ह। मजबूर होकर कुजू क माता पिता कुछ दिनां के लिए उस कहीं बाहर भजने के लिए विवश कर दत ह। वह रोप म आकर सना में भर्ती हो जाता है। चचलो का प्रेम फिर भी उसके हृदय पटल पर सजीव था। बहुत दिना बाद कुजू छुट्टी लकर

घर आता ह। घर जाकर उसे मालूम हो जाता ह कि बेचारी चचला का विवाह उसके परिवार वालो ने उसकी इच्छा के विरुद्ध कही और गाव म कर दिया ह। कुजू पर जैसे पहाड टूट पडा हो। उसे बहुत ठेस लगी और छुट्टी अधूरी छोडकर वह वापस चला गया। कहते ह फिर कुजू कभी वापस नहीं आया। ऐसी प्रेम कथा को लोककवि ने प्रभावशाली भाषा म बाधने का प्रयत्न किया ह। यह गाथा गीत भी गगा सुदर की भाति बातचीत के रूप म गाया जाता ह

कपडे धोआ छम छम रोआ चचला विच के बा नसाणी हो।
हाय वो मरिए जिन्दे विच के बा नसाणी हो।
कपडे धोआ छम छम रोआ कुजुआ विच बटण नसाणी हो।
हाय वो मरिए जिन्दे विच बटण नसाणी हो।
गोरी गोरी बाह लाल चूडा चचलो विच के वो नसाणी हो।
हाय वो मरिए जिन्दे विच के बो नसाणी हो
कुजू—लाके तो गलादे काली काली चचलो तू ना मरुए दी डाली हो।
हाय वो मरिए जिन्दे तू ना मरुए दी डाली हो।
चचलो—राती बो बराती मत इन्दा कुजूआ।
बेरिये भरिया बदूका हो।
कुजू—मेरी जान दा गम मत कर चचलो
चम्बे बन्दूका भतेरी हो।
चचलो—हत्थाकेन हत्थ मत लादा कुजआ हत्थ सोने दी गुट्ठी हो।
हाय वो मरिए जिन्दे हत्थे सोने दी गुट्ठी हो।
कुजू—सोने दा गम मत कर चचलो चम्बे सोनाबथेरा हो।
हाय बो मरिए जिन्दे चम्बे सोनाबथेरा हो।
चचलो—बाही क्ने हत्थ मत लादा कुजआ बाही चादिए दे गजर हो।
हाय वो मरिए जिन्दे चम्बे चादी बथरा हो।
कुजू—गजरया दा गम मत कर चचलो चम्बे चादी बथेरा हो।
हाय वो मरिये जिन्दे चम्बे चादी बथेरा हो।
चचलो—तू ता चल्या परदेश कुजूआ
मिजो देई जा निशानी हो
हाय बो मरिये जिन्दे मिजो देई जा निशानी हो।
कुजू—पज बो रुपइया तिजो नाम चचलो
अगूठी देन्दा निशानी हो।
हत्थ तेरे लटे दा रूमाल चचलो
रग दिखाई लो असमानी ओ मरिये जिन्दे।
गोरा गोरा तेरा मुह चचलो उत्ते बालू।

उत्त वालू निशानी आ मरिय जिन्दे।

चचला–मरा वा चना नी भुलाया कुजूआ

मिजा करी लणा चन हा।

हाय वा मरिय जिन्दे मिन्जा करी लणा चन हा।

कुजू–यह ता रहणी निता दी यार चचला

भल मरिया जाहन्गा हो।

हाय वो मरिय जिन्दे भाव मरिया जाहन्गा हा।

चचला–नित दी हाइया सलामा कुजूआ शिवजी करला रखवाली हो।

हाय वा मेरिये जिन्दे शिवजी करला रखवाली हो।

सना स जब छुट्टी लेकर कुजू घर आया आर उसे मालूम हुआ कि चचलो न शादी कर ली ह। उस वहुत गम हुआ। उसी करुणा को प्रकट करत हुए यह कहता ह

मरी तरी प्रीत पुराणी चचलो

तू ता कदर न पाणी हा।

हाय वा मेरिये जिन्दे तू तो कदर न पाणी हो।

तेरे पिछे हाया वदनाम चचलो

किजो बणदी बगानी हा।

हाय वो मेरिय जिन्द किजा बणदी बगानी हा?

आर फिर कुजू हमेशा क लिए चम्बा छोडकर चला गया।

मैना और मिया प्रम एक ऐसी भावना ह जिसके बिना यह ससार नही चल सकता। प्रभु प्राप्ति क लिए भी प्रेम तत्त्व की गहनता एव तीव्रता अत्यत आवश्यक है। इसलिए लाक जीवन म धार्मिक गाथा गीता क साथ साथ प्रेमगाथा गीता को भी महत्व पूण स्थान मिला ह। लाककविता लोकवाणी से ही जीवन प्राप्त करती ह आर बदल म उसे जीवन प्रदान करती ह। लोकवाणी जा परिश्रम और प्रम के लिए विवाह आर अन्य आनन्द प्राप्ति क लिए उपयुक्त समझी जाती है वह कविता के लिए अच्छी क्या नही हो सकती। इन प्रेम गाथा गीता म कविता या महाकाव्य क सभी गुण विद्यमान रहते ह।

ऊच नीच अमीर गरीब जाति पाति धर्म दश गोरा काला जस भद भाव कवल तब तक ह जब तक प्रम नही हो जाता प्रेम होते ही सारी रुकावट दूर हा जाती ह। सभी जानते है कि पुराने समय मे जाति के बधन अधिक क्रूर सख्त आर तर्कहीन थे फिर भी राजा धोबन से या साधारण से प्रेम भावना का प्रदर्शन कर सकता था। साधारण जनता क लिए एक असाधारण घटना वन जाती है। तभी ता लोककवि अपन अमर वाला द्वारा एसी भावना का अमर बना देते है और लोगा क दिखावटीपन का व्यग्य वाणा द्वारा प्रस्तुत करता ह। ऐसी ही एक घटना है तथाकथित ऊचे घरान के एक मिया साहव किसी सुन्दर चमारिन युवती का दिल द बैठे आर उसी के हाकर

रह। एसा तर हुआ नव समाज अन्तजातीय विवाह बर्दाशत नहा करता था। स्थानीय समाज सहज ही ऐसी घटना पर छाराकशी करता ही ह किन्तु प्रमिया का इसका परवाह कहा? फुसत कहा? चम्बा का इस सुन्दर लघु प्रेम गाथा का लाककवि न दरिया का कूजे म बन्द करने का प्रयास किया ह—

वार घर मरा पार तरा हा
विच नदिया बगारी तरी सा।
मरा पतण दा दारु हा
मिया रूटी मन चादा तेरी सा।
थोड मिय हल भी नी वाहद हो
थोड चपली बणान्द तरी सा।
थाड़ मिया कुसिया पर वाहन्दे हा
थोड़ चपली वणाद तरी सा।
मिया वटा वान्ना द पहर हा
मैना फुलमानी तेरी सा।
फुलक पकाइ मना चूर हा
सुखे कुत कने खाण तरी सा।
खन्नी रोटी दही दा कटारा हो
चली मिया जां नुहारी तेरी सां।
म नहीं खाणा दही दा कटारा हा
मेरी सरद तासीरा तेरी सा।
धियाडी धियाडी उगलिया येहन्दा हो
राती तुग कुटारी तरी सों।
राती मुआ चपली वणादा हो
दिने मिया वणी वोहन्दा हा तेरी सा।
तिहा कुकन्याले दी छेडा हो
तिहा मिया दी तडेडा तरी सा।
छेला दिखी भुली किजो गेया हा
मैना जाति दी चमारा तरी सा।

प्रेम की अमर भावना लोगा के ठट्ठे मखौल और व्यग्य की परवाह नहीं करती।

हरिसिह का प्रेम इसी तरह चम्बा की एक अन्य प्रम गाथा छोटे से रूप म लोकप्रिय है। यह प्रेम गाथा हरिसिह और कोला गद्दन की ह। युवा हरिसिह एक युवा गद्दन से प्रेम करता ह। वे परस्पर सलाह मशविरा कर रहे ह। उन्हे उनके मा बाप मिलने नही देते और न किसी कारण उन्ह विवाह करने दते ह। एक बार वे दोना कहीं रात

क समय भागना चाहत ह। परन्तु जब व पुल पर जात ह तो वहा पुलिस का पहरा हाता ह। पुलिस क भय स व रुक जात ह। हरिसिंह अपना प्रमिका स कहता ह कि नदी का तर कर उस पार चल जात ह। परन्तु प्रमिका कहता ह कि भयानक काला रात म नदिया का पार करना खतर म खाली नही। किन्तु प्रम क आग उन्ह कुछ भी कठिन या असभव नही दीखता। वह तर कर नदिया पार कर लत ह आर अनजान राहा पर चल जात ह। इस लघु पर अथपूण गाथा गीत म लाककवि न सुन्दर शब्दा म इस प्रम का वणन किया ह

पुला पर पुलसा दी जाटी
आ मरिया हरिसिह दरा हा।
पुल लघना कि न्णी तारी
वा मरिय काला वा गदरटडिय'
हा पारलया हटवानिया
तरी हट्टी ता विक्दा लोटा
तरा मन कपटी दिल खाटा।
आ मरिया हरिसिहा दरा हा।
उपरला धारा लगेआ ज सिणा बा मुणुआ
चद्दर फटता टलाया पाणी
दिल वा फट ता किया साणा'
गो मरिय काला वा गदटडिय।
हा धा ता वन्दिय धरणी
धा ता वढणा राखा
परदे कन गल्ला हुन्दाया वा मणिय
नाता लाक पटकान्द न खाका
बो जानिया हरिसिहा दरा हा'

एस अनेक अधूर पर गम्भीर गाथा गीत हिमाचल प्रदश के सभी जनपदा म बिखरे पडे ह। म चाहूगा कि जा कुछ गाथा गात म एकत्र कर सका शेष गाथा गीता को सावधानी से सगृहीत करन की ओर भी प्रयास किए जाए।

डॉ चुन्नी लाल इस गाथा गीत म किन्नार जनजाताय जनपद की प्रेम गाथा का सजीव चित्रण हे। किल्वा गाव म पानी के नाल के पास ही सुन्दर बगला म एक हस्पताल भी है। इसमे एक डाक्टर चुन्नीलाल कार्य करते थे। उसन इस गाव म कइ वर्ष काम किया। यहा पर थडगार वश की एक सुन्दर कन्या जडमापति स डॉ चुन्नीलाल का प्रेम हो गया। व दोना पहल चोरी छिप फिर सबके सामने प्रेम करत रहे। सारे गाव म उनका परस्पर प्रेम प्रसिद्ध हो गया। जाडमापति की एक सहली थी जिसका नाम कृष्णभगति था। एक दिन जाडमोपति न कृष्णभगति का कड जहा घर

स दूर उनका मशशाखाना था साथ चलन का कहा कि वहा चलकर जमान का दखभाल भा करग आर पशु भा चराया करग। कृष्णभगनि न कहा कि चला ता चल पर खान पान क लिए क्या ल जाएग। जाडमापति न कहा कि साथ म आगल (स्थानीय अनाज) का आटा ल चलग। उस आट का भलाभाति छान लग। ठाकरिया माश की दाल वनाएग। य बातचात करन क बाद दाना सहलिया कड चनी गइ। वहा पर कुछ दिना वाद जाडमापति सख्त बामार पड गइ। जव डॉ चुन्नालाल का उसका बीमारी का समाचार मिला वह वहुत परशान हुआ। वह रातारात लालटम लकर कड क लिए चल पड़ा। लकिन वामारा का प्रकाप किसी तरह कम न हुआ आर एक दिन जाडमापति चल वसी। डॉ चुन्नीलाल अपनी प्रमिका की असामयिक मृत्यु से बहुत व्याकुल हो उठे परन्तु करत भी क्या?

वानतयाश क लीडया जाडती कुलडु थुसका।
वातनयाश क लीडया जाडती कुलडु थुसका।
जाडती कुलडु थुसका वागुलो देन शाड। जाडती
वागुलाचु दन शाड याठड ली अस्पताला। वागुलाचु
याठड ली अम्पताला डॉक्टरा वात हात ताश। डाठड
डाक्टरा वावू ता लोनसा देसो डली खराचा डाक्टरा
देसा डला खराचा देसा सदू ल छाडा। देसा
दसा सदु ली छाडा नामड छदा ली दुना। देसा
नामडु ता ली लानमा चुनीचु लाल डाक्टर। मामडु
चुनीचुलाला डाक्टर नीछाल कोनीचा हात ताश। चुनीचुलाला
निछाल कोनीचता लानमा थड गारू ले जाह। निछाल
थड गारू ल जाहे नामड ता ठ दुनोश। थड
नामडु ताले लानीमा वाण्ठीना जाडमोपति। नामडु
वाण्ठीना जाडमापति नीछाल कोनीच हाथ दुनोश। वाण्ठीना
नीछाल कानीच ता लानमा वड वाशटू जाहे। नीहाल
वाड वीशटू जाह वाण्ठीन कृष्ण भोगोती। वाड
जाडमापातास लोतेश कानीचु कृष्ण भागोती। जाडमापतिस
कोनीचु कृष्ण भागाती पाइ काण्डयो वीते। कोनीचु
पाइ काण्या बीत काण्डया जमीयू पारी। पाई
काण्डया नमानचू पारी साथी शालडु पुम पी। काण्डया
कृष्णा भागातीस लाताश कानीच जाडमापाती। कृष्णा
कानीचा जाडमापति वीत तायाली रिडताई। कानीचा
वीते ता रिडताइ शील पु गा ठ फीत। बीते
शील पु गा ता फीन किलव आलगाचू चीसड। शील

क्निया आल्गाचू चासड चल लड्स चलयालया ससार। क्लिया
चललड्स चलयालया समार गर्न्स चलया लया फीन। चल
र्टो चुन्नीलाल रानाया न्नू राना काण्ड। डॉक्टर
रानीया चू राना काण्ड लानटनु छागायडसा। रानाया
रानाया चू राना काण्ट कानचू पीरडा भासु भाम। राताया

इस गीत म यहा म नया मान आ जाता ह। एक गाथा गीत क अनुसार वह बीमारी स मर जाती ह। परन्तु दूसर पाठान्तर क अनुसार डॉ चुन्नीलाल अपनी प्रमिका को काड स उठाकर उस डाटा म अस्पताल उठाकर ल जाता ह। आठ आदमियो न उस उठाकर काग गारडू म आराम दिया। फिर उठाकर अस्पताल क बगल म लाए। अपन कम्पाउडर जहरसिह को सवर तान चार आर दिन का सात वार दवाइ दने का कहा। चुन्नीलाल का इतना प्रम दखकर प्रमिका गद्गद हो उठी। वाली— प्रिय डॉक्टर! यह रोग स ठीक हा जाऊ तो इस जन्म का बात क्या परलाक म सत्त रखूगी। परन्तु जब जाडमापति ठीक हो गइ फिर बदल गइ। ठीक होकर वह काठिस्याना की बहू बन गइ। जब उसस पूछा तो कहन लगी वह इस बाहर क आदमी स प्रम नहा निभा सकती। चुन्नीलाल को बहुत ठस लगी। वह फिर हमशा क लिए किलवा छोडकर चला गया। वहा स गाथा गीत म मोड आया वह दूसरा पाठान्तर इस प्रकार ह

कानिच या डाक्टर!
जा पीरड हाटयामा तु छ गोरी बसु क्यड्?
छिमा चू इमान ताताऊ।
हुनागु बरड् जडमापाती इमान मा ताता।
छिसाचु इमान बसुक्यड् जुछेआ मा रख्यायाशू।
हुनागु बरड कोठिस्याना नमूशा।
जाडमापातीस लाताश—
अड भाग मा वियु
न दर्शी काचा अड भाना मा वियु।"
चुन्नीलालस् लाताशू।
गगाजीनु गुरबाई अड सुडचनूमा
मुनरिडजु दन्द था ल साइ।
इमान हथरड बमान्।
हद् लाशिशू दयन इमान मायच रन्ऊि।
अड च देऊ का उयड अड सानी बितरी।
दुनिया ता बेमान् कि बमान् हाल।
आमचु नेरड् शेड् टी गालिसु प्रानु यन्नड
हुनागु बैरड् शाइ् पुरई बेइमानी।

न्मापातियु कनुउ जड़् गुगरू।
मियन् चन लानाश् दा पातलू गुगरू।
मि मा खुशिश वनड ज गुगरू यगू छान्।
चुन्नीलाल हिम्मत दन
नडमा त्रिग वग्ड ख्याया।

इस पाठान्तर की भाषा शैली ताल और लय म भी पहल स काफी अन्तर ह। प्रेम म कवल मिलन या मृत्यु ही नही कइ बार बेवफाइ की ठेस भी सहना पडता ह। यह इस गाथा गीत स स्पष्ट हो जाता ह।

उपर्युक्त गाथा गीत म एक पुरुष को एक सुन्दरी के हाथों ठोकर खानी पडी। परन्तु प्राय पुरुष भी पत्थर दिल होत ह। उनम किन्नौर जनपद की नगी गगा सहाय की प्रेमगाथा भी उल्लेखनीय ह।

1890 ई मे टिक्का रघुनाथसिह ने नगी गगा सहाय को भीतरी टुकपा परगना का पटवारी बनाकर भेजा। वहा पहुचकर उसका प्रेम थागी ग्राम के नगी न्योस्चिउ की अत्यन्त सुन्दर बेटी नरयुमपति स हो गया।

टीका साहीबस लातश अग हुशियारी हम तन?
हुशियारी न लानमा पागी पागतु छग
पागी पागतु छगा अग पंमाशी विरायन
पागतु छागस लानश गु तुकपा मा बिग
गु तुकपा मा बिग गु शूने वितक।
टिका साहीवस लातश अग हुकुम म रानचिस
अग हुकुम म रोनचिस न हाला रिगतन?
डाक रिंग रिंगि बीमा खाचु ठागी
खाचु ठागी न्योकचे नगियू गार
न्योस्चेउ जय नरयुमपति बाठिन।
नरयुमपति बाठिन इवाक्सी ढलिग ग्योस।
गगा सहाय मुंशी ध्याक्सी जिरज्या ग्योस।
नरयुमपति बाठिन लातश गु किन रग वुतक
गगा सहाय लातश कि अग रग ठ जइन
अग परमि को चग युल श्रालु चिकेन
किनु ताग तोग के ता वरक्या तापस लचक।

जब मुशी गगा सहाय की उस गान से तबदीली हो गइ तब नरयुमपति भी उसक साथ जान को तैयार हो गई। परन्तु गगा सहाय नही माने। वह यह आश्वासन देकर चला गया कि वह उसकी खबर देखभाल दूर स करता रहेगा।

परिशिष्ट

कुछ प्रसिद्ध गाथा गीत

1

गद्दियों का लोककाव्य

ऐचली

जल थल धरती गुरुए न्यार
नाम गुरु अवतार।
न थी धरता न था कास
न था मरू क्लास।
न थिय पाण न थिय पाणी
ता थिय गुरु न्यार।
न थिय चन्दर न थिय सूरज
ता थिय गुरु न्यारे।
न थिय तारा न थिय भ्याणू,
ता थिय गुरु न्यार।
वुध ता गुआइ मेरे गुनाजरु न
गुगले री धूणी धुखाइ।
गुगले री धूणी धखाइ गुरुए
स धूणी भसम कराइ।
सेइआ धूणी गुरुए भसम कराइ
अग मला मली लाइ।
अग मली मली मलूणी कराइ
तिस मलूणी री मूरत बणाइ।
पढी ता गुणी गिता गीता दान
खडी हाई मनसा दई।
बारह बरहे दी हाइ मनसा दइ

ता नदी पर न्हाणा जाग्नी।
कपड उतार दग्ग करया स्नान
गुरुए दा भृप्टा लगाइ।
नाज गुरुए दा भृप्टा लगान्
मनसा हाइ परा भारी।
न्क माह गणदे दुआ हार हाइ नादा
आया दसवा महीना।
पहली आसा न्सव महान
मनसा जो लगी प्रसूना।
पहला पीना। दइ अग मराड
दूजी पीड़ा छानी तरान्।
पहली आसा दसव महीन
नमया व्रह्मट क्याला।
सद्द बहु पन्त रास गणाइ
ऐ बेटा अरु इसरा हाला।
जनम रा सूरा करम रा पूरा
राज इस खटारा नाही।
दूजी आसा दसर्व महीन
जनमया विसनू दुटाइ।
सद्द बहु पंडित रास गणाइ
एह बेटा क न्सरा हाला।
जनमेरा सूरा करमरा पूरा
राज इस खणरा नाही।
तीजी आसा दसव महीन
जनमया भाला महादव'
सद्द बहु पडत रास गणाइ
एह बग्ग क इसरा हाला।
जनमरा सूरा करमरा पूरा
राज इस खाणा जरूरा।
नाज गुरु र घर तिन हाय बट
व्रह्मा विसनू, भाला स्वामी।
यन्ड हाए बट नयान हाए
दिन दिन जात सवाइ।
नाज गुरु हाया विरध सयाणा

कुना लण सिरथी र भार।
खज खुरकी नक चुन्दा
नणा जखर ठंडा पाणी।
हाजर सद्दा मेर ब्रह्मट कयाल
स लला सिरथी र भार।
हाजर खडा तेरा ब्रह्मट क्याला
क्या कम वणद म्हार।
असी हाय वेटा विरध सयाण
तुसा लण सिरथी र भार।
जिजन जध नाग बासकी हटाला
स लला राज म्हार।
बिनन थम्मे नीली गगन कुम्हाला
स लेला राज म्हार।
सिक्ख बरतादा मिर मन्थ मनला
आकडी मनण रा नाही।
फिटक ददा भरा नाज गुरु
जे 'कलजुगा ब्रह्मण हाला।
भूखा कलजुगा बिच ब्रह्मण हाला
पाज कण मगी छुगी खाणा।
हाजर सदाया मरा बिसनु दुटाई।
क कम वणद म्हार।
"असी हाये वेटा रिरध सयाण
तुसा लेणे रान म्हार।
जिस माता रखणी तस पिता भखणा
स लला राज म्हारे।
सिख बरताला वापू सिरे मथे मनला
औकनी भनण रा नाही।
फिटक दिदा मरा नाज गुरु
कलजुगा अचारज होला।
कलजुगा विच अचारज हाला
मूर्खे र कफण उठाला।
"हाजर सद्दा मेरे शिवजी महादेव
से लला राज म्हार।
सिर जट मल पर घुघराला

छण छण करदा स आया।
अमी हाय वटा विरध सयाण
तुसा लण सिरथी र भार।
भन्ना त बकरी रा थठलू व हाला
ता मर राजा ना लना।
ज गाइया महिया रा दोहाला
ता मर राजा जो लला।
'कन लेणा काल ते धाल'
कन लणी बजर सलोटी।
कन लण राजा चन्दर त सूरज
कन लण तारा विहाणू।
चार चीजा शिर लेइ वखसाइ
नाज गुरु हाय छिपन्त।
प्याला जा घाल दिसी भारी
नाज गुरु हाय दिपन्त।
हेठ काला उप्पर धाला
उप्पर वजर सिलोटी।
धालेआ बल्ला भाइया
तू लेणे सिरथी रे भार।
धाले बले वारह सिंग
उप्पर धरती घमाइ।
सम सम भारे धोला लदा
पापे रे बोझ ना लदा
सम सम भारे धाला लदा
लूणे रे बोझे ना लदा।
चन्दर ते सूरज उप्पर समाना
नीले गगन वसाये।
तारा ते भयाणू उप्पर कास
नील गगन वसाये।
सिरथी उपाइ भाले स्वामी ने
रचना रचाणा लाइ।
रात त ध्याडी उपाये
रचना रचाणा लाइ।
भडा ते वकरी उपायी

रचना रचाणा लाइ।
गाआ त महिया उपायी
रचना रचाणा लाई।
चीडू त पखरू उपाय
रचना रचाणा लाइ।
नर त मदीना उपाय
रचना रचाणा लाइ।
बिजन मनुखे ससार न वसदा
मनख उपाणा लाए।
लाहे रा मनख वणाया
भरे मनखा हुगतारा।
नहि भरदा मनख हुगतारा
ता नी वसदा ससार।
चादी रा मनख वणाया
भर मनखा हुगतारा।
नहि भरदा मनख हुगतारा
ता नी वसदा ससार।
साने रा मनख वणाया
भरे मनखा हुगतारा।
नहि भरदा हुगतारा मनखा
ता नी वसदा ससार।
साने रा मनख फिरी हटी जादा
फिर कुस रा वारा आया।
ना गजिए फिरी उपाय
ना गनिए रा वारा आया।
त्र सा सठ वरसा उम्मर उपाया
नहा पाँ घरवार।
थाड नाण र निम्कर फिन्ना
फिरा पाण घरवार।"
गिटमिटनू फिरी उपाय
गिटमिटलू रा वारा आया।
धानू धाइ री धणाटी वणाइ
गुमर र याण वणाय।
स्याहने र वार पार

गिटमिठलू रा लगी लग्गा।
गिटमिठलू लडी लटी वाहद
वही जान्‍ माठ री छाई।
गिटमिठलू हटी फिरी जा‍
ता नही बसना ससार।
माटा रा फिरी मनख वणाया
भोले ने हथा उपाया।
मासे री फिरी जीभ लुआई
भरे मनखा हुगतारा।
ता भरया मनख हुगतारा
ता वसना फिरी ससार।
फिटक दिदा मेरा भोला स्वामी
न ठड नाल धुआकारा।
नगनगा र्ला भूखा जाला
के नेला सकल ससारा?
ढाई गज कपडा फिरी दा लक्कड
मरदिए वेला तू लेई जाला।
पाप ते पुन सच कने यूठ
दुहियो सगे तेरे जाला।
घालआ वला भाइया मरआ
तू लेण सिरथी रे भारे।
एव वसेआ ससार मनखे रा
शिव मेरा वसआ काली धारा।
"कुनी घट्टे वरमा कुनी घट्टे विसनू,
कुनी घट्ट साहवा आए?
इक घट्टे वरमा इक घट्ट विसनू,
तिज घट्टे साहवा आए।
कुनी बन्द तेरा जग ता रचाया
कुनी निना धामा पाई?
"वरम भाव्य मेरा नग ता रचाया
विसनुए धामा पुनाई।
दूर दूर त तेर नानम आए
भरे साहबा रा नयनयकारा।
पूरव दस री घगी मालण आए

आद हा फुलणू चुगाई।
आदिय माल्णा फुलणू चुगाए
घासर हार वणाइ।
दखण दसे रा सिद्ध जागी आया
आंदे जागी अलख जगाया।
आद जागेटूए अलख जगाया
घर माहिय धुप्प धुखाया।
पटुए पटाम्बे बैसक पाये
जोगिए आसरा लाया।
आदे जगेटुए आसरा लाया
जागिए गजा मगाया
जागिए गजा मगाया।
जागिए आटा मगाया।
"आट कूट तेरा मडणा लखाया
ल स्वामी अपणे उधारा।
चाने माहि तर काठ भराए
लं साइया अपणे उधारा।
वडे ता बवरू तरी पूजा चढ़ाए
ल स्वामी अपण उधारा।
घर रचेया मनला रचाया
सुरगे वन्हीं फूल माला।
उन्ने सुन्ने तरी पूजा कराई
ल स्वामी अपणे उधारा।
मण पिदा भग सेर धतूरा
सइया होया मतवाला।
"चार बन्दे तेरी चरचा गाई
ल स्वामी अपणे उधारा।
सव ता सव बन्दे नचणा लागे
तू किनी नच्चदा गुसाइया?
मण खाद्दे ववरू धड खाद्दे वडुए
भरे पट्ट नच्चणा नी जान्दा।
नच्चे भाऊआ बरमा नच्चे भाऊआ बिसनू,
असा लोका नचणा जी जान्दा।
"कुनी बन्दे तेरा जगत रचाया

कुमा ना लगा तरी चिन्या?
"वरम भाउए मरा जगन रचाया
बिसनू ना लगा चिन्या।
"हमा त खडा नगन रचाया
सारी कुण बन्ना पाया?
हेड़ा त खेड़ा जगन रचाया
सारी घटा पिठ जागी पाया।
हदा त खेड़ा जगत रचाया
सारी दीउट बलना पाया।
हना त खड़ा जगत रचाया
सारी चार बन्न आए।
हमा त खड़ा नगत रचाया
सारी जातरू भाइ मर।
घर घर हैंडदा गुसान्या
नटा लूटरू रे भारे।
घर घर हड़ना गुसाई
हन्थ खप्परी त मूंढे झाली।
मिठिया दआ मर भाइया
सा सभे छड्डी नाठे।
इना घनगा मर भाई
निहा धरत-अगास चलद।
इहा घनगा मर भाई
निना चन्दर त सूरज घनरे।
हमा घलगा मर भाई
निहा तार त भ्यागू घनरे।
हमा घागा मर भाई
निहा किरगन रागा घलगे।
इना घनगा मर भाई
निहा पन पाग्गन घनर।
इहा घनगा मर भाई
निहा छन नरायन चनना।
हमां घनगा मर भाई
निना गुड़ पिंडा तरगा घनगा।
इसां घनगा मर भाई

निहा ध्का गुरु कर चलड।
अग्ग लवणा खट्टा कन्न धारा
अग्ग खारा समुन्दर टप्पणा।
धरमा राज धना वणाया
पापा त धरमा दूए लघ लाया।
नगा र कनार घरुए त चापट
निन कुण दन्ने वसन्ने?
"निन वमद वा वणज्यारू
हथ सान्ना रुपा वडन्ने।
सतजुगा र वणज्यार दणा-दणा बुनन्ने
लणा-नूणा मूल न बुचद।
कलजुगा र वणज्यारू लणा-लणा बुचद
दणा-दूणा मूल न बुझन्ने।
धरमा रान वटा वणाया
पापा त धरमा दूए लघ लाया।
धरमा र वड लवा टप्पा नदि
पापा डुबा डुबा मरन्ने।
धरमा र वड हाइ नान्द पारा
पापा वार ना वा पार।"

2

लोक रामायण

सीता-हरण

दाशू रै जोरम घेटडे नेईया
तओ रै लागै उम्वले धारो।
माआ खी होन्द सावको देईया
लाके री जेबे नागरी दाहा।
दाशू रै जारमे बेटड देईया
तेओ रे लागे उम्वल भागो
माआ खी होन्दे सावको देईया
लाके लागा नागरी दी आगो।
एना धाणू भाइया गाटिया चाड़नी
मानी लाखणा' मांय।
'जू भाटो रो भाटकी ऐजी
बेहणी 'रामणा गा ताय?
सून माढूला चुजडी चादिए
माढूला पैरो रै पाआ।
जू भाजणा तेरी चुजौ दो
ऐआ मेरिआ मूखी फरकाआ।
शीर लागी शरालनी
ऊभी लागी मुडरू दी डाआ।
रागडुओ धीगडुओ शूणो
सूनू मेरे माहते बलाओ।
"रात डेउल कुशामुशीये
झीशी डवुल मालकौ दानी।

रामा रे टयन दशा द दया
तान्‌ लागा पाटनाय माना।
रान डुन कुशामुशाव
थाशा डुन राणा भ्याण।
रामा रे टयन दशा द दया
नान्द एन भानणा चाण
राना राण्णा भ्याण नी।
लाखण ऊभा नगाआ ना।
लाखणा पाणी खा नाआ ना।
छुआ चाडुव पाणी नी।
"वारा वारशा ढा भाइया
माय तूनड़िय पाणा।
एव आणनी आर्फा
तरी ण सानला राणा।
"सीनल ऊभी नगाआ नी।
राना राण्णा भ्याणी नी
छुआ चाडुव पाणा जी
सातला पाणा खी जाआ जा।
घोड़ा कानी रा नीउ ना?
घाड़ा माटी रा लाय जी
मूखा कम्हार वाला नी।
घाडा लाहे रा लाय जी
मूखी लुहार वाला जी।
घाडा पीतला रा लाय नी
मूखी वानी ठठार जी।
घाडा चाम्व रा लाये जी
मूखी वाला चम्वार जी।
थाडा चान्दा रा लाय नी
घाडा सूने रा लाय जा
मूखी वाला सनार राम ना।
सून रे घाड़ा रामा घडालुआ
गाल घाडी मूखी मोती रा हारा।
शा शाठ पणह्‌ रट माझ
परणवी तान रामो री नारा।

सोना आन्ना था पाशा नी।
मिरगा डुआ था गाशा ना।
पाशा न्नला लाए सीनल।
मिरगा टुआ था थाल्ना ना।
घाग्ग का भाना भाग्या पड़ालुआ
रा घाग्ग गाल माना रा हारा।
सानला ग्गा था पाणा री
का पाया ताथ म्नर्गी यारा।
घाग्ग माइ भाना रामा पड़ानुभा
माइ चाम्बि मार्नी करा हारा।
नाल र याग्ग सून रा मिरगा
त पाया माय इनड़ा यारा।
मूठी रामा शार्गी हार्नी काम्बुआ
नाठी हार्नीरा रीश पागा।
काटी कुगा री ए टालगी
लाखग जानी रै टापीआ र भाग।
लाखणया ताखे बालू कलाउणिया
लख बाटगा भायना र लाल
राम डज थे हड़ खी
सइ जायग डाटले शगाल
वाला 'सुनुग' लाइ कीन्दरी काणिय
रूणा भारा ली चूणा काणिय।
मरी किन्दरी शुणो काणिय
कूण सा रामा रै बड़ दो काणिये।
युगचा जेआ नै जान्ना था थागणा
साता न्हीदा समुन्दा दा पार।
"रीखा वालू वाणा रे मिरगा
मिरगा माजी तू वाजणीये वाडा।
धावी रै जाव पूजू ल टीकरा
रामो री जायी कचारी दा खाड़ा।
वाती वाचणा वाणा रे मिरगा
भाल्ले भाल्ले आहां जाणदा नी सारा।
फाफरा जआ होन्दा था माण्डणा
पूरी माण्डू आहा मिणिया खी खारा।

उगरूय सुगरूय बान्रा कदारा
नसराथ वागराथ विशणू सागरा।
निन्दर घारा द तुम निकल पुरखा
त्हार ना जागुन पाशड़ा दी नारा?
राम लाइ भाइया काजिया
पूत्र भालू र मूहय।
"रीखा वालू वाणा र मिरगा
फाफरा मरिया माण्डा ल तूय।
हारि कइ दा चागिन ज्ञाटिल
हरा ल मरया रक री आला।
पूर्नीया लागा ली जूहणा
धारा लाइ ली धारूए ट्याली।
रीख काण लाओ वाचणा वाणना?
का हाला ए वाचणा जाण?
लाजया रामा आमू द पारजे
तामू नी जाणदे पाथरा पढाण।
शाइ वालू याणो र मिरगा
ताय दआ वाडा वशशा।
नादी दा हाये ला जाव चाचणा
सोभी खी कौरूला वाढिया दशा।
गाहते नाइ जाणदा रामा साहिबा
'सूनू दी लागदी नी नशाणी।
सीया नीयी रामा धाणी री
साभिय लागुल लाक़े दूहाणी।
शाइ धाणी रा वशाणिया
रामा र शीरा ख फेरणा फिरा।
वाला "शुणिया याणा रे मिरगा।
तामु किया गाशुआ राम वजीरा।
शार्य चालू "वाणा र रीखडा
पारू दादिआ भाजड़ मूदा।
वाचणा वालूला रामा खी साभीरा
सारी कारूला लाक़ा फौजा भून्दा।
वादरो री तारा न्हीइ गार्लीय
एरी न्हीई 'साडू' री 'सड़ाणी

सीआ "हाइ रामा धाणा रा
ताणीय जाध लागा लाक गी धागा।
शाइ नाहर घाइ रामा ददानिय
थान्रा नाहर चाइ निमल मूव।
जाध भारथा लागगा लाक रा
पार क ने नीना ल तृम?
सुख पा कारना रामा सुखीय
दुखी खी पान्ना गापण दुखा।
जागा मरा मताणा रा चाडू था खन्डू,
नाना नाइ था पाणी री भूखो।
फूला "नाला रामा फूलड़
पाम्ब डाली फूला ला फंड।
जाण मताणी रा बाड़ थी खटडू,
छा म्हीन स्ण छाजर्दी द छडू।
यूशा लाओ 'जाम्यू' शैलटा
रामा रैं शीरा ख फ्दणा फीरा।
बोला शुणिया बाणी रे मिरगो
राम स्यिा तामू गाशुआ बजारा।
आपड हुक्म बाधू ला पीटूला
आपड दउला हुक्मो दे बान्दो।
याला शुणियो थौणो रै मिरगो
चीखड जेए झाडूला शाई रे दान्दा।
वृशा लागा 'फीचू' लान्दा
शा दी चूडा शीम्वा री जरा।
सीये री ताई शीर करावी तू भादरा
रामा री ताइ जान्दी काटणी करा।
आरजा शूणि व रामा प्रावुआ
कान आजा तरी साय रा दुखा?
टलरू देख ता मरी कोल द
आधा-आधा गूला आम्वा रा टूका।
"हाथडू काटूला राण्डोर लातडू,
एसी काटूला आम्वा रे डाल।
ताय देखिव राण्ड कान्दले
सीये राणी आपूला होटको आर।

हाथड़ू कायाच खी काटा लानड़ू,
क्याग लान्दा चीड़ू दी हाथ
रिए भाल्ला वाल्द रानणा
एजा पा राम धाणिय काथ।
दासिय कार मातिय बाहर जाय
चायला भारान्द चाट काणिय।
साधटू पारू मपाय काणिय।
"नूठ रा खाइया लाना री धाइया
विछिया न पाऊ काणिय।
टाल टाल तू सासा माथाव
काउडीय लाऊ दासिये।
जूट री खाय्या लाता री धाय्या
छाय वा ना लाय मातिय।
आफा दआला विछिया काणिय
माउला री माइ मातिय।
रुन्द रुन्द दासा काणिए
गाय भीतरा नाइ भाइया।
सीतलाए ली शाय भाइया—
"रीआ लाऊ रा आय साधटू,
मून्द कावडाव लाई काणिय।
आफी दआला वीछिया मूख
माउला री माइ काणिय।
राम दीणी रखडी भाइया
दीणी लाखण कारा।
कारा टालूल बाहर द
पाडा भोसमा छाग।
वारा चलाआ गुठडा
चलाआ दाइणा हाथा।
"तीरीय होय ना पागडी
पाटी गुरू री जमाना।
वोला सुनुए लाइ किन्दरा
लाड किन्दरी दा तारा।
सूनू री जाला झाली दी
रामा लाखणा री हाला।

सीआ न्हीइ रामा धाणी रा
तीर्णाय जाधे लागा लाऊ गी धाणी।
शाइ नाहर चाइ रामा ददालिय
वादरा नाहर चाइ निमल मृय।
जोध भारया लागगा लाक रा
पार क न नीता ल तृम?
सुख पा कारना रामा सुखीय
दुखी खी पाटा गापण दुखा।
जाणा मरी मताणी रा चाडू थो खटडू,
नाना नाइ था पाणी री भूखा।
फूला जाला रामा फूलडू
पारू डाली फूला ला फंड।
जाण मताणी रो चोड थौं खटडू,
छा म्हीन रुण छाजडी द छेडू।
बूशा लाओ जाम्बू शेलटा
रामा रै शीरा ख फन्णा फीरा।
वाला शुणिया बाणा रै मिरगो
राम किया तामू गाशुआ वजीरा।
आपड हुक्म वाधू ला पीदूला
आपड़ दउला हुक्मा दे वान्दा।
वाला शुणियो बाणा रै मिरगा
चीखड जण झाड़ला शाई रे दान्दा।
वृशो लागा फीचू' लान्ना
ना दी चून्ना शीम्चा री जरा।
साय री ताइ शीर करावी तू भादरा
रामा री नाइ नान्दी काटणी करा।
"आरजा शृणि व रामा प्रावुआ
कान आआ तरा साय रा दूखा?
टलरू देख ता मगी काल दे,
आधा-आधा गूला आम्वा रा टूका।
"हत्यडू काटूला राण्नार लातडू,
एसा काटूला आम्बा र डाल।
ताव दखिर राण्ड कान्दर्ले
सीय रागा आणूला हाटका आर।

"हाथड़ू कायाइ खी काटा लातड़,
कयाइ लान्दा चीड़ दी हीय
रिए भाल्न वाल्द रानणा
एना पा राभ धाणिय कीय।
"दासिय कार मातिय बाहर जाय
चायला भारान्" चाठ काणिय।
साधटू पारु सवाय काणिय।
नूठ री खाइया लाता री धाइया
निछिया न पाऊ काणिय।
टाल नाल तू दासा मार्थीय
काजडीय लाऊ दासिय।
नूठ री खाइया लाता रा धाइया
छाय बी नी लाय मातिये।
आर्फा दआली विछिया काणिय
माउला री माइ मातिय।
रुन्द रून्न दासी काणिए
गाय भीनरी जाई भाइया।
सीनलाए ली शाय भाच्या—
रीआ लाऊ रो आव साधटू
मून्द कायडीय लाई काणिय।
जार्फी देआला वीछिया मूख
माउला री माइ काणिय।
राम दीर्णा रखनी भाइया
दाणी लाखण कारा।
कारा टालून वाहर द
पाड़ा भाममा छारा।
वारा चलाआ गुटटा
चलाना दाइणा हाथा।
लारीय हाय ना पागटा
भाटा गुरू री नमाना।
वाला सुनुण नाइ किन्नरा
लाड़ किन्नरी दा तारा।
रूनू री नाला झाली दा
रामा लाखणा रा हाला।

3

लोक महाभारत 'पण्डमायण'

हिमाचल प्रदश क अनक जनपदा म महाभारत को पण्डमायण कहत ह। जुब्बल कोटखाइ क्षेत्र म गाय जान वाल पण्डमायण का रूप प्रस्तुत ह।

ताइ ख बालू ला भीमा[1] भाइया
तुय भाइया हासा र टाल[3]।
एजा खल राणी[4] दआल
आ म चाणु ल गीन्दुव रा खला।

ताइ ख वालू ला भीमा भाइया
तुय भाइया हासा र टल।
एजा खल राणी दआल
आम दुव चाणु[5] ल पाशा रा खलो।

माणी रा मिला ने लोटडा मावसिये[6]
टागा मिलो ने टेकणा खी ठाओ[7]।
वारा घार सा काराणा रे
मांगियो इन्दा[8] टुकडा खाआ।

राट[9] ने कारून कुखड[10] धाचे[11] थ
पाजै धाच पाण्डुव वराल[12]।
निन्निये वालो वरालय
इना राइया कुखड़[13] जगाल।

---

(1) भीम (2) हम (3) वच्चे (4) रहने (5) वनायग (6) सानती मा (7) स्थान (8) यश (9) सात (10) मुर्गे (11) पान (12) बिल्ली रहन (13) रानी क टुकड़।

ताइ ख न वालू ला वना भाइया
तुए भाइया आग खा जाआ।
घाटद लाग शुक्द
कुन्ता माता जालमा र माआ।

ताइ ख न बोलू ला आरजणा[1] भाइया
आआ न भाइया आग खी जान्ना।
पाजूआ आआ ला बाण्डका
आपण आन्द[2] रा कचिय ही खाण्दा।

पाजे न भीड़ीया[3] कापड़ भादुआ[4]
दागन्रा कारिया न वाणा।
धार्मी राज र दशा दा डवला
तआ ताआ परणा ले करणा।

धार्मी राज र दशा दा डेवेला
धार्मी बादुविया[5] राज रा मशाला[6]।

धार्मी राज र दशा दा डेवेला
आपडा भाइया धारिया न नाआ।
माशी चारू धार्मी राजे री
बाला बालिया डाडलो नाआ।

बालिये न वालू ला बारजिया
ताओ लाग साइते परीता।
आगे आथा ताड़दा[8]
घाट फिरे महीन खी चीता[9]।

वलूआ ता वालू वन्नालुआ नालिया
नाइ कारिया आग रे आशा
डाम आयगा गुनरा
भुज खान्ना भुनिया मासा।

---

(1) अर्जुन (2) अपन भाग का (3) पहनना (4) बड़े आदमी का पुत्र (5) निशाना (6) भम चुगाने जाना (7) भम (8) तलाश करना (9) चार।

टारो टाकरी बाइरा राजा भात दूध झीमा तै
तेरा मशाला भूखिय ही चाला।

बट न बान्दा ले शीरा देइया
आपडा धारा ले नाआ।
लिख चाई थ बारम[1] बिशणु खी
पाजो लिखे चाइ थे पाण्डू खी आआ।

ऊबा न पाडा शीरा[2] बेटिये
ताकनू[3] माइया जीणा फीरो।
उल्टा पाडगा शीरा
तसी पाडा मशाल रे शीर।

बट ने बान्दा ले शीरा देइया
आपडा धारो ले नाआ।
लिख चाई थ बारम बिशणु खी
पाजो लिखे चाइ थ पाण्डू खी आओ।

उबा न पाडा शीरा बेटिये
ताकलू माइया जीणा फिरा
चीजी गइ मी शीरा
ऐसी पोडा मैशाल रे शिरा।

एको न लाआ ले लाते थाप
एका लाआ ल जानूर जा घुडे।
दूजी बाइ भी शीरा
तेरी पोडा मशाले रे मुड।

आरिया पारिया दू आडूव दइया
लाम्बी लाइ लावली धाओ
नाखो पोडेगा मीरगो
हारे भारे दशाराणा खाओ।

---

(1) ब्रह्मा (2) सेऱ्हा (3) ऊन कातने के तकले की प्रकार का।

कि भी उचडा शाठ कालक
कि हिन्दू र आसणा दू राजा।
कन चानता दुण तानीआ
का डरा ए चानरा रा वाना।

रातिया न वालू ला गाडेआ[1] मरिया
कथ घाट पाखू पराणा[2]।
ठारा ठाकरी बाइरा राना हड खी
इन र भालिया कारदा न गाणा[3]।

नाइ ता उचड़ी शाठ कालक
नाइ हिन्दु र आसणा दू राजा।
माहर दसासण धाणाक वायु सा
तरा एरा धाणका[4] रा वाजा

नाइ ता उचडा शार्ठ कालका
नाइ हिन्दू रे आसणा दू राजा।
पान पाण्डू कथिया रान्द थ
आरामणा जाव री धाणकी रा बाजा।

चालनी[5] हाली छेवडी[6] दइया
चालनी तुरे लाआ ला वाता
हीज पा खाआ गूठा निटा
आज पा पूछा गोत्रो जातो।

एका बोला–बारमा विष्णु,
एका वाला मुगला बदारणा।
ओथणपूर[7] फाण्डीयय[8]
महार राय न गानी र गणा।

चालनी हाला छवड़ी दईया
झालनी तुरे लाआ ली वातो।
एवी न नाइन्द बारमा विष्णु
एवी हाल बाडड़ राता।

---

(1) गैस्न (२) पस्त प्रग (3) पाल्ह (4) मेलन्दर्द (5) धनुष (6) झन्नी पागन (7) औरतें (8) पहाड़ों में मुसलमानों को फाण्डीया कहत हैं।

कासरा हाला माणना नान्या
कास हाला आम रा पूना।
कुकुन[1] भामर रे साथर[2] छाड
हूगर हाला हुगरिया[3] सूना।

एकी न शानली ख बाकर दआ ल
दूजी देआ शानला ख पाट[4]।
धूपा र कारिया धुडसा[5]
गाटिया मर आआ ल गाठ।

नाराणो रा हायला भाण्जा
कुन्ते माउसी रात खाली रा झान्न।
राते न डेविया चारयियो
धारो हइयो बटासणा[6] री खाडा

नाराणो रा होयला भाणजा
ओरजणा मरो सा नाआ।
रात न डयन्दा चोरवियो
टारे उठू नगारची आओ।

गाणदा न लागेगा वासुआ वामणा
गाणिया धाओ ले कोलो।
पारा हान्दा न कमरदानू रे
हीरव[7] आगीयो दैवी रा दोशा।

गोणादा न लागगा बासुआ वामणा
गाणियो छाडये ने कोला।
पारा हान्दा न कमरदानू रा
पाजा मागा ले पाण्डू रे वाला[8]।

छोइ न महीन हाण्डो[9] झाली झाखडो
छ महीन धासणो रो घासो।

---

(1) विऌुबुटी घास (2) घास का बिछाना (3) खुर्राटे मारना (4) छोगी बकरी (5) जिसमे दवता को पूजने के लिए धूप जलाया जाता ह (6) बगासन-जुब्बल म कुपन घाटी से नीचे जगल म एक स्थान का नाम (7) हिरमा अथवा डिम्बिया सम्भवत कुल्लू की देवी (8) बलि (9) चलना (10) जगल।

दगा' हादुग गग्गा रा
मुन्ग चाआ गगमा रा वागा।

वरा दैभा कुन्निया वग" राम
भारा ख दैणा मामारा मुन्" नाड' हाडा।
वरा दआ कुन्निय वगड राग
घुघु गग रैग' दा मरा वागगा' चाड़ा।

नाटा र वानू वदागुआ' दग्या
तृ" गाआ वाटा दू भून।
इन्गा दा निआ तरा वरान्दड़,
जागी दा राआ ए शरण फूल।

दूरनटी न वानू कानिया दग्या
घुरा घारा पीरा र नाआ।
झागणा खी आगु ला आरक
ताआ वैक ला आपुखा आखा।

एक न नाउडा[9] माआ वापा रा
दूना नाउड़ा दाइवा तरा।
चाना नाउटा आरनग जादरा
ज साथ भारन नानण रा सखरा
नाउडा दान्द न रागसा रा
जीनडा चौका एवार्य खा मरा।

शाट न कारून वाकरी चारी
पाने चार पाण्डून गारू।
कि सारा हाआ न निस्यारा[10]
आज दीण झागण खी जोरू।

दरवेटी न वालू ला कानया देइया
नाइ लाय माड द धाआ।

---

(1) महन (2) मर का (3) रूठ जाना (4) जबरग्स्ती थोपना या देना (5) गुफा (6) टाग (7) माग (8) यात्री (9) नाम (10) जीने का।

साथी जायगी हाथा री धाणकी
बानी आन्नी रायगी थामा दी बाआ।
जाव हान्ना आरजणा नीखणा
तरी ताइ लान्ना आपण शाआ।

दूरबटी ने वालू कानिया देइया
गुरा[1] धारा पारा र नाआ।
झागण खी आणुला आर[2] क
ताआ बऊ ला आपुखी आआ।

एक न नआडा[3] माआ बापा र
दूजा नओडा दोइवा तरा।
चीजा नाउडा भीमसणा जोदे रा
से हा था देवरौ मेरा।
नाउडा दीन्दे न रागसा रा
जीनडा चाका ऐबीये खा मेरा।

उबे न जाये कुन्ता दनती
हारो[4] तोब देओ बचारा।
धौमों रे हाउल पोडा[5]
सुके आऔ ल दू दू[6] दे धारो

एक न धारा दूये कुन्ते
उटे चाले गीडकियो[7] नाला[8]
दूज धार दुये दूदा रे
हाला[9] तावे भोरिये कयारा।
चीजे धार दूये दूदोरे
वालू रे आलियो[10] वावशे खागे[11]।

चान्दो ने रून्जा ले सूरजा दईया
बास्तो पोरु रून्जो ले माटे।
एक जाणिया इणो
इया राण्डो ला चाड दे पछाटे

(1) गुरु (2) दूसरे (3) नाम (4) हार विचार (5) धर्म का स्थान (6) धन (7) गरज कर (8) खड्डनाल (9) बाढ़ (10) गून्दना (11) कोई 16 मन के लगभग अनाज का भार।

पाल रा न लाया नाग्या पाग्ला
रान्ना[1] रा[2] सामना ला कारा।
कुलभन्ना[3] रै नात्णा रा
वआ पुछा भा आरनणा नाग।

हाय न लार कारा राग्ना र
पारु फाटा दाइण दा ग।
पाण्डु रै लाग दारदा
इया र कारा था भामराणा थँआ।

धाटी न गारा नीस्ला दूणा नारन
लाम्बी लाइ लारनी धाआ।
आरनणा यालू चलिया
शिगा शिगा मीनी खी आओ।

लाइ ख न यालू ला आरनणा चलिया
हाथ कारा दानी रै काला।
गोत कृष्ण पान माय पाण्डुक
आमु भा डैलनी[4] देआ दटी राम माला[5]

धुशा न लाओ ला दूणा तारजे
ए मेरा तालणी ताला
काण्डु आण्ड कागणी[6]
मेरे आय ने जोड रो माला[7]।

काण्डू आण्ड कागणी मरिया
माणको आण्ड मान।
दूणीया वाल तारजिया
मूखी आणीया झागडा दात।

दाखणीये रान खी कागले लखाउण
दाखणीये राजिया धावडी खी आण।

---

(1) खाता या भण्डार (2) समाप्त (3) कुरुक्षेत्र (4) निकालना उतारना (5) मैल (6) अगूठी (7) मूल्य।

चाशा आय भातक राण मयाण
घाटा जान्म मारणा तार क्माण।
घाडाव घुघरूव मारा झणकार
कुगुर काथराव मारा मसकार।

कया नाआ दरजान्ण कुम्छत्रा नाणा
उतराय नाआ दरजादण नाणा।
पुर्वीय नाआ दरजादण नाणा
पश्चिमीय नाआ दरजान्ण नाणा।

भडुआ वालू पुत्रा साहीव
नाहणा हाला तु नाहन्दा घाला
नाहण कया रा नाह ला
छाट उछवा महीने खी मला।

हाथ नाक काटा राण्डा र
दाइणे काटा न बाआ।
पाण्डू रे लाग ग दोरदा
इया रा कारा था भीमसणा व्याहा[2]

कुण न खाआ ला डाली शगानरू
कुण खाला थाना[3] रा बीन्।
कुण जादा मरी फाउङादा
भीमसणा खी मामले[4] खी भीरा[5]।

आई न खाउला डाली रे शगातरू
आई खाउल थाना रा बीन्।
आइ जाग तगी फाउनादा
आइ भीमसणा खी मामले खी भीरा।

घाटी[6] गारी[7] निग्ला निघा रा चाणुआ
लाम्बी लाई लागली धाआ[8]।
पाण्ड् र वालू पुत्रा
शाग शीग मामल खा आआ।

---

(1) ताप (2) ठीक करना (3) बैंगन (4) लड़ाइ युद्ध (5) दाग (6) तन (7) धारी (8) अनाज

पाण्डू र वालू पुत्रा
शाग शागा मामल खा आआ।
ज्ञान नाइ आन्द मामन खा
कुन्त राखु ला ज्ञारमा ग माभा।

भादुर न गाय वटालर[1] दवनीया।
कि फाटगा भाव्का काआ।
कुण जादा गारी घाटा दा
कुन्त राखा ला ज्ञारमा रा माआ।

भादुव नाइ वटालर वटाया
नाइ फाटिय भाइ का काआ।
घाटी गारी निचारा गाणुआ
मुआ नखिया चाउया ठाणका[2] आआ।

ताइ ख वालू ला आरज्ञणा भावा[3]
दाड़ी जाउला केसा रा वान्दा।
कुण जादा गारी घाटा दा
एखी[4] आआ था मानल खी जान्दा।

ताइ ख न वालू ला वरा काकुआ
दाडी जाऊ ला केसा रा वान्दा।
कुण जादा गारी घाटा दा
एखी आआ मामल खी जान्दा।

सेणव न गायम वुडर वटीया
शीरा द झाडे म पालू[5]।
पुत पारा तयी खी धार्त्री[6] था
ताखे आम वाल न वालू

डेउन्दा ता केनै डवन्दा वटीया
कुण देओ ला डवण खी नाहरा[7]।

(1) भ्रष्ट होना (2) ज्वर (3) बादुगन वाला (4) इस को (5) सफेद बाल (6) पालना (7) नमस्कार करना।

नाहण नाहन्ना कुलू छत्रा रा
पाजा टालडा पाण्डू रा वाजा।

खाना ना भाजग हाइन्द आमाया
एव राय न सारमा लाजा।
बारा टारा हायगा बारशा
महार पाडा न पटीया दा नाजा।

उत्र न जाग कुन्ता दयन
हारा दआल बचारा।
धार्मो र हाल पाड़ा
शुरू आआ दूदू द धारा।

एक न धारा दय कुन्न
उट चाल गाडकिया नाला।
दूज धार दूड दूना र
बालू र आलब बाग्रश खारा।

उबा हाय वाजीया बनीया
लख सुना दाखा तीआणा।
नाहणा नाहडा कुनू क्षेत्रा रा
थाथ जआ टुकडा तार्खी चाणा।

ताइ ख क बालू ला आरजणा भाइटुआ
ताय भाइया खरा खआ।
शाटा माता कारू ख
भाटा ख ज़आ लाक्टा पजा।

दूरपदी न बालू कानिया दनआ
आरा ताय लाखन कमारा।
पाण्डू नीण पुत्रा
इना आयग रात्रणा र हारा।

दानाय न बालू ल दमुरया दन्या
नर पुतल रू थाय खाम।

जरद लाक र रागणा
दूरनटा लागा ल कानाय र भाव।

दादाय न वालू ल दमूरिया दय्या
तर पुतल क थीय खाय।
पाण्डू रे नजो ल पुत्रा
हाथ कारे मृना र वाट[1]

दादाय न वालू दमारिया दइया
छाट फीर महान खा नीता।
जाता पूर दाछ दउला
शाट लागा ला खारीय बीजा।

ताइ ख न बंलू ल दरजादणा
कुण[3] दा वादिय था दूणा।
किन्द किय स कारक[4]
काण मुण्डा उटा मासमा पूणा।

राणीय ला वालू परमाणटीय दइय
कुण दू वादुवा था दणा।
वेर खाय मर काटक
मुडा उटा तण भासमा पूणा।

हिमाचल प्रदेश के विभिन्न भागा म महाभारत क विभिन्न प्रकार के विवरण प्रचलित ह। अत इस समय इनक एकत्रित करन की वहुत आवश्यकता ह क्याकि इनक जानन वाल लाग अब वहुत कम रह गए ह आर य बहुमूल्य साहित्य रत्न सदा क लिए लोप हो जाएग।

---

(1) पराव बनन (2) लागा घर स ज्र कृपि याग्य भूमि (3) ज्र (4) फलगा।

4

बीणी की हार

माल र मालाइ मरा कहरी मालाइ।
बीणी गावा वर्जारा नाइड पादी आइ॥

नाइ दे बीणा ए लाये सनजाणा खाइ।
तुठे कुठ दुन लाव नाइड़ द बावाइ॥

फुली करा फुलदू डाली फुला दाइ।
पाता दिया पातलिए नोइडो छाई॥

खावा मर सबगो थाली रा खाणा।
तुवा पडो सबगो शिल्ल ख जाणो॥

सामू शिलवालो लआणा बोलाई।
बीणी र सेवगो गाव शिल्ले जाई॥

सामू री आगणी दा राइ ना नाड ख टान।
वायरा दा सबगा मारा सामू ख घाव॥

शिय शिआनटी बाशा ला वाला काव।
सामू वाला शिलबालो तू वायर आन॥

भरी आणा चिन्मा सामू गावा आइ।
सबगा रो मामू ए राम रोमी शाइ॥

फुली करो फुलदू डाली फुला दाइ।
तुव लाग सबगा बाला कथश आइ॥

देव रान विजटा रे घटको नने।
आम आसो बोला बीणी र भेन॥

वाणी खं सवगं वाता राखी लाइ।
ताज लावा सामू वाला वीणी ए वालाइ॥

अटेलो सामू टो दीती एजी पाइ।
र्शागा शीगा सामू लागा भीतर जाई॥

भाजी करा भाजणो भाजा ला वाणा।
खाली लाआ सामू ए कोठारी रा शाणो॥

सुन की वीजारी सामू ए खीस दी पाई।
बाक़रे क टाटू दी थाई हासली पाई॥

बीणी गोवा मिलदा उन्ना नाइडे खे आइ।
ताम्बु रे दिया खुटी दा बाकरा बनाई ॥

सामू गावा मिलदा भिटा ताम्बु दा जाई।
सुन की बीजोरी सामू ए भिलो खे पाई॥

सोवे तेरे नोइडे डाअबा ला पाणी।
सुन की बीजोरी सामू काइक दी आणी॥

तादा वालो बीणी भाऊता रोवा डरी।
दखी बी राखी तांवं सामू तिलके री घडी॥

माले रे मालाई ला मेरी केली मालाई।
छाइयो क्यारा दी वीणी ए रसाई लाई॥

सामू शिलवालो लावा वीणी ए शाई।
तादा आगे बोलो सामूआ कुण लागा माई॥

गाइया वाला दुगाणुवा रा कमराऊ माई।
तेथे दे आगे अजवालो असा माइ॥

माई अजवालो वसा टोसो रे टापू।
आइरी बाइरी खतो बीचो वसा आपू॥

मेरा शुण वीणी माता आजा नी जाणा।
खशो रो कागडा असा राजे रा ठाणा॥

माई अजवालो असा वायो का वाडा।
झागे विना खशीया तेन कासी नी छाडा॥

तलो तादी बीणी माता आई डुबणी बुधो।
शिल्ले दे माग चाउला दुगाणे शा दुधा॥

छोइयो क्यारो दी रसोइ थोई लाई।
खीरी रे मुव बटुवे दी लाता की भाई॥

वशला बोलो देवटा लागो ला भरो।
डाण्डी मरी पालगी कमरोली खे करो॥

मनो ऊदे बीणी माता घडी ला घाटा।
फोउजो चाली बीणी री खजियारा बाटो॥

चीया दे राई नी काकुवे मालू दी टाटा।
घड़ी लोन बीणी ए आपणे मना र घाटो॥

बशो ला देवटा लागा ला वाला पाणी।
फोउजा हुटी बीणी री खली फ़ाण्डी री लाणी॥

वशो ला देवटा भली पड़ा ली गारा।
सामणे देखियो पाण्डी तिलोरी की धारो॥

चादो की ए सुरजा छुटा ली झाव।
इथ शा आगे लागो कमराली गाव॥

फोउजो दा बीणी माता चाकरो लाम्बू।
धारो तिलारी गडे बीणी रे ताम्बू॥

मोले मोलाई ए केरी मोलाई।
बीणी रे सेवगा गोव शालणे जाई॥

कुड़ो शिखुरिए बाशो ला काव।
बायरा दी सेवगो मारो माडू खे घाव॥

वायरो दी सेवगा मारा ले व घाव।
माडू सेयाणा मलका वायरे आव॥

खड़ी छाड़ी सयाणीए चुन्ही दी रोटी।
धाव शुणनी ऊनी टाकाई दी हाटी॥

माडू की रागड़ी गाड़ा घुलडू पीअछा।
कोइक द आय सरगा तुर हाम्यलु रीछो॥

फुला ला फुलटू डाली फुला ली दाइ।
आमु राखे सेयाणी ए बीणी ए लाई॥

आमु राखे सेयाणी ए बीणी ए लाई।
माडू सयाणा मलका काइक रावा जाई॥

माडू री सेयाणी ए राखी बातडी लाई।
मामले ऊगादा रावा खती दा जाई॥

लाम्बा छाड़ो सेवगा पागा रा फुरु।
माडू नी घरे आथी वटुका असा गुरु॥

ऊवा बनाली दा बोलो फुलो ला बनो।
सेजा लागो आखरो वालो गुरु क काना॥

ऊनो री न टिकरी सुता रा ना धागा।
सुता हदा गुरु बोला झडकी बा लागा॥

मोले रे मोलाई कली वालो मालाई।
मांजिया शा गुरु गावा ऊबा बावडी आई॥

भाअरी आणा धिल्मा गोवा बायर आई।
वाणी रे सवगा खे वालो राम रुमी शाई॥

शाइयों राम रूमी वानो राखी भाई।
तुव लाग सेवगा बोला केथेशे आई॥

देव राजे विजटा रे झटक नजे।
आमे असो गुरुआ वीणी रे भेजे॥

लिखा हुदा परवाना दिया हगटे पाई।
माडू रे बेटे धोवा वाचणा लाई॥

वाचद वाचद बाला झुडको आई।
चीरी चारिया लिखा लोवा चुल्ही दा पाइ॥

माडू रा बेटा गुरु बड़े खेलो ला साके।
वीणी रे सवगा दे दई लोव वे धाक॥

वातो लाव गुरु जीभो र न गरे।
सेजा वाण बीणीया जु मने आला तरे॥

भोउता देऊब भुनडा पाछडे पाई।
बीणी रे सवगो लाग तिलोरी जाई॥

कुडो शिरटुरिय बाशो ला काव।
माडू री रागडी देव भडो खे धाव॥

भडो मेरा धरमू तू किदा रोया लुकी।
घडा पाइदो घडीए मेरा शालणा फुकी॥

फुकणो दे शालणो जामणे दे भागो।
भडो मेरा धरमू बोलो जीवडो मागो॥

भडे लाई थोई धरमू ए जीवड खे काव
जे बी देए जीवडो तो बीणी खे हाव॥

थोडी थोडी बोलो धरमू चुटली करो।
ऊण्डे लेआ धरमू मेरे ताखडी सेरो॥

भडो रो रागडीए बोलणी बोली।
जीवडा दवबी ताथे ताखडी ए तोली॥

कोदी बी करे नी धरमू जीवडे रा राला।
खेड़ो देवबी टिकरी रो दासी रा डोला॥

खेड़े तेरे टिकरी दी फुकूवा आगो।
गुरु का दे चौलणा माडू की पागो॥

पुनियो की जोअणे लागा पोछियो भीती।
पागा नी भड़ा द दी राज मोइया री दीती॥

देइया नी भड़ा धरमू रागड़ी खे गान्नी।
जीबड़े मुजी देववी ताख काना री वाली॥

कुण्डो लेयाब ए सेयाणि ए गाजला धीया।
थड़े पादी चाकी पडो मोखणा जीयो॥

ऊण्डी लेआव सयाणीए चेलटी गुजी।
हेड़ीइ हदी परागिणो लआवणी पुजी॥

ऊण्डा दे सेयाणीए भुखे कागज़ी दारू।
बीणी रे सेवगो बोलो गीणी गीणीया मारू॥

कुडो री शिखुरिए वाशा ला काव।
थड पादी शी धरमू मारो बीणी ख धाव॥

लाये नी बीणी माता मडगा दे घाव।
छटूरी खुव नी बुठगी भेडा बाकरी ख छाव॥

भेडो मेरी वाकरी शोलाई टाव।
आगला गाला धरमू डाले दा लाव॥

तीजी चुडी गोले दी बीणी की बाव।
बीणी र सेवगो बोलो भागणी खाव॥

फुकी थाई शिलाई तुम्बा नी बाजा।
चिडगी मारा कमरोऊ ए राइले का राजा॥

5

मासती गाथो

मासती गाथो थोमलो (सिरमौर) की रहने वाली थी। उसकी प्रेम पींगे दुजिया के पुत्र लालू की ओर तीव्र गति से बढ़ीं और प्रेम की बलि पर चढ़ने के लिए विवादग्रस्त विवाह कर डाला। किन्तु यह ससार दो प्रेमियों के प्यार को फूटी आखों नहीं देख पाता। प्रेम सभी करना चाहते है, मगर दूसरे के प्रेम के विरोधी और खून के प्यासो की कमी नहीं है। अभी उनक प्रेम के दिनो का शुभारम्भ हुआ ही था कि इस घृणा ओर प्रेम की शत्रु भावना का शिकार नवयुवक प्रेमी लालू भी इसका निशाना बन गया। बिशु के मेले मे उसकी हत्या कर दी गई आर एक आर युवक प्रेम की बलि वेदी पर शहीद हो गया। किन्तु यह प्रम विरोधी जग उसके जीत जी (लालू का) घोर विरोधी शत्रु व मृत्यु का कारण बना आर उसकी मृत्यु के बाद गाथो उसकी पत्नी सती हो गई तो उनकी यादगार म सती समाधि बनाई आर उनक़ा मरणोपरान्त गीतों में अमर कर दिया। लोग अब भी उनक़ी दर्द भरी दास्तान सुनक़र आहें भरत ह। दुनिया जिसका जीवन मे जीन नहीं दता मर जान पर उसका भुला भी नहीं पाती है।

मासती गाथो

लालु गाणे बोलिया भाइए भाई
बाबा गाणा धाजिया माती शिखो ख शाई।

खेच पाची रोए जा रे
उब रूए जो लूंदे जाई।
वातो थोई पुडी बोलिया
बाबा धोजिया खे लाई॥

शुदू तेरी आकलो के पिए खाई राटी देणो शीघड़ी पाक़ाई
लालु लागे बोलिया शीग उब खेड़े खे जाई॥

बातो लाओ बान्निया
पुडी लोई लाल खे शुणाइ
उदा बोइशो धोइगे
शुट देणो तुमोख री खाइ
शुट मारो बालिया बाता थोई लालुव लाई
मारा आउणो दादीआ विश खे जाई।
बातो थाई बालिया ए लाई
शुदू तेरी ओकला केमिए खाइ
खेच पाची रुए जा रे
जा थोए आम लुंदे लाई।।
का लागी तादी लालुआ बिशु जाणो री बाई
गाव शे थोआ गाडिया झलो मुज लोआ टुकरा खाई
विगानी जाएला जातरे
जीउदा बोट ने घार आई।
जी उदे रोवे चेई थिए सासे
बिशु रुआ आले साला आई।
विशु मिलो खडली रो होरी पीउली पागे
जशो बिशु मिलो ओशा रो एशो मिन्दो न आग।
बान्निया थोआ लालुने
बातो लाई भरमाई।
वेसो उछाउदिये दूहने लागे
भाइठे घोरे ख आई।।
बावा थोए दुजिया शाणे लाई आकलो थोई केमिए खाई
खेचो छड़ जो रे दुइने रोए घोरे खे आई।
लालु बातों लाआ दुजिया खे
दादा लागो विशू री बाई।
विशू रा कोरणा सोर जाम
तेई लगे आमे धारे खे आई।।
बातो थाई पुडी बुडी माई खे लाई
जाणो मा जातरी खे रोटी देणी भेशणी पोकाई।
साजे बाणन चिलटु
साजो शालनो धोओ।
वगानी जाणे जासरो
तिन्दा मुखणा अपणा जीआ।।

6

मासती कुजी

दाय गाय निदा करा आवी र आशा
केर्दी आवे आणा खाड़ू बाकरा रे राशा।

राशे खी आदीया चागा न छाड़ू
आस्ती मेरा राशेखी बाड़ा रा खाड़ू।

राश आणे ओबीया राजा रा रेडू
गाईमा भाईया गढा रा वर्चीआ पोरु।

गणा रीगा गीरजा नवला शीणे
काला वारा अम्बीया पशडे दीण।

शलो पोशो टण्को नादा शियाओ
चूल री पठोईया मरे सोडा छिआआ।

साथी छेआ साडा लागा ले रुदे
औरे कमाए खाई किहाणे हूदे।

एकी नोटी आदमीया मादला जाओ
दओ पूछो कूला रा बाला ला काओ।

खोली आगू बोठेगा धुणी कुडी लाए
बाड कशमाली रे साते छिआऐ।

आत्रा देआ कुला राजा पगड होए
बोला आवी माथा खे कसरे खोए।

ओत्रा वनायडू डाले रे ओसा
मेरा नाही औंबी माथा ख दाए न दोशा।

ओत्रा देआ कुला रा लागा ला रुदा
शीरा ओंवी माया रा लाए न मूदा।

दीण देआ कुला रा उतरा चोड़
भाटा करा माआला ओरखा लोडे।

दआ वालू कुला रा आवी न खाए
घाम्बा री देऊ फडीआ तेरो मान्दरा छिआए।

देवा करा कुला रो उपरा बाला
काल्का करनाल देऊ पितलु ढोला।

काल्का करनाल तेरा सीदी न खाऊ
जोंआ री खोली आनरे हा किणे लाऊ।

काल्का करनाला तर मु वी न चई
जोआ री खोलीआ आतरे लाइदे नाही।

जवा आवे आशा तरो मान्दरा हाडे
सुना रा देऊ छतरा रुपा रे डाडे।

ओ रा बनाई का लागा ला रुदा
भाता रा चावला आवे न हूदा।

तागा बोठे कुजीआ लेखआ लेवा
किणों बोला ओतरआ कुला रा देवा।

देवा दीणा कुला रा उतरा चोडे
भाट करा भाओला ओरखा लाडे।

एकी नाटी आदमी आ भाटा ख जाआ
भाटा तेस गढी रा ओरु वढाओ।

भाटा गाढे गढी रा चूडक साचा
मरना जीवणा रा आखरा वाचा।

आगा आओ पहला आखरा शाड़ो
धिशा तेरी देवले द मास्ते माडो।

तेती शुणो कुर्जीया खाडीया राए
भाटा शाकरा र पतरे दौए।

मरा तूल यानणा रा मानीया न णरा
कुटा रा पीशा रा करा सकरा।

वोट शरेणआ भला रा जाए
मरा हाथा ओवीया पथड़ खाग।

पथड़ नही खाईदा शाकरा गोड़ा
काटं लागे वदणा ओटड़ जुड़ा।

टाइदो न पथड़ पीदा न पाणे
जा पापे बोठो मेरो जीवा रा दाण।

छाग बाशा टाण आ बाठा ला फेरा।
माथ आ आविया शाए भी नग।

चश आए कुदले राची रा फरा
शाए कीया हाआ ले मरी ले मरा।

बूरा देआ माअथा अशथी हरी
पेटा री भाए वेन्णेआ चागा नी मरी।

बुरा देया माकथा लोगो सुपारी
पटा री भाए वेदणरी करी ले कारी।

कुजी रा भाए रामधना इहिदा रोह
धेती दे तेरी मितरा लागा ल शाए।

गोटा शरेणा लाडला ल चाड़
सूना कणा ेणा तो ग्खली ना छाड़ू।

तरा हा मूशा रा मूजू न मेओ
मोड तेरा मेरी जतणे न देआ।

वाण्ठणीया कुजीआ सूचीया खा तेरा
आरु द धरमा मरीया मेरा।

कपला दीणा धरमा काला हाथा
जा हौले तेतडी नरा ले साथा।

मोड ताऊ मेरी री गेना रा तारा
नाणा न मरणा ली रूसी रा डोरा।

नलगा ना मरना खी वानणा छाती
आग माझ निऊना लागा ली ताना।

तरा परणा वानू खण्णाया र धीआ।
धागट्ट नआ चाडू ला अपणा जीऊ

वाण्ठणीया कुनीया ण्जी न ह रा
टाणा न काट दाआ मरा मण्डी रा वना।

ण्वी नरू कुजीया तवा न मानू
टाणा काटी चागा लागा पइया घराना।

वाण्ठणीया कुनाया शराणीआ वाठे
राजा चागा पाटा मरे घरा र मडाटे।

गडा वादे नगरा द हुए नजाणा
कुजी रा माठखा द डूब पाराणा।

भोलो वरीदडू पाडो नजाणा
बोलदा वताओदा डूवा पराणा।

गना री आइ छवनी वाटा ली फरा
रन्द क न कुजिया सूची खा तरा।

गडा री छेवडीया मरीआ माओ
रुइना न झुरीदा शवाकूओ शाआ।

गडा री छेवडी री भीगीआ मारु
आफी लाऊ नाहीणा खे पाणी रा चरु।

राणा—वीआणीया निकते तोगा
वरा टूए नहीणार काल्क सागा।

ण्की नाठी आदमीया वाडी खे जाआ
जगला वाढी आगतू आरु वाढाओ।

जगला वाढी आगतू आखोली आ उजा
कसखी चाणी पालग कासखी जूवा।

टेके वढेटुआ वासे रे जोट
पूछ इऊ मास्ती साचे खे खोट।

जुण तुहा शारा पडटा जाआ
जू तुहा दबरा उपले लाआ।

आस गाढा काठी खा कुगु र ताल
दा ग नए गढा रा जाला बीडाल।

सोला वालू साणाआ मरीआ माआ
आग रा लागा लाका शागनी पाआ।

सीला हेरे सानणी आ शागले छाडे
धुआ रे हर लाका द कुजीया गाड।

हाडा रा रुक्कु पडा माटी रा भागा
सास डआ सरगा गास भागा ले आगा।

पाजा ला पाझडआ ओम्बे बढारे
सोल लाए सावणीया कुजे कधारे।

हाक दीण भूरेआ झडा री भली
खुदा री मीरा री टाण खे जली।

अमरे सना साहबा कधरी रा बीणा
ठाणा कोटी दाणा रा हुक्मा दीणा।

मो दोए मास्ते ठाणा रा भाडा
जोणा ताखे हुक्मा तू तीहण कौरा।

टाणा कोटे दुई जाले चीजे भोलाडा
सेइजी जाला लूपीया भाए बदेरा।

घोडा भरुओ पलगीया देवी रो हाटा
एता हुबी ठाणा रे न जाणदा बाटा।

हूबी बाली बीरगो उटो कियालो
तैआ नियो रतणा मावी रो ठाणा।

दुद का खुद्द ए बेगी मीयाणा
मार्ता टैसा रतन रा तालओ न ठाणो।